छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **प्रथम सत्र**

बुधवार, दिनांक 09 जनवरी, 2019

(पौष 19, शक सम्वत् 1940)

[अंक 04]

छत्तीसगढ़ विधान सभा

बुधवार, दिनांक 09 जनवरी, 2019

(पौष 19, शक संवत 1939)

विधान सभा पूर्वाहन 11.00 बजे समवेत हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, इन्होंने कल कह दिया कि बायां ही नमस्ते, उधर ही देखते आना है तो इधर भी देखना है भई । केवल उधर देखना था, ऐसा नहीं है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल हमने विशेषाधिकार भंग की सूचना दी थी, आपने कहा था कि वह अभी सुरक्षित है । उस पर कोई न कोई बात कहूंगा । चूंकि हमने वह विषय उठाया था, कल आपने तकनीकी रूप से कह दिया था कि समय में आया, हमने उसे स्वीकार कर लिया था । अध्यक्ष जी के उस निर्देश के बाद कल कुछ कहने का अवसर नहीं था । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात उतनी ही सत्य है, जो कल विषय आये थे, आपने नहीं सुना । आज मेरा आग्रह है कि आप उसे सुन लीजिए । सदन का नोटिफिकेशन होता है । सदन के नोटिफिकेशन होने के बाद माननीय मंत्री जी का यह बयान आता है, राजिम कुंभ मेला जिसको हमने विधान सभा से दोबारा क्यों विधान सभा लेजिसलेशन से क्यों संशोधित किया ।

अध्यक्ष महोदय :- सुनिये ना, आप यहां के सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं । वह मेरे विचाराधीन है । कोई निर्णय नहीं आया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कहा था, सुना नहीं था, उसको लूंगा करके, इसलिए मैंने आपका ध्यानाकर्षित किया ।

समय :

11:01 बजे

<u>अनुपस्थिति की अनुज्ञा</u>

<u>निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 27, मुंगेली के सदस्य, श्री पुन्नूलाल मोहले</u>

अध्यक्ष महोदय :- निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 27, मुंगेली के सदस्य, श्री पुन्नूलाल मोहले द्वारा जनवरी, 2019 सत्र में दिनांक 7 जनवरी, 2019 से दिनांक 11 जनवरी, 2019 तक सभा की बैठकों में अनुपस्थिति रहने की सूचना दी गई है ।

उनका आवेदन इस प्रकार है:-

श्रीवास\08-01-2019\a1011.00-11.05

लेख है कि दिनांक 11 दिसम्बर, 2018 को घटित दुर्घटना में घायल होने के कारण वर्तमान में चलने में असमर्थ हूँ ।

अत: अनुरोध है कि कृपया मुझे विधान सभा की कार्यवाही से अनुपस्थित रहने की अनुज्ञा प्रदान करने का कष्ट करेंगे ।

उनके आवेदन के परिप्रेक्ष्य में क्या सदन की इच्छा है कि निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 27, मुंगेली के सदस्य, श्री पुन्नूलाल मोहले को जनवरी, 2019 सत्र में दिनांक 7 जनवरी, 2019 से दिनांक 11 जनवरी, 2019 तक सभा की बैठकों में अनुपस्थिति रहने की अनुज्ञा दी जाये ।

मै, समझता हूँ सदन इससे सहमत है ।

अनुज्ञा प्रदान की गई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक भी माननीय मंत्रीगण नहीं है । दो ही दिन में थक गये ।

कृषि मंत्री श्री प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या आपको दृष्टिदोष हो गया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दो दिन में हंफरने लग गये । आगे क्या होगा, नहीं मालूम ।

श्री प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या दिख नहीं रहा है । आपको दृष्टिदोष हो गया है। बड़ा सा चश्मा लगाईये । चश्मा लगाईये, चश्मा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- तैयारी ठीक करवाईये ।

श्री प्रेमसाय सिंह टेकाम :- चश्मा लगाईये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- तैयारी ठीक करवाईये ।

अध्यक्ष महोदय :- आप इशारा इधर क्यों कर रहे हैं । तैयारी किसको करनी है, इधर या उधर ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूर्व संसदीय मंत्री की विशेष कृपा मेरी ऊपर रही है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय......

अध्यक्ष महोदय :- उनको बोलने दीजिए ना ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हास, परिहास में बात अलग है, लेकिन आपके धन्यवाद प्रस्ताव में, गवर्नर के धन्यवाद प्रस्ताव में, जो सदस्य धन्यवाद प्रस्ताव रखेंगे, वे अनुपस्थित हैं और इसीलिए कार्यवाही शुरू नहीं हो रही है। लगातार गवर्नर साहब का, माननीय राज्यपाल महोदय का

अपमान सत्तारूढ़ दल कर रही है । शुरू करवाईये ना अध्यक्ष महोदय, जिसने धन्यवाद प्रस्ताव रखा है । कहां है वह आदमी ....

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\a11\11.05-11.10

जारी.. श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसीलिए कार्यवाही शुरू नहीं हो रही है। लगातार माननीय राज्यपाल महोदय का अपमान सत्तारूढ़ दल कर रहा है। जिसने धन्यवाद प्रस्ताव रखा है उससे कार्यवाही शुरू करवाईये ना? वह आदमी कहां है? कौन रखेगा?

श्री मोहम्मद अकबर :- आपको हर मामले में राज्यपाल का अपमान। आ चुके हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनके लिए कार्यवाही नहीं रोकी जा सकती, ये सभा का अपमान है, ये गवर्नर साहब का अपमान है।

अध्यक्ष महोदय :- हर बात को इस नजरिये से मत देखिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- हर बात में अपमान।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिए, बैठिए, सुनते हैं कि कौन शुरू करता है?

श्री मोहम्मद अकबर :- किस मामले में अपमान हो गया? अभी दो मिनट लगेगा देख लेना।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कार्यवाही चल रही है या बंद है यह बताईये? आपका सदस्य जो धन्यवाद प्रस्ताव रखेगा कहां है?

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय सदस्य ने विधानसभा में आते ही प्रीविलेज का मुद्दा उठाया है। आपने उनको बोलने का अवसर दिया। आप विशेषाधिकार की बात कह रहे थे। अब हर अलग-अलग मुद्दे पर अपनी बात करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिए, काटिए, काटिए, समय काटिए। आज छत्तीसगढ़ विधानसभा का रिकार्ड बन रहा है। छत्तीसगढ़ विधानसभा में आज रिकार्ड बन रहा है। आपका फ्लोर मैनेजमेंट हम देख रहे हैं। कोई मत बोलिएगा, इसको देखिएगा।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक):- कोई इंतजार करे। किसी सदस्य के नाम से इंतजार करना उचित नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी बैठिए ना, देखते हैं कि कितने बजे शुरू होता है। इधर से कोई मत बोलना।

श्री रविन्द्र चौबे :- जब नेता प्रतिपक्ष बोल रहे थे तो उन्हें आप बैठा क्यों दिये हैं, यह हमारा आपस का मामला है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपस का कैसे? वह सदन में नेता प्रतिपक्ष हैं।

कृषि मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- आप इनको डरा रहे हैं।

श्री संतराम नेताम :- अगर नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं तो आपको शांत रहना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऊपर से (पत्रकारों की ओर इशारा) देख रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- ये आपको भी देख रहे हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- जब माननीय नेता प्रतिपक्ष कुछ बोलना चाहते थे तो माननीय सदस्य ने उनको क्यों बैठा दिया ? क्या माननीय सदस्य उनको बैठा सकते हैं? ये व्यवस्था का प्रश्न है, आप इस पर व्यवस्था दीजिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, इनका आचरण देखिए। संसदीय कार्य मंत्री रहे हैं, ये बैठे बैठे बोल रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार का बहुत अच्छा फ्लोर मैनेजमेंट। अध्यक्ष जी, ऐसी अवमानना।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, संसदीय कार्य मंत्री रहे हैं, ये बैठे बैठे बोल रहे हैं। कुछ तो सीखो।

श्री अजय चन्द्राकर :- किससे ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हमसे सीखो। और किससे सीखोगे? संसदीय कार्य मंत्री रहे हो और हाऊस में बैठे-बैठे बोल रहे हो।

श्री धरमलाल कौशिक :- ये छत्तीसगढ़ की विधानसभा में नई परिपाटी कि ये हाऊस इंतजार करे, क्या यही परंपरा कायम करेंगे यह आपको विचार करना है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, साईलेंट हाऊस।

श्री दीपक बैज :- वैसे अजय भैय्या आप ऐसे ही हल्ला करते रहिए, अच्छा लग रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- रविन्द्र चौबे जी, आप इस संबंध में कुछ कह रहे हैं?

(श्री अमरजीत भगत, सदस्य के सभा भवन में प्रवेश करने पर)

(श्री अजय चन्द्राकर सदस्य द्वारा हंसने पर)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- माननीय सदस्य की ये हंसी बृज भैय्या का हाथ दबाकर जो हंसी थी वैसी हंसी लग रही है। वही वाली है क्या?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय अमरजीत भगत जी, आप समय का ख्याल रखा करें।

समय:

11.09 बजे **<u>माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा</u>**

<u>"माननीय राज्यपाल महोदया ने जो अभिभाषण दिया उसके लिए छत्तीसगढ़ विधानसभा के इस सत्र में समवेत सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं।"</u>

अध्यक्ष महोदय :-अब माननीय श्री अमरजीत भगत सदस्य राजयपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा आरंभ करेंगे।

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\a12\11.10-11.15

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, जैसे ही सदन आहूत हुआ आपने प्रीविलेज की चर्चा उठा दी । अब प्रीविलेज पर बात हो ही रही थी। माननीय अमर जी भगत पानी पीने में थोड़े से लेट हो गये । (हंसी) अब ये चिल्लाने लग गए, कहां गये सदस्य। आपकी बात पूरी नहीं हुई थी, अमरजीत भगत हाजिर हो गये ।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिस दिन शपथ ली थी पूरे सदन ने और आपने भी छत्तीसगढ़ी में ये बात कही थी, मैं इस सदन की गरिमा बढ़ाऊगा और आपने इस दो दिन में इसका प्रदर्शन भी किया, और हम सबका विश्वास बना लेकिन लगातार ये दूसरी घटना हुई कि पहले बार कारण चाहे जो भी हो।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, प्वाईंट ऑफ आर्डर।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आप गवर्नर एड्रेस में धन्यवास करने के बजाय पहले अनुपूरक बजट लाये। चलिये आपने भी उदाहरण दे दिया, 2010 में एक बार हुआ। आज छत्तीसगढ़ बनने के बाद इतिहास में पहली बार हुआ दूसरी बार माननीय गवर्नर साहब का अपमान किये कि जो आदमी धन्यवाद प्रस्ताव रखेगा। सत्ता रूढ़ दल के माननीय सबसे वरिष्ठ मैं 10 बार कह चुका हूं मैंने लेजिसलेसन उनसे सीखा है। वो ये कहते हैं कि पानी पीने रूक गये थे हमारी बातचीत के कारण ये अपमान है माननीय अध्यक्ष महोदय और प्रताड़ित किया जाना चाहिए । लगातार अपमान कर रहे हैं । सदन की गरिमा गिरा रहे हैं। पानी पीने गये थे कारण बता दीजिए। इसमें आपकी व्यवस्था आनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी प्वाईंट ऑफ आर्डर।

श्री अजय चंद्राकर :- कभी संसदीय संस्थाओं का दोबारा अपमान मत हो। ये हिम्मत मत कर सके। आपकी व्यवस्था आनी चाहिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, हर लाईन में माननीय अजय चंद्राकर जी एक लाईन बोल रहे हैं कि हमने गवर्नर का अपमान किया। इसको विलोपित करें। किसने गवर्नर का अपमान किया। हम संसदीय पंरपराओं और व्यवस्थाओं को जानते हैं। मैं आपसे कह रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- यहां अनावश्यक चर्चा न करें।

श्री अजय चंद्राकर :- ऐसा मत बोलिये की आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आये। ये पानी पीने गये थे।

श्री रविन्द्र चौबे :- हर लाईन में गवर्नर का अपमान ये नई आना चाहिए। हम गवर्नर का सम्मान करते हैं।

संतराम नेताम (केशकाल) :- आपको हताश होने की जरूरत नहीं है। ये हताशा का प्रतीक है। आप जनादेश को स्वीकार कीजिए आप। जनता का जनादेश मिला है स्वीकार कीजिए आप।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय चंद्राकर जी के स्वास्थय परीक्षण की आवश्यकता है। आपका ब्लड प्रेशर बढ़ता जा रहा है।

श्री अजय चंद्राकर :- कल रात को यही सिखाए थे, आप बस ऐसा मत कहिएगा और आपको बधाई बहुत-बहुत ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य मैं भी अनुरोध करूंगा कि चंद्राकर जी आप अपना ब्लड प्रेसर जरूर चेक करवा लें। (मेजों की थपथपाहट)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, कुछ ऐसी आवश्यकताएं रहती है जिसको देव दानव नहीं रोक सकता। (हंसी) इनको लूज मौसम लग रहा थे बार बार जाना पड़ रहा है। मैंने इनसे कहा कि......।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री बोल रहे हैं, पानी पीने रूक गये थे। अब वो लूज मौसम बता रहा है। आपका स्वास्थ्य तो स्वस्थ है न सत्तू भैया। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत भगत बात करें।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अरे भैया आपको देख के मेरे को लूज मौसम लगने लगेंगे। इनको अभी शुरू हो गया।

श्री शिवरतन शर्मा :- कितना भी कर लो मंत्री नहीं बनोगे। अभी आपके सदस्य को हो गया, आप ही बता रहे हो।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अभी आपको लूज़ मौसम होने वाला है, आप चिंता मत करिये। आपको भी होगा।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के इस पौने 3 करोड़ आबादी वाले राज्य के गरिमामयी ......।

श्री अजय चंद्राकर :- पानी पीये हो अच्छा पानी पी पी के दो अभी, मंत्री बन जाओगे पानी पी के आए हो।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- पानी पिलायेंगे आपको चिंता मत करिये।

श्री अमरजीत भगत :- महामहिम राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर मैं कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

जारी श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\a13\11.15-11.20

जारी श्री अमरजीत भगत :- इस प्रदेश में नये वर्ष में, नई सरकार के आने के बाद नये-नये कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। छत्तीसगढ़ धान का कटोरा कहा जाता है। उस प्रदेश के सबसे बड़े पंचायत विधान सभा के आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। जहां सबसे अधिक नये सदस्य चुनकर आये हैं। मैं अपने भाषण की शुरूआत कबीर दास जी की उस पंक्ति से शुरू करता हूँ :-

कबीरा खड़े बाजार में मांगे सबकी खैर।

न काहू से दोस्ती न काहू से बैर।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम अपने दल में अपने सरकार के प्रति, सरकार के काम के प्रति जो उन्होंने कार्ययोजना बनायी है, माननीय राज्यपाल महोदया जी ने यहां कृपापूर्वक अभिषाण देकर जो उन्होंने हम पर कृपा की है, मैं उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदया जी का अभिभाषण एक तरह से सरकार की कार्ययोजना का कवर पेज होता है। बोलते हैं कि खत का मजनून बता देता है कि अंदर क्या लिखा है ? जो यहां पर माननीय राज्यपाल महोदया का अभिभाषण हुआ, उससे साफ झलकता है कि इस प्रदेश के सूबे के मुखिया हमारे मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल साहब, जो किसान पुत्र है, जो धरती पुत्र है जिनके दिलों दिमाग में किसानों के प्रति दर्द है, किसानों के प्रति काम करने की चेष्टा है। माननीय राज्यपाल महोदया जी का अभिभाषण सरकार की कार्ययोजना का कवर पेज है। मैं हमारे मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने इस प्रदेश के किसानों की चिन्ता की। जिन्होंने शपथ ग्रहण के बाद, पद धारण करने के बाद, अगर पहला दस्तखत कहीं किया, किसानों की कर्ज माफी के लिए किया, मैं उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। (मेजों की थपथपाहट) ये काम वही व्यक्ति कर सकता है, जिसके दिल में लोगों के लिए दर्द हो, जो उस परिवेश में रहा हो, जो उस परिवेश में सबको देखा हो कि किसान किस प्रकार से दिक्कत में है। वह किस प्रकार से संघर्ष करता है ? यदि ज्यादा बारिश हो गई तो किसान परेशान होता है, यदि बारिश नहीं हुई तो किसान परेशान होता है। कभी अतिवृष्टि, कभी ओलावृष्टि से किसान परेशान होता है। लेकिन मैं पिछली सरकार की भी कड़े शब्दों में आलोचना करता हूँ कि इन 15

सालों के लम्बे कार्यकाल में किसान कई बार दिक्कत में फंसा, कभी ओलावृष्टि, अतिवृष्टि में और सूखे के चपेट में फंसा, लेकिन वाह रे सरकार, आपके दिल में तनिक भी किसानों के प्रति न सहानुभूति जागी, न उनको मदद करने के लिए आपके कोई कदम उठे। लेकिन मैं हमारे दल के नेता इस प्रदेश के मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने अगर कुछ पहला काम किया तो किसानों के लिए किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, धान का कटोरा कहे जाने वाले प्रदेश में अगर किसान आत्महत्या जैसे जघन्य कदम उठाने लगे, जो पूरे प्रदेश के लिए एक काला धब्बा है। हम कहीं जाते हैं, हां आप उसी प्रदेश से आये हो, जहां किसानों की आत्महत्या की घटनाएं लगातार घट रही है, ये हमारे लिए बहुत बड़ी बदनामी की बात थी। कोई भी व्यक्ति आत्महत्या जैसे कदम यूं ही नहीं उठाता है, उनकी सारी संभावनाएं समाप्त हो जाती है। उन्हें दूर-दूर तक मदद की कोई संभावना नहीं दिखती। सरकार की तरफ से कोई मदद की उम्मीद नहीं होती। उनके लिए कोई मदद के हाथ नहीं उठते। जब सब तरफ से नाउम्मीद हो जाता है तब कोई व्यक्ति इस प्रकार की घटना को अंजाम देता है। जहां पर किसान की फसल बर्बाद हो जाए......

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\a14\11.20-11.25

पूर्व जारी.. श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां किसान की फसल बरबाद हो जाये, किसान कर्ज में डूब जाये, उनके ऊपर कर्ज वसूली का लगातार दबाव बना रहे, कभी तहसीलदार, कभी बैंक के यहां से वसूली की नोटिस मिलती है और कभी सेठ, साहूकार के यहां से दबाव रहता है। ये परिवेश में जब लगातार ये घटनायें हो रही थीं, यह जो काम माननीय भूपेश बघेल जी ने किया है, यह किसानों के लिए संजीवनी जैसा काम है, मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं, इसकी जितनी तारीफ करें, उतना कम है। मननीय अध्यक्ष महोदय, आज किसान आत्मनिर्भर हो रहा है। उनके ऊपर जो एक मानसिक बोझ था, वह उससे उबर रहे हैं। इस प्रदेश में लगभग 16 लाख 65 हजार से अधिक किसानों का 6100 करोड़ रुपये से अधिक अल्पकालीन ऋण माफ करने का जो निर्णय लिया गया है, उसके लिए मैं सरकार की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। अल्पकालीन ऋण माफी योजना 2018 की दिशा में निर्देश जारी किये हैं जिसके तहत छत्तीसगढ़ के सहकारी बैंक एवं छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक में समस्त किसानों का 30 नवंबर 2018 तक का अल्पकालीन कृषि ऋण किया जाना है। ऋण माफी के निर्णय को अमलीजामा पहनाने के लिए पहले चरण में 10 दिन के भीतर लिंकिंग के तहत हुई धान खरीदी के एवज में 1248 करोड़ रुपये की राशि 3 लाख 57 हजार किसानों के खाते में जमा कर दी गई है। आगामी चरणों मे शेष प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कर ली जायेगी। राष्ट्रीयकृत बैंक से संबंधित अल्पकालीन कृषि ऋण के परीक्षण उपरांत कार्यवाही शीघ्र की जायेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विरोधी दल भारतीय जनता पार्टी के कुछ साथी लोग बड़ी-बड़ी बात करने लगे थे। सरकार को बने हुए जुम्मा-जुम्मा 4 दिन हुए हैं और हिसाब-किताब मांगने लगे। इन्होंने 15 सालों में तो किसानों के लिए कुछ नहीं किया, लेकिन 10 दिन के अंदर यह जरूर कहने लगे कि कर्जमाफी की, धान का 2500 रुपये क्विंटल देने की जो घोषणा की है, अगर सरकार इसको पूरा करेगी तो लोगों ने इस्तीफा तक देने की बात कही है। वह इस्तीफा दें या न दें, मैं उनके ऊपर छोड़ता हूं। वह जो चाहें जो कहें। लेकिन हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने 10 दिन क्या, 10 घंटे से भी पहले किसानों के लिए काम करके दिखाया। हमने तो जो कहा था उसको करके दिखाया। माननीय चन्द्राकर जी, अगर जरा भी आपमें पानी है तो आपने जो घोषणा की थी उसको करके दिखाईये। आपने घोषणा की थी कि हम इस्तीफा देंगे। क्या आपने इस्तीफा भी देने की पेशकश की है?

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी लेट मत होना, पानी के लिए गये थे, उसके बाद पेशाब करने के लिए मत जाना। मैं जब बोलूंगा तो मेरी बात को सुनना।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी को पता नहीं क्या हो गया है ? जैसे इस पार से उस पार गये हैं, ये अजीब टाईप की हरकत करने लगे हैं। जो असामान्य रूप से कोई हरकत करने लगे, तो शंका होने लगती है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस सीट पर अजय चन्द्राकर जी बैठे हैं, वहां पहले अमरजीत भगत जी बैठते थे और कितना अच्छे से बोलते थे, कितना शांत रहते थे, आप ये सीट की तो इज्जत रखिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जितनी मेहनत कर लो, इधर दूसरे नंबर में थे, उधर दूसरे नंबर में ही बैठोगे। दिल्ली से भी फोन करवाओगे तो उधर नहीं जा सकते। वोरा युग समाप्त। इधर दो लोगों का मार्गदर्शक मंडल है।

श्री अरूण वोरा :- अभी आगे-आगे देखिये होता है क्या ? हम लोग मंत्री से कम नहीं हैं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- अजय जी, हम लोग इस तरफ बैठ गये हैं, उसी में खुश हैं।

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\a15\11.25-11.30

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय चंद्राकर जी को और सभी साथियों को शुभकामना है कि आप लोगों को जो काम दिया गया है उसको बखूबी निभा रहे हैं । आप लोगों के दल की बैठक में जिम्मेदारी दी गयी है और कल तो अजीब टाईप का नजारा था कि आप लोग किसानों के बारे में चर्चा हो रही थी और आप लोग चर्चा में भाग न लेकर के सदन से वाकआऊट कर गये इसी से झलकता है कि किसानों से आपको कितना लगाव है ? किसानों के मामले में अगर कुछ

सुझाव देना था तो सदन में रहकर के देना था । आप लोग भागने के लिये, आप लोग वाकआऊट करने के लिये बहाना ढूंढ़ते रहते हैं, किसानों के प्रति आप लोगों ने तो कुछ किया नहीं है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इन लाईनों के साथ आगे की बात कहना चाहूंगा कि - जाके पैर न फटे बेवाई, वो का जाने पीर पराई । इन्होंने कभी किसानों के साथ, इन्होंने कभी किसानों के लिये कुछ काम किया ही नहीं, ये तो खाली दिखावा करते हैं, ये तो पूरे पूंजीपतियों की ड्यूटी बजाने का काम करते हैं, कभी अडानी के लिये, कभी अंबानी के लिये, कभी कोयला के लिये, कभी माईनिंग के लिये, कभी यहां का पानी बेचने का काम तो कभी जंगल बेचने का काम, इन लोगों ने किसानों के लिये कभी काम नहीं किया । किसानों के लिये अगर किसी ने काम किया है तो हमारे मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी ने काम किया है जिन्होंने किसानों का धान 2500 रूपये क्विंटल बढ़ाकर उनको आर्थिक समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाने का काम किया है । हमने महसूस किया है कि हमारी विरोधी पार्टी को जब-जब मौका मिला तब-तब लोगों को छलने का काम किया । पहले उन्होंने कहा था कि -डीजल नहीं खाड़ी से अब निकलेगा बाड़ी से और यह स्लोगन दे-देकर के करोड़ों-अरबों रूपये का खेल कर दिये। इतने 15 सालों में कहीं भी एक बूंद अगर डीजल निकला हो, एक बूंद अगर कहीं पेट्रोल निकला हो तो बतायें । जितने विभाग थे, सभी विभागों को निर्देश जारी था कि कहां से रमनजोत (हंसी) रतनजोत का, लोग इसको रमनजोत कहने लगे थे । (हंसी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, पैसे की बर्बादी, पैसे का भ्रष्टाचारी, खाली कमीशनखोरी के लिये इन्होंने काम किया । कहीं से एक बूंद डीजल आज तक नहीं निकला, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि इसकी भी जांच होनी चाहिए कि कौन विभाग कितना रतनजोत लगाया और कितने सरकारी पैसे का दुरूपयोग किया ? कहां-कहां भ्रष्टाचार हुआ इसका भी लेखा-जोखा आना चाहिए । माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश की कानून-व्यवस्था के बारे में भी बताना चाहता हूं कि इस प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति बद् से बद्तर हो गयी थी ।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट साहब, कानून व्यवस्था पर एक लाईन भर सुन लीजिये । अभी एक पूर्व मंत्री के 3 पेट्रोल पंप एक दिन में लूटे गये हैं, अभी मात्र शुरूआत हुई है । 15 दिनों में आपकी और कितनी उपलब्धि रहेगी ? श्री पुन्नूलाल जी का लूटा गया है, 3 पेट्रोल पंप लूटे गये हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में झीरम घाटी की घटना छत्तीसगढ़ के लिये एक बदनुमा दाग है । हम लोगों ने प्रथम पंक्ति के उन सारे नेताओं को खो दिया है जो छत्तीसगढ़ के भविष्य थे, जो छत्तीसगढ़ के नेतृत्वकर्ता थे । माननीय अध्यक्ष महोदय, बात करते हुए मन बोझिल हो जाता है, कोई भी सरकार हो, सरकार की यह नैतिक जवाबदारी है कि यहां के नागरिकों की सुरक्षा की जवाबदारी सरकार की है और कोई सरकार यदि सुरक्षा मुहैया नहीं करा सके तो इससे दुखद घटना और कुछ हो नहीं सकती । जहां सुरक्षा है वहीं पर विकास की संभावना है । हमारी पार्टी के

बड़े नेता परिवर्तन यात्रा के लिये दिल्ली से लेकर के यहां तक के सभी नेतागण जब बस्तर रवाना हुए, हम लोगों ने सोचा भी नहीं था कि इतनी बड़ी घटना होगी.............जारी

..........श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\a16\11.30-11.35

जारी-------श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां सुरक्षा है, वहीं पर विकास की संभावना है । हमारी पार्टी के बड़े नेता परिवर्तन यात्रा के लिए दिल्ली से लेकर यहां तक, सभी नेतागण जब बस्तर रवाना हुए तो हम लोगों ने सोचा भी नहीं था कि इतनी बड़ी घटना होगी । हम जिनसे मिल रहे हैं, उनसे दुबारा नहीं मिल पाएंगे । अध्यक्ष महोदय, कई तरह की बातें होती हैं, मैं उन बातों की ओर नहीं जाता हूं । लेकिन इतना ज़रूर कहूंगा कि इस घटना ने छत्तीसगढ़ को झिंझोड़कर रख दिया । नंदकुमार पटेल जो इस सदन के सदस्य थे । जिनके साथ हम लोग बैठते थे, वे प्रदेश अध्यक्ष थे हमने कई लड़ाइयां साथ में लड़ी। हमारे तमाम नेता उस दौरे में गए । स्वर्गीय महेन्द्र कर्मा जी जो हमारे नेता प्रतिपक्ष हुआ करते थे । उन्होंने भी छत्तीसगढ़ की अस्मिता और शांति के लिए जो लड़ाई लड़ी । हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी शहादत हो जाएगी । विद्याचरण शुक्ला जी जीवन के अंतिम चरण में गोलियों का शिकार होंगे । इन तमाम लोगों को याद करके मन बोझिल हो जाता है । लेकिन उस सरकार के बारे में क्या कहा जाए, जिसके ऊपर सुरक्षा की जवाबदारी थी। जिनके ऊपर छत्तीसगढ़ के एक-एक लोगों की जान की सुरक्षा की जवाबदारी थी, लेकिन उन्होंने सुरक्षा नहीं की । घटना के बाद सरकार ने उसकी जांच भी नहीं कराई । केवल सीबीआई, एनआईए के नाम पर खानापूर्ति किया । आज भी उमेश पटेल जी इस सदन के सदस्य हैं, माननीय मंत्री हैं, जब हम उनसे बात करते हैं तो उनकी आंखों में आंसू डबडबा जाते हैं । वे कहते हैं कि काका कुछ हो या न हो, लेकिन इस प्रकरण की जांच ज़रूर करवाइएगा । अध्यक्ष महोदय, राजनीति में पक्ष-विपक्ष होता है । विपक्ष अपनी बात कहेगा, सरकार आपनी बात कहेगी लेकिन प्रतिद्वंदिता में भी लोग इस स्तर तक की ग़लती करेंगे । यह हम सपने में भी नहीं सोच सकते । कल तक जो लोग सरकार में थे, आज विपक्ष में हैं । मैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि जो ग़लती इन्होंने की है, भविष्य में वह ग़लती आपकी तरफ से नहीं होना चाहिए । चाहे हमारे प्रतिद्वंदी हों, चाहे हमारे विरोधी हों, चाहे हमारे बारे में कुछ भी बात करें । लेकिन हमारा जो दायित्व है, हमने जो शपथ ली है कि हम निष्पक्षतापूर्वक, किसी के प्रति बैर और कटुता नहीं रखते हुए काम करेंगे । वह बहाल रहना चाहिए । जो ग़लती इन्होंने की है, अगर

सुरक्षा नहीं हटाई गई होती तो शायद इतनी बड़ी घटना नहीं हुई होती । इतनी बड़ी चूक, इतनी पुलिस फोर्स, इतने अधिकारी, आपका इंटेलिजेंस और इतनी बड़ी घटना । पूरा देश स्तब्ध रह गया और इतनी बड़ी घटना के बाद किसी के ख़िलाफ कोई कार्यवाही नहीं । चार्जशीट तक जारी नहीं हुई ....

---जारी- श्री ठाकुर-

ठाकुर\09-01-2019\a17\11.35-11.40

जारी..............श्री अमरजीत भगतः- चार्जशीट तक जारी नहीं हुआ। माननीय अध्यक्ष महोदय, उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है। जो लोग जांच के नाम पर केवल लीपापोती करके इतने बड़ी घटना को इतने हल्के में निपटा दिया। छत्तीसगढ़ की पूरी जनता स्तब्ध थी, दुखी थी माननीय अध्यक्ष महोदय और चाह रही थी कि इस घटना का जांच हो। कौन दोषी है उसके खिलाफ कार्यवाही हो। मैं माननीय भूपेश बघेल जी को बहुत धन्यवाद देता हूं कि एक अनसुलझे पहलू को उन्होंने छुआ है और अंजाम तक पहुंचाने के लिए उन्होंने कदम उठाया है। मैं जल्दी से जल्दी इस पर जांच हो, जांच पूरी हो और जो भी दोषी हो उनके खिलाफ कार्यवाही सुनिश्चत होना चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों के बारे में ये सरकार और एक बड़ी काम करी है। बस्तर के लोहंडीगुंड़ा में अभी।

अध्यक्ष महोदयः- माननीय सदस्यगण। माननीय भगत जी। मैं आप सबको यह बताना चाहता हूं कि जब आपका समय ज्यादा होगा तो मेरी यह लाल बत्ती जला करेगी जो ये सूचना देगी आपको कि आप जल्दी समाप्त करें। बाद में मैं घंटी भी बजाऊंगा जो आपको मैं रोकने का अधिकार रखूंगा।

श्री अमरजीत भगतः- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदयः- आधा घंटे हो गये हैं। कृपया समाप्त करने की कोशिश करिए।

श्री अमरजीत भगतः- माननीय अध्यक्ष महोदय आपके आदेश सराखो पर। ये सदन तो माननीय अध्यक्ष महोदय आप ही के आदेश से चलती है और आप जो निर्देश देंगे वो हमारे लिए।

श्री धर्मजीत सिंहः- बुलेट ट्रेन में चलने वाली सरकार के प्रथम वक्ता पेसेंजर ट्रेन में चल रहे हैं। कृपया करके लाल बत्ती थोड़ा बाद में जलाइए अध्यक्ष जी। चलने दीजिए अभी पेसेंजर शुरू हुआ है। अभी थोड़ा टाइम लगेगा।

अध्यक्ष महोदयः- मैंने घंटी नहीं बजाई है। घंटी नहीं बजाई है। लाल बत्ती ही जलाई है।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है माननीय अध्यक्ष जी। लाल बत्ती तो ऐसी पड़ गयी है उनको उधर बैठे हैं। अब आप लाल और जला दोगे तो गड़बड़ हो जाएगा न।

श्री अमरजीत भगतः- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार की तरफ से बस्तर के लोहंडीगुड़ा

में एक दशक पहले टाटा इस्पात संयंत्र की स्थापना के लिए राज्य शासन द्वारा ग्रामीण किसानों की निजी भूमि अधिग्रहित की गई थी उसमें 10 गांव को लोहंडीगुड़ा तहसील के अंतर्गत छिंदगांव, कुम्हाली, दुरागांव, बेलियापाल, पड़ांजनी, दाबपाल, बड़ेपरोदा, बेलर, सिरिसगुड़ा तथा तोकापाल तहसील के अंतर्गत ग्राम ताड़गुड़ा के 1700 से अधिक।

श्री अजय चंद्राकर :- अरे, समय कम है। उसकी अनुमति लेकर आप पटल पर रख दो, हम लोग पढ़ लेंगे।

श्री अमरजीत भगत:- 1700 हेक्टेयर से अधिक भूमि शामिल थी। 10 साल बीत जाने पर टाटा द्वारा इस्पात संयंत्र लगाने में कोई रूचि नहीं ली गई। जिसके कारण ग्रामीणों और किसानों में निराशा उत्पन्न हो गई थी। मेरी सरकार ने हमारी सरकार ने इन ग्रामीण किसानों को उनकी भूमि लौटाने का फैसला किया है। सरकार ने बस्तर के जनजीवन में व्यवस्था के प्रति विश्वास पैदा करने का जो संकल्प किया है उसमें भूमि लौटाने का निर्णय बहुत महत्वपूर्ण है। माननीय अध्यक्ष महोदय, नियम और शर्तों के मुताबिक पूर्ववर्ती सरकार ने टाटा संयंत्र की स्थापना के लिए 1700 हेक्टेयर जमीन उपलब्ध कराया था और केवल होर्डिंगबाजी, केवल प्रचार-प्रसार किया। टाटा का संयंत्र स्थापित कर रहे हैं। हम बस्तर का दशा और दिशा बदल रहे हैं। यहां के बेरोजगारों को नौकरी मिलेगा। तरक्की में 4 कदम आगे तरह-तरह का स्लोगन, भारत के माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी को लाकर के उसका शिलान्यास उसका भूमि पूजन, करोड़ों रूपया खर्च, जनता के पसीने का गाढ़ी कमाई के पैसे का दुरूपयोग और हुआ क्या माननीय अध्यक्ष जी ऊंचा दुकान और फीका पकवान केवल एक स्लोगन वाली सरकार वहीं तक सीमित रही। न टाटा का संयंत्र लगा और न शर्तों के मुताबिक 5 साल में अगर जो भूखंड उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

............जारी श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\a18\11.40-11.45

.........जारी श्री अमरजीत भगत :- शर्तों के मुताबिक अगर 5 साल में जो भूखण्ड उपलब्ध कराये जा रहे हैं, उसमें किसी भी प्रकार का निर्माण नहीं होने से उस भूमि की उपयोगिता समाप्त हो जायेगी, उनसे वापिस ले ली जायेगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सरकार टाटा सयंत्र की स्थापना के बारे में बड़ी-बड़ी बातें की थी। प्रचार-प्रसार और स्लोगन लिखने में मस्त रही। लेकिन टाटा का संयंत्र स्थापित नहीं हुआ, कोई बात नहीं है। कई करार होते हैं, जो पूरा नहीं होता है, हम इसको मानते हैं। लेकिन उसका दूसरा पहलू, हम जमीन किसानों को वापिस नहीं करेंगे। यह सरकार किसानों को जमीन वापिस करेगी, जाने इन बातों को कितनी बार कहा। कितने बार समाचार-पत्रों में छपा, कितने बार विज्ञापन छपा, ये लोग कितनी बार माला पहने, कितनी बार सभा किए, लेकिन हुआ क्या ? उन आदिवासियों को जमीन वापिस

हुआ क्या ? उन लोगों को जमीन वापिस लौटाया गया क्या ? बस्तर के हमारे साथी विधायक कई मौकों पर इस बात को उठाते रहे।

श्री दीपक बैज :- अमरजीत भैय्या, उसमें भी ये लोग कहते थे कि किसान अपना पैसा वापिस दे दे और जमीन ले ले। मौखिक रूप से बोलते थे, लेकिन लिखित रूप से नहीं था। लेकिन आज हमारी सरकार बिना पैसे के जमीन वापिस कर रही है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो भी निर्वाचित जनप्रतिनिधि आता है, उसकी जवाबदारी होती है, उनके प्रति समर्पण होता है। उनका अपने क्षेत्र के लिए कमिटमेंट होता है कि उनके क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान करें। जब-जब समस्या पैदा हुई, लोग जब मांग करने लगे कि जब हमारी जमीन का उपयोग नहीं हो रहा है तो हमको वापिस कराया जाए। उस क्षेत्र के चाहे सांसद हो, विधायक हो, मंत्री हो, सभी लोगों ने कोशिश की जमीन वापिस हो जाए। लेकिन मजाल है साहब कि उनकी जमीन वापिस होगी ? रमन सिंह जी की सरकार थी, पूंजीपतियों की सरकार थी, किसी को जमीन देना हो तो जल्दी हो जायेगा, लेकिन अगर किसानों को उनकी जमीन वापिस करना होगा तो ....।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, उन जमीनों में किसानों का आज तक कब्जा है। आपकी जानकारी में बता दूं कि किसानों का कब्जा हटाया ही नहीं गया है। इस सदन में चर्चा हो चुकी है। किसान उन जमीनों पर आज तक काबिज हैं। आप गलत जानकारी दे रहे हो।

श्री दीपक बैज :- लेकिन आप उनको क्या लाभ दिए ? सरकार ने उनको 10 साल तक लाभ से वंचित किया है। उनको 10 साल तक एक रूपये का भी लाभ नहीं मिला है।

श्री शिवरतन शर्मा :- इसी सदन में चर्चा हुई है। किसान उस जमीन पर काबिज हैं। किसान काबिज हैं, खेती कर रहे हैं। उनको मुआवजा मिल चुका है।

श्री दीपक बैज :- कुछ नहीं है। कोई खेती नहीं कर रहा था। आपने उनको एक रूपये का लाभ नहीं दिया है। उनको बेघर कर दिए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, न वे धान बेच पा रहे हैं और उनका जाति प्रमाण-पत्र बन रहा है और न ही उनको शासन की किसी योजना का लाभ मिल पा रहा है। जरूर खेती-किसानी कर रहे हैं। लेकिन न तो धान बेच पा रहे हैं और न उनका जाति प्रमाण-पत्र बन पा रहा है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे साथियों को तो केवल मामलें में टांग अड़ाना आता है। आप केवल चर्चा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं, उसका समाधान नहीं निकाल सकते हैं।

डॉ0 कृष्णमूर्ति बांधी :- भाई अमरजीत, ऐसा सिचुएशन प्रदेश में किसी और जगह में है क्या कि बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने किसानों का भूमि अधिग्रहण किया हो और अब तक चालू नहीं किया हो। उसके लिए भी नियम लागू है क्या ? अभी भी जो किसान काबिज हैं, उन पर भी नियम लागू होगा क्या ?

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी, आपको 40 मिनट होने वाले हैं और आपकी तरफ से 24 लोगों का नाम है। इसलिए मैं चाहूंगा कि आप जल्दी करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसमें उनका 10 मिनट पानी पीने और दूसरे कामों में निकल गया है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार केवल बात करती थी, काम नही करती थी। लोगों की जमीन लौटाने का काम, लोगों की मदद करने का काम अगर किसी ने किया तो भूपेश बघेल सरकार ने किया है। मैं उनका बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, छोटे-छोटे भूखण्डधारी, मध्यम तथा कमजोर तबके के लोगों की छोटे आकार के भूखण्ड की खरीदी-बिक्री को लेकर उनको अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। जिसके कारण वे पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से घिर गए थे। हमारी सरकार ने उनकी परेशानियों की गंभीरता को देखते हुए उस पर तुरन्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया और तत्काल राहत देने के लिए 5 डिसमिल से कम रकबे की जमीन की खरीद-बिक्री नामान्तरण, पंजीयन पर से रोक हटा दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार को काम करने से कौन रोका था ? आपने क्यों नहीं किया ? आपको तो बड़े-बड़े लोगों का ध्यान था। आपकी निष्ठा तो बड़े उद्योगपतियों के प्रति था।

......श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\a19\11.45-11.50

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, अमरजीत जी, सरकार ने आदेश कर दिया । भू-राजस्व संहिता में कृषि भूमि में 5 डिसमिल से कम की रजिस्ट्री मनाही है। आपने कोई संशोधन किया है क्या ? खाली आदेश कर दिया । आपको नियमों की जानकारी है कि नहीं ?

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- वह हम लोग बताएंगे न ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी जो काम कर रहे हैं, उसमें इन लोगों को हमेशा शंका हो रही है । एक ने कहा था कि अगर उनका कर्जा माफ हो गया, 25 सौ रूपये क्विंटल धान का दाम दे दिए तो हम इस्तीफा दे देंगे, लेकिन उनका इस्तीफा नहीं आया, लेकिन हमारी तरफ से किसानों के खातों में पैसा आना शुरू हो गया ।

श्री दीपक बैज :- अध्यक्ष महोदय, इनको फालतू का शंका हो रहा है । ये बोलते कुछ हैं, करते कुछ हैं । हर चीज को शंका की दृष्टि से देखते हैं ।

श्री अरूण वोरा :- आपकी शंका को हम दूर नहीं कर सकते, लुकमान के पास भी इसका ईलाज नहीं है, हम कहां से करेंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपकी शंका दूर नहीं होगी, ये तय है ।

श्री अरूण वोरा :- हो जाएगा, आप चिन्ता मत करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप कुछ भी कर लो, भूपेश जी आपको कभी मंत्री नहीं बनाने वाले हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भूपेश बघेल जी की सरकार ने तो छोटे भूखण्डों की खरीदी-बिक्री पर रोक था, उसको हमारी सरकार ने हटा दिया और अगर आपको उसमें अच्छा नहीं लग रहा हो, आपको नहीं पच रहा है तो आप कोर्ट जा सकते हैं, आपका रास्ता खुला है । इस प्रदेश में छोटे बेरोजगार लोगों का पैसा, यहां के किसानों की गाढ़ी कमाई का पैसा, यहां के चिटफंड कम्पनी के द्वारा हड़प लिया गया था । छोटे बेरोजगार, यहां के जो एजेन्ट थे, उनके ऊपर तरह-तरह की कार्यवाही हो रही थी । कभी गिरफ्तारी, तो कभी वारंट, उसके लिए पिछली सरकार को कई बार ज्ञापन दिया गया, सदन में कई बार बात उठाई गई, लेकिन उनके कान में जुं तक नहीं रेंगी । उल्टा उन लोगों की गिरफ्तारी हुई, उनको जेल भेजा गया । मैं माननीय भूपेश बघेल जी का धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने उनकी दिक्कतों को, उनकी परेशानियों को समझा और उसमें भी त्वरित कार्यवाही करते हुए उन लोगों का पैसा वापस कराने के लिए जो कार्यवाही की है, हम उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, आपको धन्यवाद देते हैं । इस प्रदेश में सरकार का नया कान्सेप्ट है-नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी से गांव के समग्र विकास की अवधारणा पर काम ये सरकार करेगी । सरकार प्रत्येक नाले, नरवा का क्रमबद्ध संरक्षण एवं सवर्धन करते हुए गांव के विकास के लिए वर्ष भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी । मनरेगा को इस अवधारणा से जोड़ने के लिए सुसंगत काम करने का कदम उठाया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जो कांसेप्ट है, ये जो सोच है, उसकी मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं । गांव में गांव के विकास के लिए जो अवधारणा हो, पहले जब 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य बना था तो तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय जोगी जी हुआ करते थे । उन्होंने एक जोगी डबरी बनाया था, उसके लिए रमन सिंह सरकार ने तरह-तरह की बात की, आज उन्हीं से दोस्ती और वह डबरी कहां गया, पता नहीं चला, लेकिन मैं भूपेश बघेल जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने जल संरक्षण के लिए जो कदम उठाया है, इससे गांव की दशा और दिशा बदलेगी, गांव में साल भर पानी की उपलब्धता के लिए व्यवस्था हो सकेगी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप उसका नाम क्या रखे हैं ? भूपेश डबरी रखे हैं क्या?

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसका नाम रखे हैं-नरवा । नरवा को बांधने का काम करेंगे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- नरवा को डबरी बोलते हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह तो ठीक है, हमारी चिह्नारी है, हम भी मानते हैं, लेकिन ये बताओ कि उस डबरी का नाम क्या है ?

श्री अरूण वोरा :- मैं बताता हूं न ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो डबरी देखे ही नहीं हैं, आप कहां को बोल रहे हो। आप दुर्ग में रहते हो, आप कहां डबरी जानोगे । वे सरगुजा के हैं, मैं उनसे पूछ रहा हूं और जोगी जी....

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिए न, नामकरण होगा तो आपसे चर्चा कर लेंगे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- नामकरण कर लेना ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- वैसे भी नामकरण के लिए पूछने की जरूरत नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- जल्दी समाप्त करिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में रहने वाले जो जनजातीय लोग हैं, जो वन क्षेत्र में रहते हैं, जिनका आजीविका वनों से जुड़ी हुई है ।

श्री अजय चन्दाकर :- अध्यक्ष महोदय, वे आपकी ओर देखकर नहीं बोलते, सही मामले में वे माननीय जोगी जी की तरफ नजर मिलाकर नहीं बोल सकते इसलिए वे ऊपर देखते रहते हैं ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\b10\11.50-11.55

श्री अमरजीत भगत :- वनों से संग्रहण होने वाले चार, चिंरौजी, तेंदूपत्ता, मोहलईन पत्ता, इसको इकटठा करके साल भर के गुजारा के लिए उन लोग व्यवस्था करते हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान के इतिहास में आज तक ऐसी सरकार नहीं देखा था, जो आदिवासियों के फारेस्ट प्रोडयूस है, उसके घर में डाका डाले, उनके पाकेट में डाका डाले, उनके दर में कटौती किया गया, इसके लिए मैं मोदी सरकार का कड़े शब्दों में भर्त्सना करता हूँ कि हमारे आदिवासी भाईयों का जो साल भर का गुजारा उसमें होता है, वनों से इकटठा होने वाले फारेस्ट प्रोडयूस का, उसका रेट घटा दिया था । मैं भूपेश बघेल जी का भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, जिन्होंने रेट बढ़ाने का काम किया है।

अध्यक्ष महोदय :- खत्म करिये ना ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ऐसा डर के मत बोलिये । न वो लाल बत्ती जलाये हैं, न घण्टी बजाये हैं, आप जबरदस्ती बैठ रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- इशारा देख रहा था ।

श्री धर्मजीतसिंह :- नहीं, कोई इशारेबाजी नहीं है । अध्यक्ष जी, कोई इशारेबाजी नहीं करते हैं । इशारा करने के लिए उनके पास दो माईक है । अध्यक्ष जी के पास आप इशारेबाजी का आरोप लगा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी, आप विलम्ब से आये हैं, मैंने इशारे के लिए यहां लाल बत्ती लगा दी है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपके इशारे के लिए लाल बत्ती है, घण्टी है, वह तो आपके ऊपर बोल रहे हैं, इशारेबाजी कर रहे हैं । अमरजीत जी को देखकर क्या इशारेबाजी करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- इशारेबाजी नहीं चल रही है, लालबत्ती जल रही है ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जीवन में काम करने का अवसर सभी को मिलता है । जब अवसर मिलता है तो अच्छा काम करना चाहिये।
परोपकार का काम करना चाहिये, जनहित का काम करना चाहिये । जितने लोगों का भला हो सके, भला करना चाहिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कुछ भी कर लो, जीवन में आपको अच्छा काम करने का अवसर नहीं मिलने वाला है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सत्यनारायण जी, वहां से बात करके आ गये हैं, आपको अवसर नहीं मिलेगा ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार में जो काम करने का अवसर मिला था, साहब कोई 15 साल का काम कम नहीं होता है । 15 साल में तो छत्तीसगढ का तकदीर बदल सकता था, तस्वीर बदल सकता था । लेकिन साहब आप लोगों ने किया क्या । इन 15 सालों में केवल षड़यंत्र, केवल लूट, कमीशनखोरी, एक दूसरे को फर्जी प्रकरण बनाकर फंसाना, आपसी वैमनस्यता निकालना, आपसी दुश्मनी निकालना, साजिश करना, क्या राजनीति का यही अवधारणा है ? क्या हम लोग राजनीति में इसीलिए आते हैं । पिछली सरकार ने क्या किया, पिछले सदन में जो नेता हुआ करते थे, क्या हम लोग राजनीति में इसीलिए आते हैं, पिछली सरकार ने क्या किया, पिछले सदन में जो नेता हुआ करते थे, वह अभी नहीं है । जब नेता प्रतिपक्ष का आपके तरफ चुनाव हुआ, अंदर क्या घटना घट रही थी साहब, पूरा बाहर आ रहा था । यहां बैठे-बैठे सब को पता चल रहा था कि आपके यहां क्या हो रहा था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो भी हुआ होगा, वह छत्तीसगढ़ में हुआ । तीन दिनों तक दिल्ली में नहीं हुआ । दिल्ली में बैठक एक दिन इसलिए लेट हो गयी, भांचा-भांची स्कूल से नहीं आये थे । उनका अभिमत लेना था । तीन थे, तीन राज्य के मुख्यमंत्री का फैसला कर रहे थे । यहां हम छत्तीसगढ़ में अच्छा कर रहे थे या बुरा कर रहे थे, बताया ना आपको कि भांजा-भांजी का स्कूल लेट हो गया, इसलिए एक दिन बैठक टल गई ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा एअरपोर्ट से वापस नहीं जाना पड़ा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कहां है वो इधर बैठे थे । एअरपोर्ट से वापस गये । यहां वैसा नहीं होता, जो होता है खुला खेल होता है ।

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष की कुर्सी का फैसला हो रहा है । उसी के लिए ज्यादा लोग अलग-अलग तरह से खड़े होकर बोल रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके कथनी और करनी में अंतर है । कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं । जब इनको अवसर मिला तो काम किये नहीं । अब पछताने से क्या फायदा । अभी तक पिछली सरकार के मंत्री लोग अपनी मानसिकता नहीं बदल पाये हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- अध्यक्ष जी, पूरे 45 मिनट हो चुके हैं । बाकी के नये लोग नहीं बोल पायेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में टेप काण्ड, सी.डी. काण्ड दुनिया भर के काण्ड हुये । दो मंत्रियों का झगड़ा और आक्षेप हम लोगों की तरफ । दूसरों को फंसाने की कोशिश, जो दूसरे के लिए गडढ़ा खोदता है,

जारी ..... श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\b11\11.55-11.60

जारी ...श्री अमरजीत भगत :- और आक्षेप हम लोगों की तरफ। फंसाने की कोशिश दूसरों को। जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वह उसी गड्ढे में गिरता है। विपक्षी दल के साथ भी वही हुआ है। यह दूसरों के लिए षड़यंत्र करते रहे, ये दूसरों को फंसाने का काम करते रहे और अंतिम विधानसभा में जिस प्रकार से पूर्व मुख्यमंत्री जी ने भाषण दिया था, हम लोगों की तरफ इशारा था कि अगर विपक्ष का रवैया यही रहेगा तो हमारी संख्या वहां तक पहुंचेगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, पांसा उल्टा पड़ गया।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उन्होंने वैसा नहीं कहा था, उन्होंने हम लोगों के लिए कहा था कि आप लोग पहुंच जाओगे।

श्री अमरजीत भगत :- कहा था कि ये दो लाईन में सिमटेंगे लेकिन ये तो संयोग है कि जो दूसरों के लिए करता है वह खुद गड्ढे में गिरता है। आप लोगों का दो लाईन भी पूरा नहीं हो रहा है। सम्माननीय जोगी साहब को हटा दिया जाए तो आपकी लाईन कम्प्लीट नहीं हो रही है। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, आप जोगी साहब को हटाने की बात कर रहे हैं, आप जोगी साहब की लाईन से क्यों हटे यह तो बता दो? हम पूछ रहे हैं कि जोगी साहब की लाईन से यह क्यों हटे यह तो बता दें ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अमरजीत जी, आप बोल रहे थे कि हम बिना किसी भेदभाव के कार्रवाई करेंगे, बदले की भावना से कार्रवाई नहीं करेंगे। कोई बदले की भावना से कार्रवाई होगी तो आज आप सरकार की तरफ से प्रथम वक्ता हैं आप हम लोगों को बदले की कार्रवाई में बचाओगे क्या ? आपके पास आयेंगे तब आप यह कहकर हाथ मत उठाना कि मैं मंत्री नहीं बना हूं।

श्री अमरजीत भगत :- बदले की कार्रवाई नहीं होगी, आप निश्चिंत रहिए। इसी सदन में सब घटना घटी, हम सब देखते रहे। कई तरह के सपने दिखाए गए। मैं इस कविता की तरफ ध्यान दिलाता हूं जिसे इसी सदन में कुछ लोग पढ़ा करते थे कि दुर्बल को न सताईये, जाकी मोटी हाय, मरी खाल की सांस से लौह भस्म होई जाए। लेकिन बार-बार बताने के बाद भी पिछली सरकार को समझ में नहीं आया। जितना भी काम किए सब गरीबों के खिलाफ, नि:सहायों के खिलाफ, किसानों के खिलाफ, मजदूरों के खिलाफ। यहां की खदान बेच दी गई, यहां का पानी, यहां का जंगल बेच दिया गया। यहां की सुरक्षा हटा दी गई, जानमाल की सुरक्षा नहीं हो रही है। उस सरकार को मौका मिला था, अगर सरकार चाहती तो अच्छा काम कर सकती थी। इन्होंने क्या किया? केवल नाम बदलने का काम किया। मैं राज्यपाल महोदया के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था आप दीवार के चित्रों को बदलकर इतिहास के तथ्यों को नहीं बदल सकते। सरकार भारत की गरिमा, विरासत का सम्मान करते हुए कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुरूप जनहित के लिए इतिहास रचेगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- और उस कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार करने के लिए पहला संकल्प आया कि मंत्री की संख्या बढ़ाओ? ये आपके कल्याणकारी राज्य की अवधारणा है ? इधर दिख जायेगा आपको शेर।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन लोगों ने क्या किया था? हमारे महापुरूषों का, हमारे नेताओं का यहां तक कि गांधी जी, नेहरू जी और इंदिरा जी का सरकारी दस्तावेजों से फोटो हटाने का काम किया था। अब इस सरकार ने जो निर्णय लिया है कि इनके मुख्यमंत्री और पंडित दीनदयाल उपाध्याय की फोटो दस्तावेजों से हटेगी तो इनको तकलीफ होने लगी है। सरकार पूरी तरह से स्वायत्त है, स्वतंत्र है कि वह किसका फोटो, किसकी तस्वीर लगायेगी। भारतीय जनता पार्टी के लोगों को केवल बदले की बू दिखती है। उस दिन बात कर रहे थे कि ये जो फोटो हटायी जा रही है यह बदले की कार्यवाही है, यह नहीं होना चाहिए। आपने तो इंदिरा जी के नाम पर जो इंदिरा आवास चल रहा था उसको भी बंद कर दिया और नेहरू जी के नाम से जो योजना चल रही थी उसको भी बंद कर दिया। सरकारी दफ्तरों में जितने भी फोटो थे, उसको भी हटा दिया। पाठ्यक्रम से भी कई चीजों को हटा दिया। पिछली सरकार केवल बदले की भावना से काम कर रही थी।..

श्री प्रमेश

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले सरकार केवल बदले की काम कर रही थी । हम लोगों की सरकार माननीय भूपेश बघेल की सरकार किसानों की तरक्की के लिए, किसानों के विकास के लिए छत्तीसगढ़ की दशा और दिशा बदलने के लिए काम कर रही है जो इस सदन में माननीया राज्यपाल महोदया ने कृपापूर्वक उद्‌बोधन दिया उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं और अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद जय हिन्द।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यगण आप सबने इस सदन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए और उसको उच्चतर स्तर पर पहुंचाने के लिए मुझ पर विश्वास किया है । मैं चाहता हूं कि हास, परिहास के दौरान ऐसे शब्दों का उपयोग न किया जाए, जो इस सदन की गरिमा के अनुकूल न हो और इस संदर्भ में आप सबसे कहना चाहता हूं कि कबीर साहब की एक पंक्ति को शब्द संभाले बोलिये, शब्द के हाथ न पांव, एक शब्द करे औषधि, एक शब्द करे घाव।

श्री अजीत जोगी :- धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय जोगी जी का पूरा सम्मान, इस सदन के नेता भी रहे हैं लेकिन क्या भारतीय जनता पार्टी से ....।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- भारतीय जनता पार्टी के पूरे सदस्य बोलेंगे, सूची है वहां पर। आप सूची को देख लीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सूची पढ़ देता हूं। मैंने सूची के अतिरिक्त उनको बुला लिया।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप चिंता मत कीजिए, भारतीय जनता पार्टी ने अभी शुरूआत नहीं की है।

श्री रविन्द्र चौबे :- करने वाले भी नहीं हैं, ऐसा लगता है। माननीय जोगी जी सदन के नेता रहे हैं, हम सुनेंगे आपत्ति नहीं है लेकिन प्रमुख विपक्षी दल से .....।

श्री धरमलाल कौशिक :- बोलने के पहले ही पानी छोड़ दिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है, आसंदी की व्यवस्था है और आसंदी की व्यवस्था तो सबको मान्य है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में 21 माननीय सदस्यों के संशोधनों की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। संशोधन बहुत ही विस्तृत है, मैं, पूरे संशोधनों को नहीं पढ़ूंगा, केवल संशोधन प्रस्तुतकर्ता सदस्यों के नाम तथा संशोधनों की संख्या को ही पढ़ूंगा । जो माननीय सदस्य सदन में उपस्थित होंगे उनके ही संशोधन प्रस्तुत हुए माने जाएंगे :-

1.	श्री धरमलाल कौशिक, नेता प्रतिपक्ष	15
2.	श्री ननकीराम कंवर, सदस्य	04
3.	श्री अजय चंद्राकर, सदस्य	18

4.	श्री शिवरतन शर्मा, सदस्य	34
5.	श्री नारायण चंदेल, सदस्य	24
6.	डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, सदस्य	07
7.	श्री अजीत जोगी, सदस्य	26
8.	डॉ. रेणु अजीत जोगी सदस्य	28
9.	श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य	29
10.	श्री विद्यारतन भसीन, सदस्य	09
11.	श्री भीमा मंडावी, सदस्य	01
12.	श्री केशव प्रसाद चंद्रा, सदस्य	08
13.	श्री देवव्रत सिंह, सदस्य	13
14.	श्री सौरभ सिंह, सदस्य	31
15.	श्री डमरूधर पुजारी, सदस्य	15
16.	श्री रजनीश कुमार सिंह, सदस्य	32
17.	श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू, सदस्य	12
18.	श्री प्रमोद कुमार शर्मा, सदस्य	13
19.	श्रीमती इंदू बंजारे, सदस्य	08

माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर श्री अमरजीत भगत, सदस्य द्वारा प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन और संधोधनों पर एक साथ चर्चा होगी। मैं नाम बुला रहा हूं, अपने अधिकार को प्रयोग करते हुए।

श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\b13\12.05-12.10

श्री अजीत जोगी (मरवाही):- माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

वह चिराग और होंगे, जो तेज हवाओं से बुझते हों।

हमने तो जलने का हुनर तूफानों से सीखा है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स के प्रसिद्ध उपन्यास ए टेल ऑफ टू सिटिज के चार बार-बार उद्धृत की जाने वाली पंक्तियों से प्रारंभ करूंगा। अंग्रेजी में है, मैं उसका अनुवाद हिन्दी में भी करूंगा।

It was the best of times
It was the worst of times
It was the spring of hope
It was the winter of despair

We had every-thing before us
We had nothing before us
We were all going direct to Heaven
We were all going directly the other way.

ये पंक्तियां बहुत बार उद्‌धृत की जाती हैं। मैंने इसका हिन्दी अनुवाद करने की कोशिश की है। वह सबसे अच्छा समय था। वह सबसे बुरा समय था। वह आशाओं की बसंत थी। वह निराशा थी, निराशा की सर्दी थी, हमारे सामने सब कुछ था, हमारे सामने कुछ भी नहीं था। हम सभी सीधे स्वर्ग की ओर जा रहे थे, हम सभी सीधे दूसरे रास्ते पर जा रहे थे। जैसा ऐतिहासिक, प्रचंड, अभूतपूर्व, उल्लेखनीय, प्रशंसनीय, जनादेश इस सरकार को मिला है। उसी के संदर्भ में मैंने ये पंक्तियां उद्‌धृत की हैं। न भूतो, न भविष्यति, संभवत: ऐसा जनादेश, ऐसा जनता का समर्थन, शायद ही किसी सरकार को भविष्य में भी मिलेगा। इसलिए आज एक स्वर्णिम अवसर है। आज छत्तीसगढ़ एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। जैसा चार्ल्स डिकेन्स ने कहा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सरकार जो कुछ करेगी या जो कुछ नहीं करेगी। जब इतिहासकार छत्तीसगढ़ का इतिहास लिखेगा तो वह क्या ये लिखेगा कि ये छत्तीसगढ़ के इतिहास का सबसे अच्छा समय था या ये लिखेगा कि यह छत्तीसगढ़ के इतिहास का सबसे बुरा समय था या हमारी सरकार के लिए और हम सबके लिए चुनौती है कि हम ऐसा कुछ कर दिखाये, जिससे इतिहासकार ये कहें कि यह छत्तीसगढ़ के इतिहास का सबसे अच्छा समय था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास तीन दस्तावेज हैं राज्यपाल का अभिभाषण है अनुपूरक बजट है और कांग्रेस पार्टी का जन घोषणा पत्र है। मैं इसे सकारात्मक रूप से कह रहा हूँ कि जब मैंने इन तीनों दस्तावेजों को पढ़ा तो मुझे इसमें विरोधाभाष दिखता है, जो घोषणापत्र है.....जारी

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\b14\12.10-12.15

पूर्व जारी... श्री अजीत जोगी :- तो मुझे इसमें विरोधाभास दिखता है। जो घोषणा पत्र है उसको कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राहुल गांधी जी ने यहां की आमसभाओं में दोहराया और लगभग 10 स्थानों पर यह कहा कि मैं ये आश्वासन देता हूं कि मेरी सरकार बनने के बाद 10 दिन के अंदर हर किसान का, हर कर्ज माफ होगा। उन्होंने ये नहीं कहा था कि कुछ किसानों का कुछ कर्ज माफ होगा या सब किसानों का कुछ कर्ज माफ होगा या कुछ किसानों का सब कर्ज माफ होगा। आश्वासन यह है कि सब किसानों का सब कर्ज माफ होगा। ये बड़े गर्व की बात है कि इसके अनुपालन में हमारे मुख्यमंत्री जी ने 4 दिन के अंदर ही अधिसूचना जारी की। 17 तारीख को शपथ हुई थी और 21 तारीख को अधिसूचना

जारी हुई। उस अधिसूचना की कंडिका-4 बहुत महत्वपूर्ण है। कंडिका-4 में उन चार ऋणों का उल्लेख किया गया है जिनकी माफी नहीं होगी। एक तरफ तो ये कहा गया कि हर किसान का हर कर्जा माफ होगा और अधिसूचना में ये कहा गया कि ये चार ऋण माफ नहीं होंगे। कंडिका-4 में लिखा है, थोड़ा सरल भाषा में करके बता रहा हूं, किसानों के मध्यकालीन और दीर्घकालीन कर्ज माफ नहीं होंगे, दीर्घकालीन और मध्यकालीन कर्ज माफ नहीं होंगे। आर.बी.आई. द्वारा संचालित बैंकों द्वारा दिये गये ऋण माफ नहीं होंगे। निजी वित्तीय और गैर वित्तीय जैसे कारपोरेट हाऊसेस, ट्रस्ट हैं, उनसे लिये गये कर्ज माफ नहीं होंगे। अपनी चल-अचल संपत्ति को गिरवी रखकर किसान जो कर्ज लेता है, वह भी माफ नहीं होंगे। अगर ये चार तरह के किसान के कर्ज माफ नहीं हुए तो जो कर्ज माफी के पीछे दर्शन और चिंतन है, उसका कोई मायने नहीं होगा। इसलिए मैं अनुरोध करता हूं, आपने प्रामिश किया है, आश्वासन दिया है कि हर किसान का हर कर्जा माफ होगा तो ये कंडिका-4 को निकाल दीजिए। ये कर्ज माफी नहीं होगा की जगह यह करिये कि ये कर्ज माफ सही होगा। क्योंकि हम सब जानते हैं, हममें से अधिकांश मेरे ख्याल से 90-95 प्रतिशत हम लोग किसान परिवार से संबंधित हैं। हम सब जानते हैं कि किसान जब विवशता में आत्महत्या करता है तो वह कर्जे के कारण नहीं करता है जो हम माफ कर रहे हैं। बीज का जो कर्ज मिला, दवा का जो कर्ज मिला, खाद का जो कर्ज मिला, वह तो लिंकिंग में दे देता है। वह तो अपने आप उसकी अदायगी हो जाती है।... (जारी)...

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\b15\12.15-12.20

जारी..........श्री अजीत जोगी :- कि बीज का जो कर्ज मिला, जो दवा का कर्ज मिला, खाद का जो कर्ज मिला, वह तो लिंकिंग में दे देता है, वह तो अपने आप उसकी अदायगी हो जाती है उससे दुखी होकर के आज तक किसी भी किसान ने, मैं चुनौती के साथ कह सकता हूं, मैं आंकड़े ढूंढ रहा था कि कितने किसानों ने पिछले 3 सालों में आत्महत्या की है और किन कारणों से आत्महत्या की है ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे 1 ही वर्ष का प्राप्त हुआ, यह इकानॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली में इसके अनुसार मुझे भी आश्चर्य हुआ 72 परसेंट कर्ज किसान साहूकारों से लेता है, हमारी बैंकिंग व्यवस्था, सहकारिता व्यवस्था उससे 28 परसेंट कर्ज लेता है और यह इकानॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली देश की सबसे प्रतिष्ठित मैग्जीन है । इसमें डॉक्टर बैनर्जी ने रिसर्च करके यह ऑर्टिकल लिखा है कि 72 परसेंट किसान साहूकारों से कर्ज लेता है और जो आत्महत्या करते हैं किसान, 1 साल का आंकड़ा हमारे छत्तीसगढ़ का है इस ऑर्टिकल में 858, 3 साल में ढ़ाई हजार, 3 हजार के लभगभ आत्महत्याएं हुई हैं, यह एन.सी.आर.बी, नेशनल क्राईम ब्यूरो के आंकड़े हैं इन 3 हजार या ढ़ाई हजार किसानों में से एक ने भी किसी अन्य कारण से आत्महत्या नहीं की, सबने या तो वह जो दीर्घकालीन ऋण लिया था ट्रेक्टर के लिये, बॉर्डवॉयर के लिये, बड़े तालाब बनाने के लिये, सिंचाई के लिये यह जो बड़े कर्ज लिये बड़े

किसान ने और जब उसको यह लगा कि मैं इसको नहीं लौटा सकूंगा और समाज में मेरी प्रतिष्ठा खत्म हो जायेगी तब उसने आत्महत्या की और या फिर वह छोटा और मध्यम किसान जिसने साहूकार से कर्ज लिया और साहूकार का कर्ज, उसका ब्याज मासिक लगता है 10 परसेंट, उसको वह पटा ही नहीं सकता और जब नहीं पटा पाता है और साहूकार हर महीने डंडा लेकर उससे वसूली करने आता है, हर हफ्ते आता है, हर गली, हर रास्ते में उसको रोककर टोकता है तो उससे असहाय होकर वह आत्महत्या करता है । सहकारी बैंको से 10 परसेंट, 11 परसेंट ब्याज मिलता है और साहूकार 10 परसेंट प्रति माह ब्याज लेता है यानी 12 गुना ज्यादा का फर्क उसके ब्याज में है । नई दुनिया ने एक ऑर्टिकल छापा था कृषि कर्ज माफी पर फिर आर.बी.आई. की चेतावनी । इसका केवल एक वाक्य पढ़ रहा हूं आर.बी.आई. के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2016-17 में कृषि कार्य के लिये आवंटित कर्ज की वृद्धि दर 12.4 फीसदी थी जो वर्ष 2017-18 में घटकर 3.8 फीसदी रह गयी । इसका अर्थ यह है यह वह वर्ष है जब कर्ज माफी का हल्ला, अभी चुनाव आ रहा है, विभिन्न प्रदेशों में हुआ । जब हल्ला नहीं हो रहा था तो बैंक कर्ज देने में सामने आ रहा था, 12.8 प्रतिशत कर्ज देने की वृद्धि हुई पर जब यह हल्ला हो गया कि अब कर्ज माफ होने वाला है तो बैंकों ने यह सोचकर कि यह...........जारी

............श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\b16\12.20-12.25

जारी................श्री अजीत जोगी :- तो बैंक कर्ज देने में सामने आ रहा था । 12.8 प्रतिशत कर्ज देने की वृद्धि हुई थी लेकिन जब यह हल्ला हो गया कि अब कर्ज माफ होने वाला है तो बैंकों ने यह सोचकर कि यह एनपीए हो जाएगा, ये असेट फिर हम वसूल नहीं कर सकेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, जब हम लोग बोलते हैं तो माननीय चन्द्राकर जी बार-बार खड़े होते हैं, बहुत तकलीफ होती है । अभी बड़ी शांति से सुन रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी बात सुनने लायक है, आप कैसे भ्रम में हैं ? यह भ्रम छोड़ दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अभी जो उद्गार व्यक्त किए जा रहे हैं, आपने कल धर्मजीत भैया के भाषण में नहीं सुना था क्या ? कॉपी हो रही है । माननीय जोगी जी बहुत विद्वान हैं, बैंकों के बारे में बता रहे हैं लेकिन उन्होंने कहा कि साहूकारों का कर्ज को-ऑपरेटिव सेक्टर के कर्ज से ज्यादा है । मैं समझता हूं कि 90 प्रतिशत किसान हैं, अब वह परिस्थितियां नहीं हैं, आप हमारे मुख्यमंत्री थे तब से वे परिस्थितयां नहीं हैं ।

श्री अजीत जोगी :- अध्यक्ष महोदय, मैंने जवाबदारी से वे आंकड़े प्रस्तुत किये हैं, जो रिसर्च करने के बाद विद्वानों ने और विशेषकर कृषि क्षेत्र के विशेषज्ञों ने प्रकाशित करवाए हैं, मैंने अपनी ओर से कोई

आंकड़े प्रस्तुत नहीं किये हैं । अगर पुनरावृत्ति हो रही है, मैंने तो धर्मजीत सिंह जी का भाषण नहीं सुना था । वह फैक्ट है जो वह तो वही रहेगा ।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले वर्ष, अभी एक साल भी नहीं हुआ है । माननीय अजीत जोगी जी के क्षेत्र में एक किसान ने आत्महत्या की थी। मैं अजीत जोगी जी के वक्तव्य से पूरी तरह से सहमत नहीं हूं । उन्हीं के क्षेत्र में एक सामान्य किसान ने आत्महत्या की है और 20-25 हजार रूपए का उस पर लोन था, जिस पर पूर्ववर्ती सरकार द्वारा लीपापोती करके यह दर्शाया गया था कि उसका बैंक में, उसके एकाउंट में उसका पैसा चला गया है । मैं माननीय जोगी जी से कहना चाहता हूं कि आपके आंकड़े रिसर्च के आधार पर सही होंगे लेकिन आपके ही क्षेत्र में एक किसान ने आत्महत्या की, वह आदिवासी किसान था । अगर हम उसको केस स्टडी पर लेते हैं और पटल पर उसकी भी जानकारी दें कि किस कारण से उसने आत्महत्या की । मैं यह बताना चाहता हूं ।

श्री अजीत जोगी :- मैं पांडे जी को धन्यवाद देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- यह उनकी जवाबदारी नहीं है, केस स्टडी करना ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- पांडे जी, आप यहां मानसिक रूप से उपस्थित हैं या नहीं, यह बताइए । शारीरिक रूप से तो दिख रहे हैं । अरे, जोगी जी ने तो यह कहा ही नहीं कि उस किसान के खाते में क्यों पैसा पहुंचा ? इस सरकार के लोगों के समय की बात है । अगर वह आत्महत्या हुई है, तो हुई है । इसमें जोगी जी ने तो कोई फेवर नहीं लिया ना । जोगी जी तो बता रहे हैं कि आत्महत्या हो रही है ।

श्री शैलेश पांडे :- मैं केवल एक उदाहरण बता रहा हूं, उन्हीं के क्षेत्र का ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप असहमत क्यों हैं ? जोगी जी तो बता रहे हैं कि आत्महत्या हुई है ।

श्री शैलेश पांडे :- मैंने यह नहीं कहा, माननीय महोदय, मैंने कहा कि मैं पूरी तरीके से सहमत नहीं हूं । मैंने यह कहा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है, आधे सहमत होइए, लेकिन होइए तो ।

श्री शैलेश पांडे :- सदन में इस बात की जानकारी देना भी जरूरी है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बता रहे हैं कि 25 हजार के कारण हुई है, वही तो जोगी जी बोल रहे हैं और कौन सी नई बात बोल रहे हैं ?

श्री शैलेश पांडे :- उसको आप भी मानिये ना, मैं कोई गलत बनया तो नहीं दे रहा हूं, सदन में कह रहा हूं ।

श्री अजीत जोगी :- मैं पांडे जी को धन्यवाद देता हूं ।

(श्री देवेन्द्र यादव, सदस्य द्वारा खड़े होकर कुछ कहने की कोशिश करने पर)

अध्यक्ष महोदय :- देवेन्द्र जी, ये माननीय मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं । इनकी बातों को सुनिये और कुछ सीखने की कोशिश कीजिए । (मेजो की थपथपाहट)

श्री देवेन्द्र यादव :- जी ।

श्री अजीत जोगी :- धन्यवाद् अध्यक्ष महोदय । मैं पांडे जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने यह प्रकरण उठाया । मैं और मेरा पुत्र, हम दोनों ही वहां गए थे । हमारे ही क्षेत्र का मामला है और मैं उससे पूरी तरह से भिज्ञ हूं । आप वाइस चांसलर रहे हैं, बड़े विद्वान हैं । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप भी ऐसी कोई स्टडी करें । ये जो आंकड़े मैंने दिए हैं, मैंने कहा कि ज्यादातर लोग ऐसा करते हैं । मैंने यह नहीं कहा कि इसके अलावा और किसी कारण से कोई आत्महत्या नहीं करता । पत्नी से झगड़ा ....जारी

----श्री ठाकुर-

ठाकुर\09-01-2019\b17\12.25-12.30

जारी..............श्री अजीत जोगी (मरवाही):- मैंने यह नहीं कहा कि इसके अलावा और कोई कारण से आत्महत्या नहीं करता। पत्नी से झगड़ा हो जाता तो भी आत्महत्या कर लेता और कारण होते हैं आत्महत्या के। मैंने ये कब कहा कि और कोई कारण नहीं होता। मैंने कहा ज्यादातर आत्महत्याएं साहूकार से जो ऋण लिये साहूकार उसको तंग करता है उसके कारण होते हैं। और ये मेरा निष्कर्ष नहीं है। ये डॉ. बनर्जी की रिसर्च का निष्कर्ष है जो पोलिटिकल विकली में छपा है।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय अध्यक्ष महोदय मैंने माननीय महोदय को बस एक लाइन बताना चाहता हूं।

श्री शैलेष पाण्डेय:- एक मिनट अमरजीत भैय्या।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए देखिए माननीय सदस्य इल्ड नहीं कर रहे हैं इसलिए आप इल्ड न करें।

श्री अजीत जोगी(मरवाही) :- मैं इल्ड नहीं कर रहा हूं। कृपया बोलने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय:- जी आप बात करिए।

श्री अजीत जोगी(मरवाही) :- तो मैंने नई दुनिया के इस आर्टिकल को उद्धृत करके ये बताने की कोशिश की है कि ऋण माफी का एक पहलू यही है कि अगर ऋण माफी इसी तरह से आधी अधूरी हुई तो किसान कर्ज के चंगुल से कभी नहीं निकल पाएगा। वो तभी कर्ज के चंगुल से निकलेगा, जब दो बातें हों। पहली बात ये कि उसका हर कर्ज माफ हो जाए। उसके ऊपर कोई कर्जा दूसरा न बचा हो। दीर्घकालीन न बचा हो। मध्यमकालीन न बचा हो। उसके पास साहूकार का कर्ज न बचा हो। उसके पास किसी कार्पोरेट हाउस का या ट्रस्ट का कर्ज न बचा हो। कोई भी कर्ज न बचा हो। ये पहली शर्त है और

दूसरी शर्त ये है कि दूसरे वर्ष जो वो खेती करे उससे उसको इतना पर्याप्त मिल जाए कि कर्ज लेने की जरूरत न पड़े। जब तक ये दो शर्तें पूरी नहीं होंगी, हम उसको कर्ज के कुचक्र से मुक्ति नहीं दिला सकते। आज मुझे अच्छा लगता है। मुख्यमंत्री जी को बधाई देता हूं कि आज जिस किसान से बात करो वो खुश है। क्योंकि उसके खाते में पैसा जमा हो गया। पर मैं उससे आगे बढ़कर बोल रहा हूं कि केवल आज खुश करना हमारा उद्देश्य नहीं है। हमारा उद्देश्य ये है कि वो ये जो कुचक्र चलता है कि हर साल कर्ज में फंस जाता है। इस कुचक्र से निकले। उसके लिए जो आदरणीय राहुल गांधी जी ने घोषणा की थी कि हर किसान का, हर कर्जा माफ हो। हर किसान का हर प्रकार का कर्जा माफ करें और फिर उसको उसकी फसल का इतना पैसा दें कि उसको कर्ज लेने की जरूरत न पड़े। तब हमारा किसान सही में खुशहाल हो पाएगा। (मेजों की थपथपाहट) मैं चेतावनी के रूप में नहीं किन्तु एक सावधानी के रूप में मुख्यमंत्री जी को यह कहना चाहूंगा कि जो कर्ज माफी की घोषणा हमारे यहां हुई वैसी ही घोषणा पंजाब और कर्नाटक में भी हुई थी। वहां आज की क्या स्थिति है। वहां भी कहा गया था कि 10 दिन में सबका कर्जा हर किसान का हर कर्जा माफ हो जाएगा। पंजाब बड़ा समृद्ध प्रांत है अध्यक्ष महोदय। वहां जब अमनिंदर सिंग जी ने जोड़कर देखा हर कर्जा, जिसमें वो चारों श्रेणी भी शामिल हैं तो पंजाब के किसान के ऊपर 90 हजार करोड़ रूपए का कर्ज है और उन्होंने मांग कितना किया 3 हजार करोड़ रूपए। केवल 3 प्रतिशत कर्ज पंजाब में माफ हुआ है तो ये हर किसान का हर कर्जा तो माफ नहीं हुआ।

.......जारी श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\b18\12.30-12.35

जारी श्री अजीत जोगी :- तो हर किसान का हर कर्जा तो माफ नहीं हुआ। कर्नाटक में तो उससे भी बुरी स्थिति है। कर्नाटक में जब जोड़कर देखा गया कि कुल कितना कर्ज है तो वह 45 हजार करोड़ था। कर्नाटक में एक फार्म बना है, उसमें 52 पाईण्ट्स हैं। 52 कालम हैं। किसान उनको भरेगा, उसके बाद उसका कर्ज माफ होगा। तो आपको जानकारी यह आश्चर्य भी होगा और दुःख भी होगा कि इतना क्लिस्ट प्रक्रिया होने के कारण 45 हजार करोड़ की जगह केवल 75 करोड़ का ऋण माफ हुआ और लाभान्वित होने वाले किसानों की संख्या 394 है। मैं नहीं चाहता और हम में से कोई नहीं चाहता, न सत्ता पक्ष चाहता और न हम चाहते, न हमारे मुख्यमंत्री जी चाहते हैं और न हमारे अध्यक्ष जी चाहते हैं कि ये कर्नाटक और पंजाब की स्थिति हमारे यहां रिपीट हो। मुझे आशा की एक किरण दिखती है। एक दूसरे रिसर्च में इन तीनों राज्यों के कर्ज माफी की तुलना की गई है। उसमें यह कहा गया है कि अगर सच में कोई राज्य ऐसा है जो कर्ज माफ कर सकता है तो इन 3 राज्यों में पंजाब कभी नहीं कर सकता, कर्नाटक कभी नहीं कर सकता, पर छत्तीसगढ़ 3 साल के अंदर कर सकता है। मुख्यमंत्री जी यह आपके

लिए एक चुनौती है। 3 वर्ष के अंदर, मैं नहीं कहता कि जितने वादे किए गए हैं, वे सब रातोरात पूरे हो जायेंगे। मैंने तो आपको बधाई दी थी। आपने चौथे दिन प्रारंभ तो किया। पर इसको अंतिम छोर तक ले जाना आवश्यक है और ऐसी योजना बन सकती है कि 3 वर्ष में छत्तीसगढ़ में हम पूर्ण कर्जमाफी कर सकते हैं, यी भी तीनों राज्यों के तुलनात्मक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकला है। हम सब सोचते हैं कि बैंक से कर्ज की जानकारी ज्यादातर किसानों को होती है, वह लाभ उठाते हैं पर बहुत कम किसान जिनको आज मालूम है कि मैं अगर बैंक में जाऊंगा तो कर्ज ले सकता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी को याद दिलाना चाहता हूँ कि केवल समर्थन मूल्य देने के लिए, 2500 रूपये धान का प्रति क्विंटल देने के लिए आपको 2800 करोड़ की अतिरिक्त व्यवस्था करनी पड़ेगी। अनुपूरक बजट में 1800 करोड़ का प्रावधान है। 2800 करोड़ की जगह 1800 करोड़ का प्रावधान है तो इसका मतलब यह होता है कि इस अनुपूरक बजट के अनुसार आप समर्थन मूल्य भी पूरा नहीं दे पायेंगे।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ा सा करेक्ट करना चाहूंगा। हमने कल जो सप्लीमेन्ट्री बजट प्रस्तुत किया है उसमें 1800 करोड़ नहीं है, 3070 करोड़ है। करेक्ट कर लीजिये।

श्री अजीत जोगी :- मैंने जो इसमें पढ़ा है, वह बता रहा हूँ।

श्री भूपेश बघेल :- वह तो अनुपूरक बजट है, उसकी कापी तो आपको भी मिली होगी।

श्री अजीत जोगी :- हां, है न।

श्री भूपेश बघेल :- उसमें 3070 करोड़ है, देख लीजिये।

श्री अजीत जोगी :- नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- अजय चन्द्राकर जी की [1] [xx] है, जो पेपर दिए हैं, दूसरा वाला दे दिए हैं। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके निर्देश के बाद [xx] शब्द उपयोग हुआ।

..........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\b19\12.35-40

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके निर्देश के बाद **(XX)**[2] शब्द उपयोग हुआ है । कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा था, मैंने आपत्ति नहीं ली कि ये बात गलत है करके । ये दोनों

---

[1] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

[2] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

असंसदीय शब्द थे, आपके निर्देश के बाद उस तरह के शब्द का उपयोग हो रहा है ।

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- चलिए, उसको **(XX)** बोल लीजिए ।

श्री दीपक बैज :- वे **(XX)** बोलना चाह रहे थे ।

अध्यक्ष महोदय :- असंसदीय शब्द मैं स्वयं देख लूंगा, विलोपित करवा दूंगा ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप जैसे आदमी और कर ही क्या सकते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि आप मार्गदर्शक मंडल के सदस्य हो, आप लाख परफारमेंस दिखा लो, कुछ नहीं होना है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप जो हैं, उसे दुनिया जानती है कि आप क्या हैं। आप क्या हो, सारे लोग जानते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसे माननीय जोगी जी ने जिस अंदाज में अपनी बात शुरू की, मार्गदर्शक मण्डल की बात के लिए मैं आपको एक लाईन समर्पित कर देता हूं । तो शेर राजा बनता है, वह अपनी लियाकत से, अपने स्वभाव से बनता है । मुख्यमंत्री जी, आप अपने स्वभाव से राजा बने हो, **(XX)** आप समझ रहे हैं । इसलिए आप अपने स्वभाव से बने हो,

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ये तो और गंदी बात है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये एक कविता है, जो मैंने आपको बताया ।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी ने **(XX)** शब्द का उपयोग किया है ।

अध्यक्ष महोदय :- उसको विलोपित कर दें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अपने स्वभाव से राजा बने हो, राजा अपने दम पर बनता है, **(XX)**[3]

अध्यक्ष महोदय :- मैं विलोपित कर रहा हूं, कार्यवाही से विलोपित कर दें ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी की बात पर हमको घोर आपत्ति है और इनको माफी मांगनी चाहिए । हम सब लोग निर्वाचित सदस्य हैं और वे **(XX)** से संबोधित कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- उसको विलोपित कर दें ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी की नजरों में चुने हुए प्रतिनिधि **(XX)** हैं । आपको **(XX)** ही दिख रहा है । आपने हमको **(XX)** कैसे कहा ।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी की शब्द से घोर आपत्ति है ।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इतने पुराने वरिष्ठ सदस्य हैं और ऐसे असंसदीय भाषा का प्रयोग करते हो । आप अपनी सरकार के हार को पचा नहीं पा रहे हो ।

श्री अरूण वोरा :- इनके शब्द से हमको ठेस पहुंची है ।

---

3 [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी को उपाधि देना एक अलग बात है, लेकिन **(XX)** जैसे शब्दों से तुलना करना ये मैं समझता हूं कि ये सबके लिए अपमानजनक है और मैं समझता हूं कि अजय जी को इस प्रकार के शब्दों से बचना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने उसको विलोपित कर दिया है, उस चर्चा को ही विलोपित कर दिया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप निलंबित करवा दीजिए, मुझे आपत्ति नहीं है, लेकिन मैंने किसी को आब्लीगेट नहीं किया, कोई आरोप नहीं लगाया, मैंने उनकी क्षमता पर, उनकी योग्यता पर केवल एक कविता की लाईन को समर्पित किया । माननीय सदन के नेता को मैंने एक कविता समर्पित किया है । ...(व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनको माफी मांगनी चाहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने कविता की लाईन का समर्पित किया है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप शांत रहिए ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, इनकी बाडी लैंग्वेज भी असंसदीय है । 41 नये सदस्य आये हैं, मैं माननीय अजय चन्द्राकर जी से कहना चाहूंगी कि 41 नये सदस्य अ अनार की जगह अड़हा भी सीख सकता है, वही भाषा हम भी सीखकर आएंगे । आप नये सदस्यों के मार्गदर्शक हैं, आप वरिष्ठ सदस्य हैं, उस भाषा का इस्तेमाल मत करिए, जो हम ना सीखें ।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बहुत ही आपत्तिजनक बात है, माननीय चन्द्राकर जी ने **(XX)**[4] जैसे असंसदीय शब्दों का प्रयोग किया है, उनको सदन से माफी मांगनी चाहिए, कोई सदस्य यहां पर **(XX)** नहीं है । सब जनता से चुनकर आये हैं, **(XX)** शब्द का प्रयोग करना गलत है । उनको माफी मांगनी चाहिए।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी ने बहुत ही गलत शब्द का उपयोग किया है, हम जनता से चुने हुए प्रतिनिधि हैं, यहां कोई **(XX)** नहीं हैं । उनको अपने शब्द वापस लेना चाहिए, नहीं तो माफी मांगनी चाहिए । आपने सत्ता पक्ष के लोगों की तरफ इशारा किया है कि इतने लोगों के लिए, सत्ता पक्ष के लोगों के लिए **(XX)** शब्द का उपयोग किया है । ये घोर आपत्ति जनक है ।

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, हम सब आहत हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सिर्फ एक कविता सुनाई है । उसके बाद ये लोग क्या समझें, ये जानें.. ...(व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- सत्ता पक्ष की ओर इशारा था ।...(व्यवधान)

---

[4] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,आप अपने आप को समझ क्यों रहे हैं, मैंने तो कविता सुनाया है ।...(व्यवधान)

डा. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी ने सत्तापक्ष की ओर इशारा करते हुए कहा कि ये **(XX)** हैं । ...(व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आपके कविता सुनाने का मतलब क्या है, आपकी बातों का मतलब क्या है..(व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- इनको माफी मांगनी चाहिए, हमसे माफी मांगे ।

श्री अरूण वोरा :- मतदाताओं का अपमान है । ...(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, माननीय चन्द्राकर जी की मंशा कोई इधर के किसी को अपशब्द कहने का नहीं था, वे तो भूपेश बघेल जी को शेर बोल रहे थे । अब आपका शेर के नाम से टाईगर, आपको शेर न बोलें तो क्या बोलें, बताइए। ...(व्यवधान) दो मिनट सुन लीजिए ।

श्री धनेन्द्र साहू :- कृपया चुप रहिए...

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\c10\12.40-12.45

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कृपया चुप रहिये । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- जंगल में शेर को वन्य प्राणी ही चुनते हैं । (व्यवधान) राजा को चुनने के लिए ....(व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- उनको बनाने वाले (X X) है क्या । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप शेर हो ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ.रमन सिंह जी तीन बार बने हैं । अजय चन्द्राकर जी बतायें कि किसने चुना था ।(व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- (X X) बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जो निर्देश देंगे, मैं मान लूंगा ।

श्री अमरजीत भगत :- जानवर जैसे शब्द प्रयोग करके इशारा करके कहा है ।

सत्यनारायण शर्मा जी, धनेन्द्र साहू जी के तरफ इशारा करके कहा है । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- उसमें जो कथित असंसदीय शब्द है तो वापस लेता हूँ अध्यक्ष महोदय । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- साहू जी, बैठिये । साहू जी, समाप्त करिये । चलिये, साहू जी बैठिये । प्लीज ।

श्री अमरजीत भगत :- माफी मांगने दे, अध्यक्ष महोदय । एक ने जानवर कह दिया, दूसरे (XX) की उपाधि दे रहे हैं । आखिर बात क्या है । माननीय अध्यक्ष महोदय जी, आखिर इन लोग चाह क्या रहे हैं । (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :-वह ऐसे ही शब्दों का उपयोग करेंगे, (XX) का परिचय है ।

अध्यक्ष महोदय :- साहू जी, मैंने सब सुना है, सब देखा है । माननीय चन्द्राकर जी ने कविता कही । मगर गलत बॉडी लैंग्वेज का उपयोग किया और उसको मैंने विलोपित कर दिया है । इसलिए उसके बारे में कोई चर्चा नहीं होगी ।

श्री दीपक बैज :- यह सीधा-सीधा सदन का अपमान है । पूरे माननीय सदस्य बैठे हैं और उनको माफी मांगनी चाहिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- यह तो आसंदी की व्यवस्था को चुनौती देने वाली बात है, माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय जोगी जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- यह सदन आपके निर्देशों पर चलता है । आपकी व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैंने उसको विलोपित कर दिया है । उस पर चर्चा नहीं होगी । यह माननीय सदस्य का विवेक है । वह अपने कृत्य पर माफी मांगते हैं या नहीं ।

श्री दीपक बैज :- लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, उनको चेतावनी दीजिए, इस तरह से फिर न हो ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, कल से हम लोग लगातार कह रहे हैं कि आप विद्वान है । पूर्व संसदीय कार्यमंत्री हैं । दो दिन से आपका आचरण सदन भी देख रहा है और पूरा प्रदेश भी देख रहा है । आपने जिन शब्दों का उपयोग किया, आसंदी ने आपत्तिजनक माना, इसीलिए उसे विलोपित किया और आसंदी की व्यवस्था के बाद उन्होंने अंतिम लाईन क्या कहा, आपने सुना । यह माननीय सदस्य के विवेक के ऊपर है । मैं उम्मीद करता हूँ कि जितने चुनकर आये हैं ना वह कल आपके ही समकक्ष वरिष्ठ और विद्वत सदस्य होने वाले हैं । आप भी पहली बार आये थे, बहुत सारे सदस्य पहली बार आये हैं, आप क्या उदाहरण देना चाहते हैं, माननीय सदस्यों के प्रति सम्मान की बात आप नहीं कह सकते । आप ऐसी बातें क्यों करते हैं । सारे उदाहरण, सारी कवितायें, सबको मालूम है । आपके लिए भी कुछ बातें हो सकती है । लेकिन हम आपको कल से सम्मान कर रहे हैं ।जब आसंदी ने

कह दिया, उसको विलोपित कर दिया, आखिरी आपके ऊपर है । सारे सदस्य चाहते हैं, उनके सम्मान को ठेस पहुंचा है । आपको खेद व्यक्त करना चाहिये ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक कविता के माध्यम से उन्होंने राजा और शेर का उदाहरण दिया ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मेरी एक बात सुन लीजिए । आप तो विधान सभा के अध्यक्ष रहे हैं । आपका सबसे ज्यादा सम्मान ।

श्री धरमलाल कौशिक :-मेरी बात को सुन लीजिए ना । मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि चौबे जी इतने उत्तेजित हो रहे हैं । बाकी सदस्य हो जायें तो हो जायें । चौबे जी से ऐसी अपेक्षा नहीं है । ऐसा लग रहा था कि बिल्कुल उसको डांटने के लिए, मेरा यह कहना है माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने एक कविता के माध्यम से यह इंगित किया.......

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\c11\12.45-12.50

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- आप मेरी बात सुन लीजिए। मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि चौबे जी इतने उत्तेजित हो रहे हैं। बाकी सदस्य हो जाएं तो हो जाएं, चौबे जी से तो ऐसी अपेक्षा नहीं है। ऐसा लग रहा था कि बिल्कुल उनको डांटने के लिए हैं। मेरा यह कहना है कि माननीय सदस्य ने एक कविता के माध्यम से जो इंगित किया। उसके बाद जो बात आई कि माननीय सदस्यों ने उस पर आपत्ति जताई। उसके बाद माननीय सदस्य ने कहा कि एक शब्द शेर मैंने कहा है, उसके बाद मैं अपने शब्द वापस ले लिया हूं। आप सबके सामने कहा, आप रिकार्ड में दिखवा लीजिए, उसके बाद विलोपित हो गया तो मुझे लगता है कि यहीं पर वह मामला समाप्त हो गया।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- कोई शब्द वापस नहीं लिया। मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि माननीय चन्द्राकर जी जब मंत्री थे तब भी विवादास्पद रहे हैं और आज भी विवादास्पद हैं। और अगर ये माफी नहीं मांगते हैं तो हम सब विधायक इन्हें माफ करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वास्तव में आप विद्वान हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। आपने एक पंक्ति अभी थोड़ी देर पहले उद्धरित की थी-जाकी रही भावना जैसी प्रभू मूरत देखी तिन तैसी। ये हमारी एक शाश्वत लाईन है। मैंने दिल से माननीय भूपेश बघेल जी के उस भाव की प्रशंसा की थी कि आदमी राजा कैसे बनता है। उस कविता की पंक्ति में एक शब्द आया, भावना की बात है कि उस शब्द को किसने किस तरह से ग्रहण किया पर उसके बाद भी यदि किसी को ठेस लगती है तो वह उनके रूपक को अपने लिए इस्तेमाल करते हैं या अपने लिए सोचते हैं तो भी मैं उसके लिए क्षमा मांगता हूं।

श्री दीपक बैज :- माननीय सदस्य फिर गोल-गोल बात कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे दूसरी बात कहूंगा कि मैं पुराना हो जाउंगा, नया हो जाउंगा, सदस्य की गरिमा, सदस्य की भावना बहुत उच्च बात संसदीय कार्य मंत्री जी ने कही है, बात सही है। पर दो दिन से हम भी पढ़ रहे हैं, 22 निर्वाचित विधायक आये हैं। कहीं ये प्रणाली नहीं है कि शेडो विधायक बनाए जाएं। वेस्ट मिनिस्टर प्रणाली में सिर्फ एक जगह है शेडो मिनिस्ट्री की। वह भी दूसरी जगह कामयाब नहीं है। उस तरह का सोचना, उस तरह का निर्देश देना भी इन विधायकों का अपमान है कि शेडो मिनिस्ट्री बनायेंगे, शेडो विधायक के तौर पर काम करेंगे। आप ऐसा निद्रेश जारी करके विधायकों की गरिमा के बारे में बात मत कीजिए। यदि बात करते हैं तो इस तरह की बात आपके दल के अंदर नहीं होनी चाहिए। ऐसी प्रणाली हिन्दुस्तान में कहीं नहीं रही है। तब विधायकों की गरिमा स्थाति होगी, सिर्फ एक बात से विधायकों की गरिमा स्थापित नहीं होगी।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, इसमें जानवर का भी जिक्र है, उसके बारे में चर्चा कर सकते हैं या नहीं? संसदीय है या नहीं बता दीजिएगा।

समय :
12:49 बजे

अध्यक्षीय व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय :- यद्यपि सदन में माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त किये गये हाव-भाव कार्यवाही का अंग नहीं होते फिर भी कई बार बॉडी लैंग्वेज ऐसा हो जाता है जो शब्दों से ज्यादा भारी होता है, मुझे इस बात पर आपत्ति है। अगर उसमें जानवर का जिक्र है तो आप अभिभाषण के जानवर के बारे मे कह सकते हैं, सदन की ओर इशारा करते हुए जानवरों की बात नहीं कहनी चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)

समय :
12:50 बजे

माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमश:)

अध्यक्ष महोदय :- मैं ऐसा मानता हूं कि जोगी जी आप बहुत अच्छी बात कह रहे थे, बहुत अच्छा भाषण दे रहे थे, पूरे सदन को इस बात को सुनना चाहिए।

श्री अजीत जोगी (मरवाही) :- अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। मुख्यमंत्री जी, ये अनुपूरक बजट है और इसी के आंकड़े मैंने पढ़े हैं। आप चाहे तो मैं ये आपके पास भिजवा दूंगा। उन्होंने कांट्रीडिक्ट किया, आवश्यकता नहीं है लेकिन मैं इस पर तर्क वितर्क नहीं करना चाहता। इसी प्रकार से राज्यपाल के अभिभाषण में कर्जमाफी 6100 करोड़ रूपये की की जायेगी यह उल्लेख है जबकि अनुपूरक बजट में कर्जमाफी का 2700 करोड़ रूपये का उल्लेख है। राज्यपाल महोदय कह रहे हैं कि 6100 करोड़ और अनूपूरक बजट कह रहा है 2700 करोड़ रूपये, इसलिए मेरा निवेदन है। मैं ये कोई क्रिटिसिज्म के नाते

नहीं कह रहा हूं। ये बहुत बड़े आंकड़े नहीं हैं। ..

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\c12\12.50-12.55

श्री अजीत जोगी :- इसलिए मेरा निवेदन है मैं ये कोई क्रिटिसिजन के नाते नहीं कह रहा हूं। ये बहुत बड़े आंकड़ें नहीं हैं। 2, 3 हजार करोड़ 1 लाख करोड़ का हमारा बजट है। 2, 3 हजार करोड़ और दे देने से अगर पूर्ति होती है तो मेरा सुझाव है, निवेदन है कि पूर्ति करनी चाहिए। बल्कि उचित तो ये होगा कि एक किसानों के लिए एक अलग से बजट बना दें ये जितनी आपके घोषणा पत्र में जितने उल्लेख हैं उन सब के लिए लगभग 20 हजार करोड़ मेरे रफली कर्जमाफी के लिए लगेगा और बीमा की राशि पिछली सरकार ने किसानों के साथ बहुत बड़ा धोखा किया। बीमा जबराना उनसे लिया गया उनका प्रीमियम, और जबरिया बीमा के नाम पर 10 हजार करोड़ से अधिक की राशि पिछली सरकार ने वसूल की थी। अब वो सरकार चली गई और इन्हीं कारणों से चली गई। वादा न निभाने के कारण से चली गई। 2100 रूपये और 300 रूपये का जो आश्वासन था, समर्थन मूल्य और बोनस को वो पूरा न करने के कारण चली गई । इसलिए मैं केवल सचेत करने के लिए कह रहा हूं कि अगर वादा किया जाए तो उसे जरूर माफ करना चाहिए। संस्कृत में एक श्लोक है, सेतु बंध रामेश्वरम, गंगा सागर संगमम्, मुच्चते सर्व पापग्रम्, न मुच्चते तू राचस्य कतघ्नता । हमारे भारत में 3 बड़े तीर्थ हैं। सेतु बंध रामेश्वर, गंगा सागर और संगम और मान्यता ये है कि बड़े से बड़ा पाप करके इन तीर्थो में स्नान ध्यान किया जाए, पूजा पाट करें तो उस पाप की क्षमा हो जाती है। पर ये श्लोक ये कहता है कि केवल एक पाप ऐसा है जिसकी क्षमा तीनों तीर्थ मिलकर नहीं कर सकते और वो पाप है कि यदि राजा अपनी प्रजा से कोई वादा करे और उस वादे को पूरा करे तो उस पाप की क्षमा ये तीनों महान तीर्थ भी मिलकर नहीं कर सकते। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो वादा किया गया है वो अवश्य पूरा किया जाए और बीमा की राशि जो 10 हजार करोड़ जबरिया ले ली गई थी उसको ये सरकार वापस कर दें तो उन किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। मैं राज्यपाल के अभिभाषण के अन्य विषयों पर नहीं बोलना चाहता। केवल एक विषय जो सच में मेरे हृदय की अतंर्तम गहराईयों से जुड़ा हुआ है, उस पर बोलना चाहता हूं। मैं ये मानता हूं कि हमारी छत्तीसगढ़ की बर्बादी का, छत्तीसगढ़ भारत का सबसे धनाड्य प्रदेश है। पर यहां का व्यक्ति सबसे गरीब इसलिए है, क्योंकि शराब उसे बर्बाद कर रही है। हममें से कोई भी ऐसा नहीं होगा जिसने अपने गांव में, अपने किसी रिश्तेदार को, अपने किसी पड़ोसी को, अपने गांव वाले को, शराब के कारण बर्बाद होते हुए न देखा हो।

जारी श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\c13\12.55-12.60

जारी श्री अजीत जोगी :- हममें से कोई भी ऐसा नहीं होगा, जिसने अपने गांव में अपने किसी रिश्तेदार, अपने किसी पड़ोसी, अपने गांव वाले को शराब के कारण बर्बाद होते हुए न देखा हो। कितनी बहनें विधवा हो गई, कितने बच्चे अनाथ हो गये और उस सब का कारण शराब है और मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है कि आपने अपने घोषणा पत्र में पूर्ण शराबबंदी का अश्वासन दिया है। मैं इसे कोई मुद्दा बनाकर नहीं कह रहा हूँ। अपनी भावनाओं से जोड़कर कह रहा हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अपने गांव में खुद देखा है गौंटिया दयाल सिंह मेरे साथ प्रायमरी स्कूल में पढ़ते थे, वे लगभग 200 एकड़ के मालिक थे। एक बोतल शराब और एक मुर्गा देकर, लोग उनसे जो खेत चाहे लिखवा लेते थे और हालत ये हुई की बाड़ी भी नहीं बची और वे अपने ही कुंए में शराब पी कर गिरकर मर गये, उनका एक बेटा था, छोटा था, उसको पालने के लिए उसकी मां को यानी मेरी मित्र दयाल सिंह जी की पत्नी को रेजा का काम करना पड़ा। माल गुजार की पत्नी को, 200 एकड़ के मालिक की पत्नी को रेजा का काम करके अपने बच्चे को पालना पड़ा। मैंने उस बच्चे को उस समय कुछ मदद की थी। तो सायकिल के पीछे डबल रोटी बांधकर बेचता था और कुछ कमा लेता था। मेरे मुख्यमंत्री बनने के बाद मैंने 170 (ख) में 30-35 एकड़ जमीन वापस करायी है, जिससे अब वह फिर से लाईन पर आ रहा है। पर जब 200 एकड़ का किसान शराब की लत के कारण भूमिहीन बन सकता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, तखतपुर की विधायिका जी यहां हैं मैंने उनके क्षेत्र में कोई करणकांपा ऐसा गांव है वहां मैंने देखा कि मैं 11-12 बजे दिन को निकल रहा था एक ठेले के सामने बैठकर 10-12 साल की उम्र का बच्चा शराब पी रहा था। जब मेरे ड्रायवर ने कहा कि ये शराब पी रहा है तो मुझे यकीन नहीं हुआ। मैंने गाड़ी रिवर्स करायी फिर वहां गये, ठेले वाले को बुलाया, वह मुझे देखकर घबरा गया और मुझसे कहने लगा कि साहब मैं दारू नहीं बेचा हूँ। मैं तो केवल उसको पाउच और ग्लास दिया हूँ, ये तो दारू लेकर खुद आया था। जब हमारे प्रदेश के 10 साल का बच्चा दारू पी रहा है, जब हमारे प्रदेश के 200 एकड़ का माल गुजार भूमिहीन होकर मर जाता है और जब वर्ष 2003 में हमने सरकार छोड़ी, 15 साल भाजपा का राज्य चला। वर्ष 2003 में जो कंज्म्पशन के आंकड़े थे, 15 सालों में शराब की खपत 15 गुना बढ़ गई। मैं इसे एक साजिश मानता हूँ। हम छत्तीसगढ़ियों के खिलाफ एक साजिश है। हमारा हीरा, सोना, कोयला, लोहा, सीमेंट, एल्युमिनियम, बिजली, हमारे जंगल के सागौन के पेड़, हमारा धान का कटोरा, साजिशकर्त्ता ये चाहते हैं मैं नाम नहीं लेना चाहता। पर निहित स्वार्थ है वह यह चाहता है कि छत्तीसगढ़ शराब में डूबा रहे, 10 साल का बच्चा पी रहा है तो ये आने वाली पीढ़ी पूरी पी रही है और पीकर मस्त रहे, हम उनका हीरा, सोना, लोहा, कोयला लूटकर ले जाएं आज भी हो रहा है। हमारा कोयला जो जा रहा है, उसमें हमको आधी रायल्टी मिलती है लोहा, खनिज जो जा रहा है, उसमें भी चोरी है और हम कुछ नहीं करते ......

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\c14\01.00-01.5

पूर्व जारी .. श्री अजीत जोगी :- हम कुछ नहीं करते, हम कुछ नहीं बोल पाते, हम आंदोलन नहीं कर पाते, हम रोक नहीं पाते। आज तो कम से कम बोलने के लिए आपने मुझे अवसर दिया और अजीत जोगी इस विषय पर भावनात्मक रूप से बोल रहा है। मैं इंकार नहीं करता, आप जानते हैं। मैंने भी शराब पी है, आदिवासी गांव है, हमारे गांव में सब पीते थे तो हम भी पीये और काफी समय तक पीये। हम एक बार विदेश यात्रा में गये थे, सबको नहीं बताना चाहूंगा, एक बड़ी विभूति यहां हैं, उनके साथ गये थे, वहां भी हम लोग पीये। पर जब ज्ञान हो गया कि अजीत जोगी अगर जिंदगी में कुछ बनना है तो इस लत से तुम्हें अलग होना पड़ेगा। इसलिए मैं निवेदन कर रहा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय जोगी जी, आप विदेश तो कुछ बनने के बाद गये थे।

श्री अजीत जोगी :- वह आपको बाद में अलग से लॉबी में बताऊंगा हमारे साथ में कौन थे और उनको चालू कराने का श्रेय मेरा है। (हंसी) जब ये आपके घोषणा पत्र में है, जब ये आपका आश्वासन है और आप स्वत: जानते हैं इस प्रदेश की महिलाओं ने आपको झारा-झार वोट दिया है, इस आशा में दिया है कि आप शराबबंदी कर देंगे। क्योकि शराब से सबसे ज्यादा तकलीफ महिला को होती है। रोज शराब पीकर आयेगा, गाली देगा, मारेगा, पीटेगा, बच्चे को लात मारेगा। जितना कमाता है, 150 रुपये कमायेगा, उसमें 50 रुपये की दारू पी लेगा, 70 रुपये की चेपटी मिलती है, वह पी लेगा। आधा तो दारू में खर्च कर देता है और आधे में अपनी पत्नी से कहता है कि तु घर चला, इसी में भोजन करा, इसी में दवाई ला, इसी में बच्चों को स्कूल भेज। न जानें कितनी महिलायें विधवा हो गईं, न जाने कितने बच्चे अनाथ हो गये। इसलिए मेरा आपसे करबद्ध निवेदन है कि आपने जो इस आश्वासन के विरोध में अधिसूचना जारी की है, आपने 26 दिसंबर 2008 को शराब की नई विदेश ब्रान्ड के पंजीयन का आदेश निकाला है और 10 जनवरी तक समय सीमा निर्धारित की है। इसका मतलब ये है कि फिर से ठेकेदारी चलेगी। मैं फिर से हाथ जोड़कर निवेदन कर रहा हूं, मैं इसे मुद्दा बनाकर निवेदन नहीं कर रहा हूं। यदि छत्तीसगढ़ को सच में बचाना है तो हम सब लोग एकमत होकर कड़ा दिल करके इसको करें, इसमें कितना रेवेन्यू मिलता है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब समाप्त कर दीजिए।

श्री अजीत जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा का पालन होगा। मेरा निवेदन यह है कि इस पर पुनर्विचार करिये और शराबबंदी करिये। प्रदेश के कोटि-कोटि लोगों का आशीर्वाद मिलेगा। चूंकि आपने कहा है समाप्त करें तो मैं केवल अपने स्वार्थ की बात करना चाहता हूं। आपके मुख्यमंत्री बनने के बाद में जब मैं और मेरी पत्नी आपसे मिले थे, पेन्ड्रा, गौरैला,.... (जारी)...

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\c15\01.05-01.10

जारी..........श्री अजीत जोगी :- लोगों का आशीर्वाद मिलेगा । एक-दो बात चूंकि आपने कहा है कि समाप्त करें तो मैं केवल अपने स्वार्थ की बात कहना चाहता हूं कि जब आपके मुख्यमंत्री बनने के बाद मैं और मेरी पत्नी आपसे मिले थे तो पेण्ड्रा, गौरेला और मरवाही को जिला बनाने का अनुरोध किया था, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी को और आपने आश्वासन दिया था कि आप जिले बनायेंगे तो मैं फिर से याद दिला रहा हूं वह एक व्यक्तिगत मांग है और दूसरी कष्टदायी बात यह है, मैं आपके ध्यान में ला रहा हूं कि मनरेगा में ज्यादातर स्थानों पर साल-साल, दो-दो सालों से पेमेण्ट नहीं हुआ है, मैं मनरेगा का एक कमर्शियल ऑडिट देख रहा था, डॉयरेक्टर सोशल ऑडिट मनरेगा की रिपोर्ट जिसके अनुसार 128 करोड़ का मजदूरी भुगतान शेष है । कहीं से मिले, न मिले, 128 करोड़ आपके लिये बड़ी राशि नहीं है । 128 करोड़ दे दीजिये, साल-साल, 2-2 साल, 3-3 साल कहीं मनरेगा का पेमेण्ट नहीं हुआ है वह हो जायेगा उसी तरह से जो शौचालय बने हैं, दबाव डालकर या सरपंच पर दबाव डालकर, बिना पैसा दिये बेचारों से शौचालय तो बनवा लिये पर उसका भी भुगतान नहीं हुआ है वह भुगतान भी कर दें ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये पर्याप्त समय दिया । मैं अपनी बात कह सका इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं । धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदया जी के अभिभाषण पर श्री अमरजीत जी के प्रस्ताव पर मैं उसके समर्थन में अपनी बात रखना चाहता हूं । सबने कबीर दोहे की परंपरा की शुरूआत की है तो मैं भी चाहूंगा कि कबीर के पंक्ति से अपने भाषण की शुरूआत करूं - कबीरा कुंआ एक है, पनिहारिन कई एक । न्यारे-न्यारे घट लिये पर भी पानी एक ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जहां तक सोचता हूं कि सबका उद्देश्य होगा कि छत्तीसगढ़ की गौरवशाली गरिमा को बचाने के लिये और एक अच्छा छत्तीसगढ़ बनाने की कल्पना होगी । संस्कृति-परंपरा और अस्मिता से जुड़ी छत्तीसगढ़ की गरिमामयी विरासत का सम्मान करते हुए जनहित कल्याणकारी योजना के साथ हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी कुशल नेतृत्व के धनी, जीवटता, कटिबद्धता रखने वाले, तेजतर्रार, जुझारू, कर्मठ नेता ऐसे नेता के साथ हमारे मंत्रिमण्डल के पूरे सहयोगी साथी लगातार 15 साल भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में उनके विभागों में लगे वॉयरस को निश्चित रूप से अपडेट करने में कामयाब होंगे, ऐसा मैं मानता हूं । डॉ. रमन सिंह जी का एंटीवॉयरस उसको खत्म करने में कभी काम नहीं आया । जहां तक निश्चित रूप से मुझे पूरा विश्वास है कि पूरे विभाग को अपडेट करने में थोड़ा टाईम लगता है । सारे लोग बोल रहे थे कि इस बजट में कुछ नहीं है, इस बजट में पूरे मांगों का घोषणा-पत्र में कहीं उल्लेख नहीं है तो एक समय लगता है किसी चीज को अपडेट करने में तो मैं निश्चित विश्वास करता हूं कि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी के पूरे नेतृत्व में पूरा काम होगा, मुझे ऐसा विश्वास है । जिस प्रकार से नई सरकार का गठन होते ही उसी दिन 17 दिसम्बर, 2018 को मंत्रिपरिषद की पहली बैठक 16 लाख 65,000 से अधिक किसानों की 6 हजार 100 करोड़ से अधिक

अल्पकालीन ऋण को माफ करने का निर्णय, 10 दिन के अंदर 1248 करोड़ रूपये की राशि 3 लाख 57 हजार किसानों के खाते में जमा । इस प्रकार से एक उद्देश्य को अपने कम समय में और अपने वायदे के समय में करना निश्चित रूप से उनकी कार्यक्षमता को प्रदर्शित करता है । मैं एक बात कहना चाहूंगा । अभी शुरूआती तौर पर सभी ने भावनात्मक रूप से अपनी बातें रखी ।............जारी

.............श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\c16\01.10-01.15

जारी.........................श्री दलेश्वर साहू :-मैं एक बात कहना चाहूंगा कि अभी शुरूआती तौर पर भावनात्मक रूप से सभी ने अपनी बात रखी । यदि आप किसी भी पढ़े लिखे मां-बाप से पूछिएगा, चाहे वह 12वीं पास हो या कॉलेज पढ़ी हुई लड़की हो । वे मां-आप अपनी बेटी का विवाह किसके साथ करेंगे इसके लिए मैं तीन ऑप्शन देता हूं । उस लड़की को तीन ऑप्शन देते हैं और उससे पूछें कि वह कौन सा वर पसंद करेगी ? पहला वर - एक किसान का बेटा। दूसरा वर - नौकरी करने वाला बेटा और तीसरा वर - धंधा करने वाला बेटा । या सर्वे करवा लीजिएगा, जिस तरह कौन बनेगा मुख्यमंत्री के अंतर्गत तीन लोगों का सर्वे होता है । मैं दावे के साथ कह रहा हूं कि उस लड़की के मां-बाप या वह लड़की स्वयं तीनों में किसे अपने लिए योग्य वर स्वीकारेगी । इससे आपको पता चल जाएगा कि 15 सालों में उनकी भावना के अनुरूप किस प्रकार का वातावरण बना है। मुझे लगता है कि वह लड़की या उसके मां-बाप किसान के बेटे को कभी अपना वर स्वीकार नहीं करेंगे । यहां तक की स्थिति आ गई है कि आज की तारीख में वे नौकरी वाले को ही पसंद करते हैं, यदि नौकरी करने वाले नहीं मिलते तो धंधा करने वाले को पसंद करते हैं । लेकिन आज की तारीख में किसी भी तरह से किसान के बेटे को वह अपना वर नहीं बनाना चाहती और मां-बाप अपना दामाद नहीं बनाना चाहते । आज ऐसी स्थिति के पीछे क्या कारण है ? 15 सालों तक किसानों का हित नहीं होने के कारण ऐसा हुआ है । आज माननीय भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में काम प्रारंभ हुआ है ।

समय :
1:12 बजे **(सभापति महोदय (श्री अमरजीत भगत) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय, राज्यपाल जी के अभिभाषण में लिखा है कि गढबो नवा अंजोर, गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ । परिकल्पना बहुत अच्छी है । मुझे पूरा विश्वास है कि गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ को एक नया आयाम मिलेगा । नये छत्तीसगढ़ की रचना होगी और उनका पूरा मंत्रिमंडल इसमें लगेगा । कहीं न कहीं कुछ विभागों में हम लोगों को, लिए गए निर्णयों के अलवा भी अन्य योजनओं से लाभ लेना पड़ेगा ।

जैसे कि किसानों का 10 करोड़ से अधिक के अल्पकालिक ऋण की माफी 10 दिनों के अंदर हुई । 2500 रूपए क्विटल के दर से धान खरीदी का निर्णय लेना । 2013 में झीरम घाटी में घटित, दुर्भाग्यपूर्ण घटना की जांच के लिए एसआईटी का गठन । लोहंडीगुड़ा में एक दशक से टाटा इस्पात द्वारा ली गई जमीनों को वापस दिलाना । ये कितना गरिमापूर्ण निर्णय हमारे आदरणीय भूपेश बघेल जी द्वारा लिया गया है, हम इसका सम्मान करते हैं । छोटे भू-खंडधारी, मध्यम तथा कमजोर तबकों के लोगों को उनके छोटे आकार के भूखंड की खरीदी-बिक्री को लेकर अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था । उनकी समस्या का निराकरण करना । प्रदेश में अनेक गृहस्थ और छोटे निवेशक चिटफंड कम्पनियों के जाल में फंस गए थे । जिनमें राज्य के अनेक युवा भी हैं जो रोजगार के लिए चिटफंड के कुचक्र में फंस गए थे । उनके पैसों को वापस दिलाना । ये कितना अच्छा निर्णय है । उनकी ज़िंदगी खराब हो चुकी थी । वे आत्महत्या करने में लगे हुए थे । ऐसे निर्णय के लिए भी मैं माननीय भूपेश बघेल जी का आभार मानता हूं कि उन्होंने एक अच्छा काम करने की कोशिश की । नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी से गांव के समग्र विकास की अवधारण कितनी अच्छी है । नरवा, गरूवा, घुरवा ये छत्तीसगढ़ का कितना बढ़िया शब्द है, उन शब्दों के बारे में उल्लेख करते हुए । जिस आदमी को शब्द का ज्ञान होगा ....

---जारी- श्री ठाकुर-

ठाकुर\09-01-2019\c17\01.15-01.20

.......जारी श्री दलेश्वर साहू :- जिस आदमी को शब्द का ज्ञान होगा तभी वो पीड़ा को समझ सकता है। मां जन्म लेती है अपने बच्चे को तो वो उनके जन्म के समय में जो उनका पीड़ा है वो मां ही जानती है और दूसरा नहीं जानता। जो खेती किसानी करने वाले लोग है अगर उसका कमांड अगर शासन में हो तो मैं सोचता हूं कि शायद वही पीड़ा को समझ सकते हैं। तो आदरणीय भूपेश बघेल जी निश्चित रूप से किसान हैं। किसान का बेटा है। उन्होंने उन्हें समझने का प्रयास किया और बहुत छोटे-छोटे किसानों का जो दर्द है तो ये उनकी जो बात आयी है शायद नरवा, गरवा, घुरवा ये कितना बढ़िया शब्द का उल्लेख करते हुए उनकी जो सोच है जो जमीन स्तर पर जो किसानों के जीवन-व्यापन कैसे हो सकता है इस पर विचार करते हुए उनके निर्णय को मैं ह्रदय से आभार मानता हूं। छोटे-छोटे बाड़ी, बाड़ियों में किसान अपने नल के पानी से कुआं के पानी से उनका बाड़ी का उद्धार उन्होंने करने का प्रयास उस बहुत अंतिम छोर तक उनका जो सोच है उनका भी निर्णय बहुत ऐतिहासिक रहा है और हमारे इस निर्णय को भी हम कृतज्ञता आभार मानते हैं। तेंदूपत्ता संग्रहण 2500 रूपए से बढ़ाकर 4000 हजार के निर्णय को भी एक अच्छा निर्णय है। इससे आदिवासी भाइयों का जीवन-व्यापन उठने में उनको अच्छा लगेगा। इसी प्रकार से जहां तक जल संसाधन हमारे रविन्द्र चौबे जी के में है मुझे 5 साल का जो अनुभव है और हम लोग माननीय धनस पटले जी के साथ जल संसाधन मंत्री रहे हैं उनके साथ भी हम लोगों को सीखने का अवसर मिला और कुछ चीजों को उन्होंने नहीं कर पाया और हमने बृजमोहन

अग्रवाल जी को भी इस सदन में बोलते बोलते कलप कलप कर भी बोलते थे कि इस पर आपका ध्यान जाना चाहिए। उनने भी जरूर प्रमुख सचिव को बोलते थे। हां में हां मिला देते थे पर कहीं भी ऐसा उसका परिणाम देखने को नहीं मिला। एक आदरणीय बड़े भैय्या आपके विभाग में एक छोटा सा विभाग है वो जो गांव में ट्यूबवेल जो है कम से कम राजनांदगांव जिला शायद आपकी विधानसभा में होगा कि आपके ही विभाग ने गांव में एक ट्यूबवेल संचालित करता है। ट्यूबवेल जो शासन पैसा पटाता है और वो ट्यूबवेल के माध्यम से 10 एकड़, 5 एकड़ ऐसा एक समूह के हिसाब से। मेरे गांव में भी दो ट्यूबवेल है आपके विभाग का। और ये बहुत पुरानी योजना है। आज तक के वो कभी उसको जीर्णोद्धार के लिए, पंप हाउस इतना जर्जर हो चुका है और सिंचाई आज भी हो रहा है और आज भी वो इतना बढ़िया स्कीम है उन पर कहीं न कहीं मैंने लगातार 10-15 साल से इस पर लगा रहा । इतना कभी उनमें ध्यान नहीं गया तो मैं आपसे निवेदन और करबद्ध प्रार्थना करना चाहूंगा कि ऐसे छोटे-छोटे चीजों को जो किसान से जीवन उठने का जो एक हिस्सा है उस पर विचार करेंगे और पंप हाउस इतना बिगड़ा, कहीं पेड़ में मीटर को लगा दिया गया है तो कभी स्टाटर को कभी किसी खंबे में लगा दिया तो पंप हाउस पूरा खराब हो गया है। उसका पाइपलाइन बिगड़ा हुआ है। ये ऐसी चीजों पर मैं ध्यान आकर्षण करना चाहूंगा और मुझे विश्वास है। एक दूसरा एक और बढ़िया एक कल्प वृक्ष करके एक योजना थी उसमें शासन ने कभी ध्यान नहीं दिया। कल्प वृक्ष के अंतर्गत एक एनीकट बनता था नदियों में और नदी के किनारे-किनारे तीन विभाग इसमें काम करते थे। सिंचाई विभाग पैसा देता था। कृषि विभाग उसके साथ संलग्न रहते थे विद्यत विभाग तीनों टीम मिलाकर गांव-गांव में जितने भी नदी नाला हैं उसके किनारे विद्युतीकरण करके छोटे-छोटे किसान अपने पंप के माध्यम से विद्युत पंप के माध्यम से उसमें सिंचाई करते थे। तो वो अधूरा का अधूरा पड़ गया। डॉ. रमन सिंह की सरकार भी उन पर ध्यान नहीं दिया और वहीं के वहीं रूका रहा। ये मैं सोचता हूं कि ये भी बहुत स्कीम है इस पर भी आप विचार करेंगे और उसको गति देने का प्रयास करेंगे तो शायद अच्छा लगे। उस योजना का नाम था कल्प वृक्ष। उसमें एनीकट भी बन जाता था और विद्युतीकरण करने के लिए आपको पर्याप्त पैसा भी मिलता था।

सभापति महोदयः- दलेश्वर जी समाप्त करें।

श्री दलेश्वर साहू :- बस एक दो बात। ये आपदा प्रबंधन की राशि राजस्व विभाग मैंने 5 साल तक केन्द्रीय गवर्नमेंट का भी कुछ अंश रहता है उसमें राज्य का अंश भी रहता है। कभी मैंने उस निर्देश का पालन होते नहीं देखा। पैसा आबंटन कलेक्टर के पास भी चले जाता था।

........जारी श्री अरविंद

.......जारी श्री दलेश्वर साहू :- पैसा आवंटन होने के बाद कलेक्टर के पास भी चला जाता था। परन्तु विधिवत निचले स्तर तक जो निर्देश है, उसका पालन करके सुधारने का कार्य है, वह नहीं होता था। जो आपदा से क्षति पहुंच निर्माण कार्य हो, उसके टूटने-फूटने, विद्युतीकरण में सुधार करने का, सामुदायिक भवन के सुधार करने का कार्य, पानी बाढ़ से कुछ क्षतिग्रस्त हो जाता था, ऐसे का सुधार करवाने का उसका नियम ही है। आपदा प्रबंधन की राशि के यूटीलाईजेशन का काम 5 साल तक कभी भी नहीं देखा। वहां माननीय मुख्यमंत्री जी बैठकर निर्णय करते थे, अपने मनपसंद, जहां नही होना चाहिए था, वहां जाकर वह खर्च होता था। पहले शुरूआती तौर पर हुआ, लेकिन उसके बाद धीरे-धीरे भवन बनाना या नये निर्माण कार्य में ही पैसे को लगा दिया गया।

माननीयय सभापति महोदय, दूसरा, एक पर्यटन संस्कृति विभाग की बात है। जो पीड़ा है, मैं उसको बोलना चाह रहा हूँ। श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने पर्यटन विभाग हेतु प्रदेश में मोटल बना। लेकिन आज देखिये कि उसकी हालत खराब है। उसका कहीं मेन्टेनेन्स नहीं है, कुछ नहीं है। ऐसी चीजों को आप निजीकरण में दे दीजिये। टूरिजम डिपार्टमेंट उसको नहीं कर सकता है। आप उसको किसी प्रायेवट कंपनी को देकर उनसे रेवेन्यु ले और और ऐसे चीजों का सौंप दे। उसमें करोड़ों रूपये खर्च हुए हैं। मैं सोचता हूँ कि हर जिले में वह कंडम पड़ा हुआ है। वह मोटल बेहतरीन लगता है। तो यह टूरिजम डिपार्टमेंट के बस की बात नहीं है। ऐसे चीजों मे सुधार कर किसी प्रायवेट को दें। उससे सरकार को रेवेन्यु मिले, तो शायद यह सार्थक होगा।

माननीय सभापति महोदय, दूसरा, संस्कृति विभाग के पैसे का बहुत दुरूपयोग हुआ है। कलाकारों को दो साल, चार साल से पेमेन्ट नहीं मिल रहा है।

सभापति महोदय :- दलेश्वर जी, समाप्त करिये।

श्री दलेश्वर साहू :- बस, कलाकारों के हित का मामला है। कलाकारों का कभी पेमेन्ट नहीं हुआ। हमारे बृजमोहन अग्रवाल पैसे से रामकथा कराते थे। उस पैसे का उपयोग किसी महापंडित को बुलाकर, किसी महामण्डलेश्वर को बुलाकर सत्यनारायण का कथा कराते थे। पैसों का ऐसे दुरूपयोग हुआ है, उसमें जांच होना चाहिए। पैसों का दुरूपयोग, कैसे प्रभावित कर सके, कैसे चुनाव जीता जा सके, जो दो-तीन सालों में पैसों का दुरूपयोग हुआ है, संस्कृति विभाग का पैसा, बाप रे, बाप रे। तो ऐसी चीजों पर अंकुश लगेगा। हमारा मंत्रिमण्डल पूरा सक्षम है और मुझे पूरा विश्वास है, आज मुझे राज्यपाल जी के अभिभाषण पर परिचर्चा में भाग लेने का अवसर मिला, कुछ बोलने का अवसर मिला, मैं आपको धन्यवाद देते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

सदन को सूचना

सभापति महोदय :- आज भोजन अवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूँ कि सभा सहमत है। भोजन की व्यवस्था माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करे। डॉ0 रमन सिंह जी।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

डॉ0 रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है।, कल से आज दो दिन की चर्चा में प्रथम अनुपूरक पर बातचीत और अभिभाषण पर चर्चा हो रही है। बड़ी उम्मीद के साथ अभिभाषण पर उल्लेखित विषयों को हम लोगों ने देखा। पहले ही बिन्दु में यह तय हो गया कि सरकार के कथनी और करनी में कितना बड़ा फर्क हो सकता है, यह अभिभाषण देने के बाद, पढ़ने के बाद और प्रथम अनुपूरक आने के बाद उनके सारे बिन्दुओं को हमने बड़े ध्यान से देखा। ऐसा लगा कि सरकार की नीति विषयक विषयों में सरकार की कम से कम सहमति और स्वीकृति तो दिखेगी। कम से कम सरकार की इच्छाशक्ति तो दिखेगी। मैं नहीं कहता कि सब काम पहले इस अभिभाषण में हो सकता है। परन्तु इच्छाशक्ति दिखाने की शुरूआत तो हो सकती थी। बडे-बड़े वायदे, बड़े-बड़े विश्वास सरकार ने जनता के बीच दिखाये। यदि हम इसे राज्यपाल के अभिभाषण को मानते हैं, यह नीतिगत दस्तावेज है, उस 16 पेज के दस्तावेज की शुरूआत को हम लोग पढ़ रहे थे। इस दस्तावेज को देखने के बाद आश्चर्य हुआ। इस दस्तावेज को देखने के पहले प्रथम अनुपूरक में उसकी परिणिति देखने का अवसर मिला। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि दो बिन्दु घोषणा-पत्र के, जिसको गंभीरता से लिया गया है, उसके सिवाय बाकी किसी बिन्दुओं का न तो जिक्र है ।

..........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\c19\1.25-30

समय :
1:26 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)

जारी...डॉ. रमन सिंह :- घोषणा-पत्र के दो बिन्दु, जिसको गंभीरता से लिया गया, उसके सिवाय बाकी किसी बिन्दुओं का जिक्र नहीं है, पूरे का पूरा घोषणा-पत्र देखने के बाद मुझे लगा कि योजना और योजना के क्रियान्वयन की दिशा तय होती है । हम ये नहीं कहते कि पूरे के पूरा बजट का प्रावधान उसमें रहे, मगर उसके क्रियान्वयन की दिशा रोड में तय होती है, नीतिगत फैसले होते हैं और फैसले के क्रियान्वयन के लिए 5 साल की कार्य योजना रहती है कि हम 5 साल में कैसे इसका क्रियान्वयन करेंगे तो कम से कम उस रोड मैप की शुरूआत राज्यपाल के अभिभाषण में परिलक्षित होती, राज्यपाल के अभिभाषण में वह रोड मैप दिखता तो इधर बैठे हुए लोगों को संतुष्टि मिलती और यहां बैठे हुए लोगों

को, जिन्होंने बड़े-बड़े वादे और विश्वास करके आये, मुझे लगता है कि घोषणा-पत्र के लिए कार्ययोजना और कार्ययोजना का क्रियान्वयन और क्रियान्वयन की जो कमी दिख रही है, मुझे इस बात के लिए निश्चित रूप से जिन योजनाओं को इस पूरे बजट के दौरान हमने जब प्रथम अनुपूरक को देखा, एक-एक पन्ने को देखने का अवसर मिला, मगर मुझे लगता है कि जो बड़े वायदे किये थे, उन्हीं दो बिन्दुओं पर मैं विशेष रूप से कहना चाहूंगा । बहुत सारे विषय में बोलने की जरूरत नहीं समझता, मगर दो विषय जो सरकार के लिए आने वाले समय में सबसे बड़ी चुनौती होगी और मुझे बड़ा आश्चर्य होता है, सरकार बनने के बाद 15 साल में सरकार ने जो नीति बनाई थी, जो कार्यक्रम बनाए थे, जो क्रियान्वयन बनाये थे, इस राज्यपाल के अभिभाषण में उस विषय को गंभीरता से छुआ नहीं गया है । इस देश की और इस प्रदेश की सबसे बड़ी समस्या यदि कोई है तो वह नक्सलवाद है। नक्सलवाद को लेकर 15 साल नहीं, 40 साल से प्रदेश और देश जल रहा है, जूझ रहा है । आज झीरम की बात आती है तो आंख से आंसू निकलते हैं, आज राजनांदगांव की घटना की याद आती है तो एस.पी. सहित 24 जवानों को याद करते हैं । उसके पीड़ा हमारे मन में होती है । नक्सलवाद को कितनी गंभीरता से लिया गया है । नक्सलवाद के विषय को किस दिशा में ले जाने की बात हुई है, ये स्टेटमेंट बार-बार पेपर में आता है । अजीब लगता है । मेरे जैसा व्यक्ति जो 15 साल तक बस्तर की गलियों में घूमते-घूमते दंतेवाड़ा से लेकर एक-एक गांव में जाते हुए मैंने देखा, वहां के लोगों का आत्मविश्वास बढ़ाना, वहां के लोगों को जमीन में खड़ा करना हमारे लिए कितनी बड़ी चुनौती थी । इन 15 सालों में उनको जमीन पर लाकर उनके अंदर आत्मविश्वास पैदा किया, आज वहां एजुकेशन हब बन रहे हैं, वहां शिक्षा के संस्थान् बन रहे हैं, सड़कों का जाल बिछाने का काम हो रहा है, पुल-पुलिए बन रहे हैं, विद्युतीकरण का काम हो रहा है । मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि नक्सलवाद पर यदि आपको समुचित निर्णय लेना है, समुचित विचार करना है तो एकतरफा निर्णय लेने की जरूरत नहीं है, विपक्ष के लोगों के साथ बात करके, बैठकर और देश की जो रणनीति चल रही है, उसकी भागीदारी होनी चाहिए । नक्सलवाद के नासूर को जड़ से समाप्त करने के लिए प्रबल इच्छा शक्ति चाहिए, एक मजबूत ताकत चाहिए, इस प्रदेश को, देश को, इस डेमोक्रेसी को बचाना है, ये कोई छत्तीसगढ़ की राजनीतिक लड़ाई नहीं है कि डा. रमन हार गया और भूपेश और रविन्द्र चौबे जीत गए, इससे फर्क नहीं पड़ता । पीढ़िया आएंगी, पीढ़िया चली जाएंगी, पर इन पीढ़िया के ऊपर की लड़ाई है । इस देश की, इस प्रजातंत्र की इस डेमोक्रेसी की सबसे बड़ी लड़ाई आज छत्तीसगढ़ लड़ रहा है । पूरे हिन्दुस्तान का और हिन्दुस्तान का सबसे सेन्टर प्वाइंट, केन्द्र बिन्दु अगर कोई है तो वह छत्तीसगढ़ है और छत्तीसगढ़ में सबसे केन्द्र बिन्दु है तो वह बस्तर का भू भाग है, जो उस पीड़ा को झेल रहा है, उस पीड़ा से बचाना है ।

अध्यक्ष महोदय, एक बयान आता है कि हम बातचीत करेंगे । गोली का जवाब गोली से दिया जाएगा । गले लगाइए, गले लगाने का विरोध नहीं है, डा. रमन बातचीत करने का विरोध नहीं करता,

मगर स्पष्ट रूप में ये बात मैं आज इस सभा में कहना चाहता हूं कि यदि नक्सलवाद की नीतियों में परिवर्तन होगा तो 50 साल के लिए इस देश को भुगतना पड़ेगा, यह छत्तीसगढ़ की बीमारी नहीं है, ये दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर, कोंटा के लोग जो इस पीड़ा को झेल रहे हैं, रायपुर में बैठकर उस पीड़ा को नहीं झेला जा सकता । यदि रायपुर को, छत्तीसगढ़ को, देश को बचाना है तो पूरे हिम्मत के साथ सामने आना चाहिए और स्पष्ट नीति के साथ आना चाहिए, जो नक्सलवाद और आतंकवाद के खिलाफ जो हिंसा करता है, हम सीधी लड़ाई लड़ेंगे और जड़-मूल से समाप्त करेंगे, विकास के काम करेंगे । बातचीत के लिए कौन आया है । पिछले 50 साल में कौन सा पोलित ब्यूरों का मेम्बर बातचीत के लिए आया है, कौन सा ऐसा फोरम है, जो बातचीत करने के लिए लोग सामने आते हैं, कौन ऐसा मंच है, जो आजतक 50 साल में बात किया, सिर्फ समय काटने के लिए, बड़ी-बड़ी बातें करने के लिए लोग........

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\d10\01.30-01.35

जारी....डॉ.रमन सिंह :- कौन ऐसा मंच है जो 50 सालों में या सिर्फ समय काटने के लिए बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोग, सिर्फ समय और आपको भुलावे में रखने वाले लोग, नक्सल यदि आंदोलन है, नक्सल हिंसा पर आंदोलन करने वाले लोग, मैं पेपरों में पढता हूँ, कई लोग दिल्ली से आकर कहते हैं, वह हमारे क्रांतिकारी साथी है, उनको क्रांतिकारी साथी कहते हो, इसमें हमको शर्म नहीं आती, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के माटी के सपूतों को हमारे अपने लोगों को गोलियों से भुना था । हमारे हजारों लोगों को मारने वाले लोगों को यदि हम क्रांतिकारी एवं शहीद कहेंगे तो बस्तर का क्या होगा ? इस नक्सल आंदोलन का क्या होगा ? इसलिए पहले लाईन पर मैं सचेत करना चाहता हूँ कि यह समस्या छोटी समस्या नहीं है, इसके लिए लान्ग टर्न स्ट्रेटेजी बनाकर, लंबी समय की कार्ययोजना बनाकर, इसके क्रियान्वयन के लिए हमें एक-एक कदम बढ़ाने की जरूरत है । नक्सलवाद के लिए डेवलपमेंट जरूरी है। सरगुजा का एक हिस्सा और बस्तर का पूरा हिस्सा, नकसलवाद से मैं जानता हूँ, वर्ष 2003 से इस पीड़ा को देखा है । आज मैं गौरव के साथ कह सकता हूँ कि वर्ष 2003 से आते-आते सरगुजा को नक्सलवाद की समस्या से पूर्ण शांति की ओर बढ़ाने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार की नीतियों को है । बस्तर में आज दावे के साथ कह सकता हूँ, हमने उनको काफी पीछे खदेड़ा है । पीछे खदेड़ने के पीछे जो काम है, वहां पर स्कूलों के जाल बिछाने का काम, वहां पर एजूकेशन हब बनाने का काम, वहां प्रधानमंत्री आते हैं, वहां राष्ट्रपति आते हैं, वहां केन्द्रीय मंत्री आते हैं, मैं तो सभी मंत्रियों से आग्रह करूंगा, जितने 11-12 मंत्री बने हैं, आपका पहला विजिट यदि होना चाहिये तो दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, नारायणपुर के गलियों में होना चाहिये । आत्मविश्वास बढ़ाना है तो वहां मंत्रिमण्डल की बैठक वहां होनी चाहिये । हम लोग लगातार मुख्यमंत्री के नाते जितना वहां के स्थानीय लोग नहीं गये, डॉ.रमन गया, इसी से आत्मविश्वास बढ़ता है । यह तय होना चाहिये। मंत्रिमण्डल के एक-एक साथी को, स्पीकर साहब आपसे

भी आग्रह करूंगा, मैं भी आपके साथ चलूंगा, हम सब मिलकर वहां एक वातावरण का निर्माण करें, यह दल की बात नहीं है, यह राजनीति की बात नहीं है । राजनीति से उठकर देश के लिए और इसके लिए आज राज्यपाल का इस पवित्र अभिभाषण पर चर्चा कर रहे हैं, शुरूआत इसी बात से होना चाहिये, डेवलपमेंट तो होगा, मगर विकास तब तक अधूरा है, जब तक शांति है । विकास इस छत्तीसगढ़ में तब तक अधूरा रहेगा, जब तक हम बस्तर को बेहतर तरीके से रास्ते पर नहीं ला सकते । इसलिए इस अभिभाषण की शुरूआत में सचेत करना चाहता हूँ कि इस मुददे को लेकर गंभीरता के साथ बैठकर हमको बातचीत करनी चाहिये और इस बातचीत के साथ हम इसके लिए स्पष्ट रणनीति बनायें । कठोरतापूर्वक काम करने के लिए तय करें, वहां जाने की आदत डालें, जाना पड़ेगा । वहां जाये बिना वहां के लोगों का विश्वास नहीं जीता जा सकता और वोट लिया जा सकता है । चुनाव जीता जा सकता है, मगर दिल जीतने के लिए वहां पर जाना पड़ेगा । उनको गले लगाने की जरूरत होगी, इसके लिए डॉ.रमन भी तैयार है । मैं भी जाता रहूंगा, मैंने उनको कहा भी है, चुनाव में सरकार किसी की रहे, मगर हम वहां की नीति से और वहां के लोगों से सहमत हैं तो डॉ. रमन हमेंशा वहां पहुंचता रहेगा और सभी हमारे मंत्रीगण पहुंचते रहे हैं । दूसरी विषय, जिस विषय को लेकर राजनीतिक दृष्टि से बहुत बहस होती है और जोगी जी ने बहुत भावनात्मक भाषण दिया.......।

श्री अमरजीत भगत :- हमारे एक मंत्री वहीं रहते हैं, कवासी लखमा जी बस्तर में रहते हैं, वहीं से वह आते हैं ।

श्री दीपक बैज :- आज भी वह बाई रूट आते हैं ।

डॉ.रमन सिंह :- कवासी की हालचाल आप ज्यादा जानते हो, ये ज्यादा जानते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मोटर सायकल भागने के लिए खाली कवासी को मिली थी ।

श्री दीपक बैज :- मोटर सायकल से घूमने के लिए पहले उधर भी मिली थी ।

डॉ.रमन सिंह :- दूसरा विषय जिसके ऊपर चर्चा हो रही थी । नक्सल नीति के साथ-साथ दूसरे विषय जिस पर बात करना चाहता हूँ । यह दल की सीमा से हटकर कहना चाहता हूँ कि हमने शराब नीति के विषय पर स्पष्ट अपना मत रखा । हमने शराबबंदी केविषय में क्रमबद्ध आगे बढ़ने का प्रयास किया । नीति बनाई, उसका क्रियान्वयन किया । पहले पांच सौ, हजार, डेढ़ हजार और ढ़ाई हजार आबादी वाले गांवों में शराब को बंद करने का काम किया । मुझे लगता है कि किसी राजनीतिक दल ने यह इच्छाशक्ति दिखाई है, जिसकी वजह से उसको जनमत मिला है, जिसकी वजह महिलाओं का शतप्रतिशत वोट मिला है, आज इस मोड़ पर आकर वादाखिलाफी करते हैं तो छत्तीसगढ़ की जनता कभी माफ नहीं करेगी । आपने यदि कहा है, उस शराबबंदी की दिशा में आपको शत प्रतिशत कदम उठाने में कहीं संकोच नहीं करना चाहिये । निश्चित रूप से यह दूसरी नीति के लिए हम और आप कह रहे हैं, आप कहते हैं कि अध्ययन दल भेज रहे हैं, आपने भेजा था । हमारा ही रिपोर्ट पढ़ना था, हमारी ही योजना का

क्रियान्वयन करना था, आपने अपना घोषणा पत्र क्यों बनाया । हमारे ही घोषणा पत्र में काम चला लेते........

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\d11\.-.5

जारी.. डॉ. रमन सिंह :- हमारी ही योजना का क्रियान्वयन करना था तो आपने अपना घोषणा पत्र क्यों बनाया? हमारे ही घोषणा पत्र से काम चला लेते। आपने घोषणा पत्र बनाया नहीं, आपने अपने घोषणा पत्र में जन जन में वायदा और विश्वास करने का काम किया। एक तरफ तो आप कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी ने जो अध्ययन दल भेजा उसकी रिपोर्ट को यहां पढ़ा जाता है, दुकानें बढ़ाई जाए, क्या किया जाए, कोचिया बंदी की जाए या कया किया जाए मैं उस बहस में नहीं जाना चाहता मगर यदि आपने पूरी गंभीरता के साथ इस विषय को इस सदन में कहा है जनता के सामने अपने घोषणा पत्र में कहा है तो उसके शत प्रतिशत क्रियान्वयन के लिए आपको आगे बढ़ना चाहिए और इस काम को करना चाहिए। चार-पांच बिन्दु जो आपके सबसे महत्वपूर्ण पहलू जिसे आपने अपने घोषणा पत्र में चिन्हांकित किया। मगर उस घोषणा पत्र के बाद अभिभाषण में जिसका जिक्र तक नहीं आया, कम से कम नीतिगत फैसला लिया है यह तो बोल देते कि शराबबंदी का हमने नीतिगत फैसला ले लिया है और इस पर हम क्रमिक निर्णय लेंगे और आने वाले समय में नशाबंदी की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। लेकिन उसके लिए कोई योजना नहीं। किसानों के लिए कर्जमाफी की बात, 6100 करोड़ रूपये की बात लेकिन कितनी राशि आपने रखी? आपने 2500 रूपये में धान खरीदी की बात की, दो साल के बोनस का वायदा किया, न किसानों का बोनस दिख रहा है और न ही किसानों के लिए आपने कार्ययोजना बनाई। सिर्फ 4200 करोड़ रूपये दे देने से यह कर्ज माफी नहीं हो सकता।

श्री अमरजीत भगत :- जो कर्जमाफी किये हैं और धान का रेट बढ़ाए हैं उसके लिए कम से कम एक बार धन्यवाद तो दे दीजिए।

डॉ. रमन सिंह :- धन्यवाद तो छत्तीसगढ़ की जनता ने आपको दिया और छत्तीसगढ़ की जनता ने आपकी इन्हीं नीतियों पर इसी वायदे पर भरोसा किया मगर छः महीना बाद जब इसकी पूरी कलाई खुल जायेगी तो यही जनता आपको गांव में घेरेगी और प्रश्न करेगी। गांव में जाओगे ना तो प्रश्न करेगी कि बिजली बिल हॉफ श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, का प्रश्न पूछेगी।

श्री धर्मजीत सिंह :- दौड़ेंगे, इधर-उधर भगेंगे और क्या है? जब जनता दौड़ाएगी तो दौड़ेंगे।

डॉ. रमन सिंह :- बिजली का अभी तो मजा ले रहे हैं। हल्का करेंट लगता है अच्छा लग रहा है, 440 वोल्ट लगेगा तो पता चलेगा कि बिजली बिल हॉफ करके गांव से सरकार बनाने का क्या मतलब होता है। आपने लोगों से कहा लोगों ने बिजली बिल पटाना बंद कर दिया। हमारे यहां से खबर आ रही

है, पेपर में पढ़ रहे हैं कि बिजली बिल पटाना बंद कर दिया, क्यों नही पटा रहे हैं तो कहते हैं कि बिजली बिल हॉफ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नगर निगम में प्रापर्टी टैक्स जमा होना बंद हो गया, चारों तरफ अराजकता है।

श्री दीपक बैज :- अजय भैय्या, किसानों ने धान बेचना भी बंद कर दिया था।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपका तो ट्रांसफार्मर ही उड़ गया बाकी की बात ही छोंड़िए।

श्री अरूण वोरा :- सरकार कांग्रेस पार्टी चला रही है, कांग्रेस पार्टी को चिनता है कि उन्होंने अपने जनन घोषणा पत्र में जो-जो वायदे किये हैं उसे पांच साल में पूरा करके दिखायेंगे, आप चिन्ता मत करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- कांग्रेस की राजनीति में वोरा युग की समाप्ति कोषाध्यक्ष पद से हटाए गए, आप सामने इधर मार्गदर्शक मंडल में बैठो।

श्री अरूण वोरा :- वोरा जी का जो स्थान है रमन सिंह जी जानते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कांग्रेस पार्टी में बैठे हुए लोग यदि वायदा पूरा नहीं भी करेंगे तो आपका क्या बिगड़ेगा, बिगड़ेगा तो उसी तरफ। क्योंकि जनता तो दौड़ाएगी उनको, आप तो हाथा जोड़ लोगे कि मैं मंत्री नहीं बना हूं।

श्री अमरजीत भगत :- धरम भैय्या, आप दोनों तरफ से बात करते हैं। उनको उचकातेभी हैं और इधर भी करते हैं। वन वे चलिए ना।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, सरकार बने 25 दिन हुए हैं, ऐसी स्थिति मैंने आज तक इतने राजनीतिक जीवन में नहीं देखा कि पूरे प्रदेश में अराजकता की स्थिति कैसे बन सकती है। ऐसा लग रहा है कि सारे विभागों से सारे काम के लिए सारे पैसे वापस बुलाए जा रहे हैं। जितने डेव्हलपमेंट के वर्कों के वर्कआर्डर जारी हो चुके थे, जिनके काम शुरू हो गये थे, काम की तैयारी थी, उन सारे के वर्कआर्डर कैन्सल करके कम से कम 30-40 हजार करोड़ के काम वापस आ रहे हैं। यह सरकार की सबसे बड़ी असफलता होगी कि किसी सरकार के आने के बाद विकास के पूरे काम यदि ठप्प हो जाते हैं तो सरकार को लोग आने वाले समय में याद रखेंगे कि जो सड़क बन रहा था वह आधा बना हुआ है, पुल बन रहा था आधा बना हुआ है। बस्तर के इतने सारे ब्रिजेस और कामों की शुरूआत हमने की थी, सारे काम ठप्प कर दिये गये, सारे कांट्रेक्टर भाग रहे हैं। यदि इसी प्रकार अराजकता की स्थिति रही तो इस सरकार का उत्सव बहुत जल्दी समाप्त हो जायेगा। ...

श्री प्रमेश

डॉ.रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, यदि इस प्रकार अराजकता की स्थिति रही। ये सरकार का उत्सव बहुत जल्दी समाप्त हो जायेगा और लोगों के मन में, चेहरा में निराशा और डर का भाव पैदा होगा कि हमने गलत काम किया जो इस सरकार को चुन के भेजा। कम से कम जो आनगोईंग प्रोजेक्ट है जो चल रहा है, एरिगेशन के जो सड़कों के निर्माण काम पुल पुलिये के काम जो छोटे छोटे काम पंचायत के नगरीय निकाय के वो सारे काम पूरी तरीके से ठप्प कर दिये गये हैं। मुझे लगता है कि सरकार ने पूरे आदेश जारी किया है। उस आदेश के तहत मैं देख रहा हूं कि पूरे निर्माण कार्य विकास का रूक गया है, तो ये इस युग में जायेगा छत्तीसगढ़ । मुश्किल से 15 साल 20 साल में 2000 के बाद छत्तीसगढ़ को धीरे धीरे वो इन्फ्रास्टकचर और सड़कों का जाल बिझाने का काम वो अलग अलग रेलवे के विस्तार का काम हमने सब काम शुरूआत की और अलग अलग योजनाओं के क्रियान्वयन में इन्फ्रास्टकचर को बढ़ाने का काम किया। मुझे दूसरी शंका है जो बड़ी बड़ी बातें और पेपर में पढ़ता हूं, दूसरी मुझे चिंता हो रही है । आउटसोर्सिग अरे भैया, आज तक आपने देखा है कि सरगुजा के बलरामपुर से ले कर सूरजपूर तक के वहां के स्कूल में कभी मैथ्स के टीचर गया, कभी केमेस्ट्री का टीचर गया, कभी फिजिक्स का टीचर गया, वहां की हाईस्कूल की हालत ये है कि आज तक टीचर नहीं आते। दंतेवाड़ा का सुकमा का कोंटा के स्कूल में यदि 11वीं 12वीं पढ़ाने वाला मैथ्स का टीचर हम बाहर से ला के न पढ़ायें, 10 बार एडवरटीज देने के बाद भी वो बच्चे नहीं आये मगर आज ये फैसला लिया जा रहा है, उनको निकाल दिया जायेगा अरे भैया स्कूल की सारी व्यवस्था खत्म कर दोगे क्या ? डॉ. रमन ने अच्छा काम या इस सरकार ने अच्छा काम किया है वो लाखों बच्चों की वजह से किया है तो वही दंतेवाड़ा बीजापुर के बच्चे आज डॉक्टर, इंजीनियर और वकील बन रहे हैं। इसलिए बेहतर स्थिति बनी है। आपको एक ही चीज समझ में आती है....।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. साहब आप ही के समय 3000 स्कूल बंद हुए थे। छत्तीसगढ़ में सुदूर अंचल में आदिवासी इलाके के 3000 स्कूल बंद हुए थे। हम लोग बोलते रह गये आपने नहीं माना।

डॉ.रमन सिंह :- आराम से बैठ जा ना।

श्री दीपक बैज :- आज भी वहां पर एक भी टीचर नहीं है, स्कूल में।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मैं कह रहा हूं कि 25 बार हुआ है उठक, बैठक करते हुए। 101 बार उठक बैठक कर लेगा न तो इधर पक्के तौर पर आ जायेगा। अभी 25 वां हुआ है, उसके बाद 26 वां भी लूंगा।

श्री अमरजीत भगत :- उठक बैठक करने के लिए हम लोग का ड्यूटी लगा है। अब जो बात हुआ है उसको तो बताना ही पड़ेगा न। ये जो आपने कालोनी बना के दी।

डॉ.रमन सिंह :- आपने विशेषाधिकार दिया है कि हमेशा खड़े रह सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपके प्रति प्रेम है।

डॉ.रमन सिंह :- मैं खड़ा हूं तो कम से कम इतनी समझ तो विकसित हो जाना चाहिए, पुराना है ये, पहली बार खड़े होते तो मैं नहीं टोकता।

श्री अमरजीत भगत :- जो गलती आप लोगों ने किया है, उसको याद दिला रहा हूं।

डॉ.रमन सिंह :- लंबे समय से विधानसभा में रहे हैं, कम से कम इतनी समझ तो होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- वो आपके जमाने में रहा है, आपने क्या सिखाया है आप ही जाने।

डॉ.रमन सिंह :-अध्यक्ष जी मैं दूसरी पीड़ा की बात कर रहा था, अभी देवव्रत जी इस बात को कह रहे थे। एक अजीब स्थिति इस प्रदेश में पैदा हो रही है। कुछ हमने नये माडल हमने इस देश में लाये। प्रदेश में नहीं बोलता देश में नया माडल किया। पी.पी.पी माडल हमने देश में इंटरोड्यूस किया। पूरे हिन्दुस्तान में छत्तीसगढ़ ने किया और वो माडल था, पब्लिक, प्राइवेट, पार्टनरशीप । प्राइवेट सेक्टर के लोग हैं, लाईक पी.एस.यू जितने हमारे हैं। एन.एम.डी.सी, एस.ई.सी.एल, सेल बाकी लोगों से फँड लेकर उनके साथ मिलकर हमने एक ज्वाईट वेंचर कंपनी बनाई। ज्वाईंट वेंचर कंपनी में हमने इनवेस्टमेंट का एक माडल तय किया और उस माडल में बैंकेबल उसको बनाया, उसमें फंड अलग-अलग लोगों ने लगाया। एन.एम.डी.सी ने लगाया, एरक्वानयूस को हमने पार्टनर बनाया । उस पार्टनर के साथ दूसरे स्टेट को या कोल एजेंसी को कोल के पार्टनर को बनाया। स्टेट गोरमेंट का पार्टनर बनाया, आप आश्चर्य करेंगे ढाई हजार किलोमीटर सड़क छत्तीसगढ़ के निर्माण के बाद जितना रेलवे का निर्माण हुआ था, आजादी से लेकर आज तक उतना ही रेलवे स्टेट नये पटरी बिछाने का काम इस माडल में छत्तीसगढ़ में शुरू किया है, 2400 किलोमीटर पर आज फिर संकट के बादल छा रहे हैं। नई सरकार बनने के बाद अभी देवव्रत बता रहे थे कि कवर्धा से चलकर जो रेलवे लाईन डोंगरगढ़, खैरागढ़, गंडई, कटघोरा तक जाने वाला था उस प्रोजेक्ट को ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा। दल्लीराजहरा से जगदलपुर तक की रेलवे का विस्तार का काम यदि ये हमारी प्राथमिकता नहीं रही, इस स्टेट को हम 21 सेंचुरी का बेस्ट स्टेट बनाने के लिए, बेस्ट इंफ्रास्टकचर देने के लिए, नेशनल हाइवे का जो जाल बिछाने का काम हुआ, स्टेट हाइवे के जा बिछाने का काम हुआ।

जारी श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\d13\01.45-01.50

जारी डॉ. रमन सिंह :- स्टेट हाईवे का जाल बिछाने का काम हुआ। रेल्वे का तीन हजार, ढाई हजार किलोमीटर रेल्वे और आज हिन्दुस्तान में अन्य राज्य इस मॉडल को को फॉलो कर रहे है, हमसे बेहतर हो जाएंगे। आने वाले 4 सालों में इन सारे रेल्वे लाईन को पूरा करने की हमारे अंदर क्षमता है। उसके लिए उस मॉडल को आगे बढ़ाने की जरूरत है, उसमें कहीं कोताही करने की जरूरत नहीं है ये स्टेट के हित में है। हम ये नई पीढ़ी के लिए कर रहे हैं। मेरा और आपका नहीं है, किसी का नहीं है। आने

वाली पीढ़ी को लगेगा कि हम उनके लिए कुछ छोड़कर गये हैं। कुछ बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने का काम हमने शुरू किया है। ऐसे बहुत सारे प्रोजेक्ट हैं। इन प्रोजेक्ट की चिन्ता होनी चाहिए। उस प्रोजेक्ट के लिए विजन के साथ काम करने वाला कोई न कोई व्यक्ति होना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूँ कि आने वाली यह नई सरकार को इस दिशा में काम करने के लिए जरूर अवसर मिलेगा और बेहतर तरीके से काम करेंगे। आज मैं उन विषयों पर बोलने की जरूरत ज्यादा नहीं समझता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो ही विषयों पर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि कैसी कार्य संस्कृति है ? 25 दिन में वह लक्षण सामने आने लगे। सरकार की सोच, मानसिकता और सरकार किस दिशा में जाएगी। इसके लक्षण दिखने लगे और उन योजनाओं के क्रियान्वयन में दिख रहा है। एक बहुत चर्चा हो रही है बड़ी-बड़ी बातें रखी जा रही हैं नान के संबंध में बहुत-बहुत विषय, बातें आईं, चर्चा आई, मैं कहता हूँ दुनिया के इतिहास में आज तक कहीं नहीं हुआ होगा कि कोई व्यक्ति जिस व्यक्ति के ऊपर आरोप है, आरोपी है जिसके खिलाफ वारंट निकला है जिसकी दो बार में जमानत नहीं हुई, वह व्यक्ति जो अपराधी है उस अपराधी के दिये गये प्रतिवेदन या उसके आवेदन पर कैबिनेट निर्णय लेता है, उसके आवेदन पर जिसको कटघरे में खड़ा किया गया है, जिसकी हाईकोर्ट में तीन बार में जमानत नहीं हुई, उसके अभ्यावेदन पर ये निर्णय लिया जाता है कि एस.आई.टी. का गठन किया जाए। क्या छत्तीसगढ़ में ये परम्परा हो जाएगी कि जो अपराध किया है, अपराधी है उसके आवेदन पर किसी भी प्रकार की एस.आई.टी. का गठन हो जाएगा। यानी ये तो बहुत बड़ा विन्डो खोल रहे हैं कि जिस व्यक्ति के नाम से आरोप है उस व्यक्ति के द्वारा ही आवेदन मांग किये हैं और उसके द्वारा, उसके लिए एस.आई.टी. का गठन कर दिये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बहुत जबरदस्त बात हुई, उस नान का जो जांच अधिकारी है उसको प्रोटेक्शन मिलता है मगर जांच अधिकारी को पहले दिन निलंबित कर दिया गया। सबसे मजेदार बात और जिसकी चर्चा सबसे ज्यादा होती है बोला जाता है कि 113 पन्नों की विवेचना नहीं हुई, इसलिए न्यायालय पर कार्यवाही स्थगित करने के लिए, ये पहली बार हो रहा है कि न्यायालय पर ई.ओ.डब्ल्यू. जा रहा है और इसलिए न्यायालय जा रहा है, इसलिए बोल रहे हैं कि कार्यवाही को स्थगित किया जाए। न्यायालय की कार्यवाही को पहली बार स्थगित करने का आग्रह ई.ओ.डब्ल्यू. कर रहा है ये बड़ा अजीब विषय है और किसके लिए ? जो 113 पन्नों को विवेचना का आधार बनाया गया है। ऑलरेडी ई.ओ.डब्ल्यू. ने उसका पी.ई. कर लिया है और पी.ई. करने के बाद तीन ऑब्शन थे, ये घटना पुराने वर्ष 2012-2014 के हैं ये वर्ष 2015 वाले नहीं हैं। ये वर्ष 2012-2014 के हैं। उसका पी.ई. हो चुका है पी.ई. होने के बाद तीन ऑब्शन थे या तो उसको क्लोज कर दिया जाए या अभियोजन योग्य नहीं है, यदि अभियोजन के लायक तो विभागीय जांच हो जाए और तीसरा कठोर निर्णय था कि इसके लिए लोकायुक्त को दिया जाए। हमने तीसरा कदम उठाया, हमने उस 113 पेज, जिसके बारे में अभी न्यायालय पर

आवेदन दिया है उसको लोकायुक्त को जांच के लिए दिया है जो हाईकोर्ट के रिटायर्ट जज हैं। अब लोकायुक्त से अच्छी जांच इनका वह इतना प्रतिभाशाली एस.आई.टी. का जो अधिकारी है जिसकी योग्यता पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है जिसके बारे में भूपेश जी, सारे लोग जानते हैं उसको यदि आप नाम लेते हैं उसको अधिकारी बनाते हैं तो ये सरकार की मंशा बताती है।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. साहब,आप एस.आई.टी. के नाम से इतना घबरा क्यों रहे हैं ?

डॉ. रमन सिंह :- आप बैठिए। कोई नहीं घबराता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उस डायरी का अस्तित्व ही नहीं है जिसके बारे में इतनी लम्बी चौड़ी बात होती है कोई उसका अस्तित्व नहीं है और इसके अलावा मैं कल माननीय माननीय मुख्यमंत्री जी बोल रहे थे कि मैंने कुछ कागज धूल से झाड़ कर निकाले हैं, मैंने भी एक कागज धूल को झाड़ कर निकाला है उसकी कॉपी की बिन्दुओं को पढ़कर सुनाना चाहता हूँ कि जिस व्यक्ति को बचाने के लिए ....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\d14\01.50-01.55

पूर्व जारी.. डॉ. रमन सिंह :- उसकी कापी के उन बिन्दुओं को पढ़कर सुनाना चाहता हूं। जिस व्यक्ति को बचाने के लिए, एक अपराधी को बचाने के लिए एस.आई.टी. का गठन हो रहा है। यह तो सीधा-सीधा उस को जमानत मिल जाये, अदभूत बात है कि डी.जी. बोलता है, डी.जी. के बयान पेपर में आते हैं कि एस.आई.टी के गठन के बाद शायद उसकी जमानत हो जाये। यानि न्यायालयीन काम भी डी.जी. कर रहा है। वहां से वह अनुमान बता रहा है कि एस.आई.टी बनने के बाद जमानत मिल जायेगी, यानि ये निर्देश है, उसकी मंशा है, उसको जमानत मिल जायेगी, डी.जी. का बयान है। ये पत्र माननीय प्रधानमंत्री जी को लिखा गया है। मैंने निकाला है। माननीय प्रधानमंत्री जी को ये पत्र किसने लिखा है? ये पत्र लिखने वाले प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भूपेश बघेल जी और टी.एस.सिंहदेव जी हैं। उन्होंने क्या लिखा है, उन्होंने लिखा है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में हम छत्तीसगढ़ सरकार की योजनाओं और उसके क्रियान्वयन में जो कमी है, उसकी ओर ध्यान दिलाते हैं। हम आपको घोषित भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का हवाला देते हुए छत्तीसगढ़ के पी.डी.एस. घोटाले में जांच सी.बी.आई. या ई.डी. से कराई जाये, क्योंकि केन्द्र सरकार की इस धनराशि का घोटाला हुआ है, तुरन्त सी.बी.आई., ई.डी. से एफ.आई.आर. दर्ज करने की मांग करें और दोनों आई.ए.एस. अधिकारी को गिरफ्तार करके आगे की कार्यवाही करें। ये पत्र प्रधानमंत्री जी को लिखा है, उसी अधिकारी के लिये लिखा है जिसके अभ्यावेदन मे, एप्लीकेशन में एस.आई.टी. का गठन किया गया है। (शेम-शेम की आवाज) माननीय अध्यक्ष महोदय, यू-टर्न क्या होता है? इस प्रकार का वर्क कल्चर यदि छत्तीसगढ़ में डेवलप होगा, मैं जिस लोकायुक्त जांच की बात कर रहा था, वह 113 पन्ने जिसके बारे में बात हुई, ये 113 पन्ने की जांच लोकायुक्त में पंजीकृत करके उस प्रकरण का निराकरण करने का काम लोकायुक्त कर रहा है। लोकायुक्त से बड़ा

एस.आई.टी. हो गया, अपने लोगों को इकट्ठा करके एस.आई.टी. बनाकर लोकायुक्त के ऊपर जांच की प्रक्रिया करना यह छत्तीसगढ़ में ही संभव है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक और दूसरी अदभूत घटना है, मैं वर्क कल्चर बता रहा हूं, कैसे काम करेंगे, इसका एक टेलर दिख रहा है। जैसी काम करने की प्रवृत्ति होती है, वैसा काम होता है। एक मजेदार घटना हुई। इतनी जल्दबाजी और हड़बड़ी मे हैं। नया डी.जी. नियुक्त करना है, अब तत्काल नया डी.जी. नियुक्त नहीं कर सकते, यू.पी.एस.सी. से जब तक कन्फर्म नहीं करेंगे, तब तक डी.जी. की नियुक्ति कैसे करेंगे ? तो अब डी.जी. को चालू प्रभार देकर बना दिया है। चालू यानि चालू प्रभार। अध्यक्ष महोदय, एक आदेश है, माननीय सुप्रीम कोर्ट ने 03-07-2018 को जो एक आदेश Prakash Singh vs Union of India पारित किया। इसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से डी.जी.पी. छत्तीसगढ़ के बारे में निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि डी.जी.पी. को कैसे हटाया जा सकता है, उन्होंने चार कारण बताये हैं। यदि छत्तीसगढ़ में उसको हटाने के लिए कोई चार कारण में से एक कारण भी हो तो उसको हटाया जा सकता है। पहला कारण है, सुप्रीम कोर्ट के Prakash Singh प्रकरण के जजमेन्ट में जो बात आई है, अनुशासनहीनता की कार्यवाई उसके पास हो, Disciplinary action under all India service rule, दूसरा criminal offence में सजा हो, conviction in court of law in criminal offence in case of corruption , तीसरा भ्रष्टाचार का है और चौथा कारण शारीरिक रूप से विकलांग हो गया है, तब डी.जी. को हटा सकते हो, नहीं तो डी.जी. को ऐसे नहीं हटाया जा सकता है। छत्तीसगढ़ में इन चारों कंडीशन को छोडते हुए किया गया है, बाद में जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा, ये क्षमा मांगने जा रहे हैं, इन्होंने कहा कि रिमूवल आफ डी.जी.पी. ए.एन. श्रीवास्तव, उन्होंने सीधा-सीधा कहा है कि ये राजनीतिक दृष्टि से motivated है और ये revangeful कार्यवाई है। यह छत्तीसगढ के 25 दिन की सरकार की कार्यशैली और कार्ययोजना है, चालू प्रभार दे दिया गया। आज तक छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित क्षेत्र में डी.जी. को चालू प्रभार नहीं दिया गया। कोई पटवारी, ग्रामसेवक तो है नहीं कि चालू प्रभार दे देंगे। इसमें स्पष्ट लिखा है।

श्री अमरजीत भगत :- आपकी सरकार में सी.बी.आई. के अधिकारी को बदल सकत हैं, प्रदेश में क्यों नहीं हो सकता है ?

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\d15\01.55-02.00

डॉ. रमन सिंह :- आप नहीं समझेंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी फैसले पर माननीय प्रकाश सिंह जी ने अपनी बात रखी है और इसको अंत में मुहर लगा दिया है - There is no concept of acting director general of police as per decision in the Prakash singh case स्पष्ट कह दिया है acting director general of police decision के हिसाब से यह बढ़ नहीं सकता । अब ऐसी जल्दबाजी करने का, रातोंरात

काम करने का, गलत तरीके से मोटीवेट करने का, ऐसे फैसले लेना जहां सुप्रीम कोर्ट में गाईडलाईन का क्रियान्वयन नहीं किया जा रहा है । मैं किसी व्यक्ति का न विरोधी हूं, न किसी व्यक्ति का समर्थक हूं लेकिन जहां अन्याय होगा, जहां कानून को तोड़ा जायेगा वहां हमेशा डॉ. रमन हमेशा उसकी आवाज बनकर खड़ा रहेगा । (मेजों की थपथपाहट) मैं किसी अधिकारी के पक्ष और विपक्ष की बात नहीं करता पर जहां अन्याय किसी के साथ होता है, जब किसी को जबर्दस्ती तरीके से इसलिये वहां लाया जाता है किसी योजना के तहत् यह छत्तीसगढ़ की कार्यशैली नहीं है । छत्तीसगढ़ के लोग भोले-भाले, सीधे-सादे लोग हैं, ईमानदार लोग हैं लेकिन छत्तीसगढ़ में इस प्रकार के छल-कपट की राजनीति नहीं चलती । इस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति नहीं चलती इस प्रकार सिर्फ और सिर्फ आपके घोषणा पत्र में एस.आई.टी. के सिवाय कोई उपलब्धि नहीं दी जा रही है । मैं दावे के साथ कहता हूं कि 15 साल के कार्यकाल में हमने जो काम किया है भारतीय जनता पार्टी के एक-एक हमारे मंत्री, विधायक की किसी भी विषय में जांच कर ले । (मेजों की थपथपाहट) हमने जो काम किया है वह डंके की चोट पर किया है । छत्तीसगढ़ में विकास किया है, हिंदुस्तान में छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य में पहुंचाने के लिये पूरी ताकत झोंकी है । एक-एक पल, एक-एक क्षण हमने काम किया है इसलिये पूरे हिम्मत और हौसले के साथ मैं कहता हूं कि जो भी जांच, जैसी भी जांच, जिस तरह की भी जांच हो क्या फर्क पड़ता है ? होता रहेगा, यह तो 5 साल हम विपक्ष की राजनीति में दम से खड़े हैं और हर मामले में जहां-जहां सरकार के ऐसे कदम होंगे उसका हम पुरजोर विरोध करेंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण पर मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या है कि इनको आखिरी में एक एस.आई.टी. गठित करनी पड़ेगी कि बार-बार एस.आई.टी गठित क्यों की गयी ? अब इसके लिये ये लोग एस.आई.टी गठित करेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- केंद्र में जब सी.बी.आई. के अधिकारी बदले गये, जब रिजर्व बैंक के अधिकारी बदले गये तब आप लोगों के विचार कहां थे, सिद्धांत कहां था ? वहां तो ऐसे संवैधानिक पद से हटाये गये जैसे किसी बाबू को हटा रहे हैं । उस समय तो आप लोग एक भी बात नहीं बोले । उस समय आप लोगों का सिद्धांत कहां गया था ? (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- श्री शिवरतन भैया, उधर 15 सीट कैसे आयी उसके लिये भी हम लोगों को एस.आई.टी गठित करनी पडेगी । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- अब नया बना है तो अपने अनुसार करेंगे ही ।

समय :

1:58 बजे **(सभापति महोदय (श्री देवेंद्र बहादुर सिंह) पीठासीन हुए)**

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय महामहिम राज्यपाल जी के अभिभाषण पर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं अपनी बात कहना चाहता हूं । माननीय राज्यपाल जी का भाषण सरकार का आईना होता है, सरकार का विजन होता है, सरकार का रोडमेप होता है । छत्तीसगढ़ की माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार उसी रोडमेप पर, उसी विजन पर काम कर रही है । छत्तीसगढ़ राज्य को बने 18 साल पूरे हो गये हैं ।

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- राजा देवेंद्र बहादुर सिंह जी पहली बार बैठे हैं उनको बहुत-बहुत बधाई । (मेजों की थपथपाहट)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, 3 साल हमारी सरकार थी और 15 साल माननीय डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी । तीसरी बार हमारी फिर से 18वें वर्ष में माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार है । हमारी सरकार एक विजन लेकर, एक उद्देश्य लेकर छत्तीसगढ़ में चल रही है । हमारे पुरखों का सपना था, छत्तीसगढ राज्य के स्वप्नदृष्टा श्रद्धेय चंदूलाल चंद्राकर जी, श्रद्धेय डॉ. खूबचंद बघेल जी, बैरिस्टर छेदी लाल जी ने जो सपना देखा था कि छत्तीसगढ़ राज्य बनेगा तो छत्तीसगढ के निवासियों का विकास होगा । छत्तीसगढ़ राज्य प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है, पिछले 15 वर्षों में माननीय डॉ. रमन सिंह जी के राज में छत्तीसगढ़ की मूलभूत सुविधाओं के लिये भी छत्तीसगढ़ की जनता तरश रही थी । हम छत्तीसगढ़ के अमीर धरती के गरीब लोग आज मूलभूत सुविधाओं के लिये भी तरश रहे हैं । आज बस्तर जैसे दूरस्थ अंचलों में फ्लोराईडयुक्त पानी पीने के लिये मजबूर हैं जहां 95 हजार-96 हजार करोड़ रूपये का बजट हो उस प्रदेश में भी लोगों को.........जारी

.............श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\d16\02.00-02.5

समय

2.00 बजे

जारी...............श्री मोहन मरकाम :- आज बस्तर जैसे दूरस्थ अंचलों में फ्लोराइडयुक्त पानी पीने के लिए मजबूर हैं । जिस राज्य में 95-96 करोड़ का बजट हो, उस राज्य में भी लोगों को मूलभूत सुविधाएं न मिलें, पिछले 15 वर्षों से डॉ. रमन सिंह जी की सरकार सिर्फ फ्लैक्सों और टीवी चैनलों के माध्यम से विकास का ढ़िढोरा पीटती थी । जब छत्तीसगढ़ राज्य बना, उस समय छत्तीसगढ़ में गरीबी का प्रतिशत मात्र 37 था । 15 वर्षों बाद जब डॉ. रमन सिंह जी का कार्यकाल समाप्त हुआ तो 39.9

प्रतिशत के साथ पूरे देश में, गरीबी के मामले में प्रथम स्थान रहा । सभापति जी, हम उड़ीसा की बात करते थे, हम बिहार की बात करते थे । बिहार और उड़ीसा से भी ज्यादा गरीबी छत्तीसगढ़ में हुई । आज हम देखते हैं कि हमारे भूपेश बघेल जी की सरकार सबको मिलकर जनादेश का सम्मान करते हुए जन भावनाओं, जन आकांक्षाओं के अनुरूप करना सुनिश्चित किया है । जनता के कल्याण और राज्य के विकास के लिए पूरी लगन और निष्ठा से पूरा काम करना है । छत्तीसगढ़ राज्य विधान सभा की आदर्श परम्परा को पूरा करना है । भारत की गरिमामय विरासत का सम्मान करते हुए कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुरूप माननीय भूपेश बघेल की सरकार कार्य कर रही है ।

माननीय सभापति जी, हमारे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सर्वस्व त्याग करने वाली वीरांगना सुपुत्रियों का त्याग और बलिदान याद रखेंगे । शहीद मंगल पांडे, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल से लेकर छत्तीसगढ़ के वीर सपूत गेंद सिंह, शहीद गुंडधूर, शहीद वीर नारायण सिंह जी ने जो त्याग और तपस्या छत्तीसगढ़ के लिए किया है । उसे माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार पूरा करेगी । छत्तीसगढ़ बनाने में जिनका योगदान रहा है । श्रद्धेय हमारे पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी साहब के सम्मान में बाजपेयी पुरस्कार के लिए 25 लाख अनुपूरक बजट में हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल की सरकार ने रखा है । जो लोग माननीय बाजपेयी जी के नाम से राजनीति करते थे । जब बाजपेयी जी बीमार थे तो ये लोग उन्हें देखने भी नहीं गए और जब वे हमारे बीच नहीं रहे तो उनकी अस्थि लेकर गांव-गांव जाकर राजनीति करने का प्रयास किया । इन्होंने बाजपेयी साहब को तो कभी सम्मान दिया ही नहीं । मगर हमारी सरकार उनके नाम से एक सम्मान की स्थापना कर रही है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता, यशस्वी नेता अटल बिहारी जी को हम सब नेता स्वीकार करते हैं । छत्तीसगढ़ की सरकार उन्हें पूरा सम्मान देती रही है । जिस प्रकार की बातें मोहन मरकाम जी कर रहे हैं कि वे बीमार थे तो कोई देखने नहीं गया और उनकी अस्थि लेकर घूमते रहे, यह असंसदीय है और इसे विलोपित करना चाहिए । (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- ये लोग अस्थि लेकर घूमते रहे । बाजू में पूछ लीजिए ।

श्री मोहन मरकाम :- भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय में (व्यवधान) । उनके नाम पर राजनीति करते हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे, आप यहां बैठने के लायक हुए मरकाम जी तो अटल बिहारी बाजपेयी के कारण ही हुए हो ।

श्री मोहन मरकाम :- सबसे गंभीर बात यह है कि एक शोक सभा होती है और हमारे पूर्व वरिष्ठ मंत्री शोक सभा में ठहाके लगाते हैं । इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात और क्या होगी ? बाजपेयी साहब, छत्तीसगढ़ राज्य बनाने में जिनका बड़ा योगदान रहा, हम उन्हें सम्मान देते हुए, उनके नाम से 25 लाख के एक पुरस्कार की घोषणा की है । सभापति जी, आज 18 वें वर्ष में छत्तीसगढ़ राज्य के

माटीपुत्र, किसानपुत्र, किसान का बेटा माननीय भूपेश बघेल को छत्तीसगढ़ राज्य का नेतृत्व करने का मौका मिला है । हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी.....................................

---जारी- श्री ठाकुर-

ठाकुर\09-01-2019\d17\02.55-02.60

जारी..........श्री मोहन मरकाम :- माटी पुत्र किसान पुत्र किसान का बेटा माननीय भूपेश बघेल को छत्तीसगढ़ राज्य का नेतृत्व करने का मौका मिला है। माननीय सभापति जी, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी नई सोच, नई ऊर्जा, नई उमंग के साथ के साथ एक नयी सोच कर रहे हैं माननीय सभापति जी। गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ राज्य को फिर से जो पुरातन हमारी धरोहर रही है, पुरातन युग जो रहा है उसको फिर से स्थापित करने के लिए हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी भूपेश बघेल ने किया है। गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ राज्य का लगभग 76 प्रतिशत गांव में निवास करती है। माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ गांव को समृद्ध और सुखी बनाने के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो 4 चीजों को जो उन्होंने चिन्हित किये। छत्तीसगढ़ के चार किनारी नरवा, गरवा घुरवा बारी सब ला बचाना है संगवारी। आज इन 4 को बचाएंगे तो छत्तीसगढ़ का जो हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था है वो समृद्ध होगी। जो आज पलायन की स्थिति है आज छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा पलायन होता है। आज बस्तर के 700 गांव खाली हो गये हैं। आज लोगों के पास काम नहीं है। मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी दूसरे प्रदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है सभापति जी। इसीलिए हमारे संवदेनशील माननीय मुख्यमंत्री जी ने आज ग्रामीण अर्थव्वस्था को लोगों को रोजगार कैसे मिले, मानव संसाधन का कैसे उपयोग हो उस चीज पर काम करना, माननीय मुख्यमंत्री जी ने आते ही शपथ ग्रहण करते ही किया है। इससे बहुत से चीजों का फायदा होगा। जैविक खेती, जैविक खाद उर्वरक भूमि, बारहमासी नाले, उत्पादन, पशुधन, जल संरक्षण और ग्रामीण विकेन्द्रीकरण अर्थव्यवस्था पर हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने जोर दिया। माननीय सभापति जी, नरवा। नरवा यानी नदी। हमारी नदियों में हमेशा बारहमासी पानी हुआ करता था पहले और मगर आज बड़ी-बड़ी नदियों के सूखने की स्थिति है। आज रायपुर जैसे जगह में माननीय सभापति जी 300-400 फीट में पानी निकलता है। कहीं न कहीं हम जो सतही जल को बचा नहीं पा रहे हैं इस कारण आज पूरे छत्तीसगढ़ की भयावह स्थिति है। इसीलिए माननीय मुख्यमंत्री जी की सोच है नरवा, यानी की नदी को नदी के जल को जो बरसात का जल को हम कैसे बचाएं। उसका संरक्षण कैसे करें। उसमें माननीय सभापति जी उसमें काम हो रहा है और बारहमासी नालों का पानी बरसात के खेती किसानी करके सब्जी भाजी उगाकर के हम छत्तीसगढ़ के लोगों को उन्नत बना सकते हैं। माननीय सभापति जी, गरवा गाय। गाय हमारी संस्कृति में है। हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा दिया है। मगर भारतीय

जनता पार्टी के 15 सालों में देखा हमने। जो गौशाला में गायों का इन्होंने क्या हश्र करके रखा था। (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति जी, हम तो चाहते हमारी सरकार चल रही जो भारतीय जनता पार्टी के लोग स्मार्ट सिटी की बात करते थे मगर हम हमारी छत्तीसगढ़ की सरकार हमारी सरकार स्मार्ट गौशाला बनाएंगे और गांव गायों का संरक्षण करेंगे। हमारी मां का संरक्षण करेंगे। माननीय सभापति, आज हम देखते हैं हमारी सरकार गौधन और गौ समर्थन की संपूर्ण जिम्मेदारी लेते हुए चारा का और गौठान निर्माण करने के लिए हमारी सरकार ने चरवाहों की भी नियुक्ति करना शुरू कर दिया है और हम गाय को जिस ढंग से पूजते हैं, जो सम्मान देते हैं, वो सम्मान फिर से हम छत्तीसगढ़ में स्थापित करेंगे।

श्री दीपक बैज(चित्रकोट):- शिवरतन भैय्या कुछ नहीं बोलेंगे आप। स्मार्ट गोशाला बनवाएंगे।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, आप लोगों ने जो मां गाय के नाम से जो किया 300-300 और 400-400 गौ माता की मृत्यु हुई वो जो पाप आपको लगा है इसलिए 15 सीटों में आप सिमट गये हैं कि आप गौमाता का आपने सम्मान नहीं किया। इसीलिए स्थिति ये है। माननीय सभापति जी, घुरवा सरकार की ओर से कोई नीति नहीं होने के कारण घुरवा घरों में गांव के लिए बोझ बन गये हैं। रासायनिक खादों की अधिकता होने के कारण कई बीमारियां हो रही हैं। इसलिए घुरवा खाद लेने की परंपरा का हमारे मुख्यमंत्री की सोच है और फिर से मतलब वही प्रथा लागू करेंगे। माननीय सभापति जी, खेती-बाड़ी को लोग आज भूल रहे हैं। हमारी पहली परंपरा रही है कि गांव में हम भी गांव से आते जो गांव के बाड़ी में जो गाय के गोबर जो सब्जी भाजी उगाया जाता था उससे हमको बहुत ज्यादा फायदा होता था। मगर आज उसका भी नहीं हो रहा है। और हम चाहते हैं कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मानव संसाधन का कैसे उपयोग करें उसके लिए हम प्रयास करेंगे। छत्तीसगढ़ के जो बेरोजगार हैं, उनको रोजगार मिले इसीलिए हमारी सरकार ऐसी योजना बना रही है।

जारी........श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\d18\02.10-02.15

.......जारी श्री मोहन मरकाम :- आज हमारे छत्तीसगढ़ के जो बेरोजगार हैं, उनको रोजगार मिले, उसी में रोजगार मिले, इसलिए हमारी सरकार ऐसी योजना बना रही है।

माननीय सभापति जी, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने फिजूलखर्ची पर रोक लगाने और मितव्ययता बढ़ाने पर बात की है। सादगी के साथ जनसेवा और व्ही0 आई0पी0 कल्चर समाप्त करने की बात की है। माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ की जनता ने कांग्रेस पार्टी को ऐतिहासिक जनादेश दिया है। छत्तीसगढ़ की जनता ने जो विश्वास किया है, जनता ने जो उम्मीद की है, जो छत्तीसगढ़ की जनता की जो आकांक्षाएं हैं, हम उन आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करेंगे। आज किसानों की बात है, उस पर हमारे पूर्व वक्ताओं ने विस्तार से बात कही है। माननीय सभापति महोदय, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ0 रमन सिंह की सरकार का बार-बार स्टेटमेंट आ रहा है कि बदलापुर की राजनीति छोड़ दीजिये। छल-कपट

छोड़ दीजिये, बदले की राजनीति मत कीजिये। माननीय रमन सिंह की सरकार पिछले 15 सालों तक छत्तीसगढ़ में रही है, वही तो बदलापुर की राजनीति कर रही थी। छत्तीसगढ़ में बदलापुर की राजनीति डॉ0 रमन सिंह की सरकार ही तो कर रही थी। अगर सरकार बदलापुर की राजनीति नहीं करती, हमारे जो फ्रंट लाईन के नेता थे, शहीद नंद कुमार पटेल जी, शहीद महेन्द्र कर्मा जी, शहीद पं. विद्याचरण शुक्ल जी, शहीद योगेन्द्र शर्मा जी, शहीद दिनेश पटेल जी, शहीद उदय मुदलियार जी आज हमारे बीच होते। माननीय सभापति जी, उस समय की छत्तीसगढ़ की सरकार परिवर्तन यात्रा से डर गई थी। इसलिए एक बहुत बड़ी साजिश के तहत हमारे नेताओं की सुरक्षा नहीं दी। यह सरकार की जिम्मेदारी थी। हमारे फ्रट लाईन के नेता माननीय नंद कुमार पटेल जी इस सदन के सम्माननीय सदस्य थे। अगर सरकार उनको सुरक्षा दी होती तो आज वे हमारे बीच होते। शहीद दिनेश पटेल जी का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था। वे परिवर्तन यात्रा में अपने पिता जी के साथ गये थे, आखिर राजनीति होता क्या है, उन्होंने यह समझने का प्रयास किया था। सभापति जी, जब झीरमघाटी की घटना घटी थी, उनको पूछ-पूछकर मारा जाता है। यहां तक कि शहीद महेन्द्र कर्मा जी को भी नक्सली नहीं पहचानते थे। उन लोगों को भी पूछ-पूछकर मारा गया। शहीद दिनेश पटेल जी, जिनका किसी से कोई लेना-देना नहीं था, उनको भी पूछकर मारा गया। आज इस सदन में हमारे शहीद परिवार के दो सदस्य हैं। मंत्री उमेश पटेल जी और श्रीमती अनिता शर्मा जी, आप उनसे पूछ लीजिये कि उनके दिल में क्या गुजरता है। इतनी बड़ी घटना होने के बाद ये कहते हैं कि बदलापुर की राजनीति है। आपने बदलापुर की राजनीति तो हमारे नेताओं के साथ किया है, इसको कहते हैं बदलापुर की राजनीति। आज हमारे साथी विक्रम मण्डावी जी को पूछिये कि जो इस सदन में बीजापुर से सदस्य हैं। वे कपड़ा उतारकर बनियान के साथ जमीन पर लेट गए और अपने आप को ड्रायवर घोषित किए, आज वे इस सदन के सदस्य हैं। आप उनसे आंखों देखा हाल पूछ लीजिये। जिनके ऊपर यह घटना बीती है, उस परिवार के साथ पूछ लीजिये। माननीय सभापति महोदय, हम इस पवित्र सदन में देखते हैं कि सी0बी0आई0 की बात होती है, जांच होती है। हमने इस पवित्र सदन में सी0बी0आई0 जांच की बात की, मगर जब यह बात ऊपर जाती है, हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी सी0बी0आई0 जांच को प्रभावित करते हैं। केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। उस मामलें में सी0बी0आई0 जांच कराने की बात नहीं करते हैं। हम शुरू से कहते आ रहे हैं कि हमारे नेताओं की साजिश करके हत्या की गई है। हमारे प्रदेश अध्यक्ष, वर्तमान में हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को सी0बी0आई0 ने फंसाने का प्रयास किया है। जब महीने-दो महीने के अंदर हमारे मुख्यमंत्री जी के विरूद्ध के मामले सी0डी0 काण्ड में सी0बी0आई0 की जांच हो सकती है। मगर हमारे 32 नेताओं, जवानों की हत्या की, उसकी सी0बी0आई0 जांच करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता है। आज बदलापुर की राजनीति की बात करते हैं, इसी को बदलापुर की राजनीति कहते हैं। सरकार में बैठे लोग सी0डी0 बनवाते हैं

.......जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\d19\2.15-20

जारी....श्री मोहन मरकाम :- बदलापुर की राजनीति । सरकार में बैठे लोग सी.डी. बनवाते हैं और आरोप हमारे नेताओं पर लगाते हैं । भाई अटल श्रीवास्तव एवं अन्य साथियों को, राष्ट्रीय पार्टी के कांग्रेस कार्यालय में घुसकर डा. रमन सिंह के सरकार की पुलिस निकालकर मारती है । ये नहीं है बदलापुर की राजनीति ? माननीय सभापति जी, भूपेश बघेल जी के पैतृक जमीन, जो पट्टे की जमीन है, जो पीढ़ियों की जमीन है, उनको बरसात में जाकर नहीं नापा जाता, राजस्व विभाग का निर्देश रहता है, सरकार का निर्देश रहता है, उसके बाद भी बरसात में जाकर उनकी पैतृक जमीन को नपवाते हैं । हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की बूढ़ी मां के द्वारा विधिवत् नियम प्रक्रियाओं के तहत जमीन खरीदकर मकान बनाया जाता है, उसके बाद भी ए.सी.बी. कार्यालय में बुढ़ी मां को लाकर उनके मकान को कितने बार नपवाया जाता है, ये बदलापुर की राजनीति नहीं है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, कौन से मोशन में क्या बात हो रही है, ये दूसरी बार के विधायक हैं, नये विधायक नहीं हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारे राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल के पट्टे की जमीन को कितने बार नपवा लिया गया, ये बदलापुर की राजनीति नहीं है ? आप किस सुचिता की बात करते हैं ।

श्री दीपक बैज :- मोहन भैया, इस बदलापुर में आपके ऊपर कितने बार एफ.आई.आर. हुआ, ये तो बता दीजिए । हमारे कई सदस्यों के ऊपर इतने गंभीर आरोपों के साथ प्रकरण दर्ज हैं ।

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, आपको बोलते हुए 20 मिनट हो गए हैं, कृपया समय का ध्यान रखें ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, मैं तीसरा वक्ता हूं, मुझे आपका संरक्षण चाहिए । मैं 10-15 मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूं । ये नहीं है-बदलापुर की राजनीति । आज हमारे मंत्रियों के ऊपर, मुख्यमंत्री के ऊपर जिस ढंगसे आपकी सरकार ने कार्यवाही की..

श्री दीपक बैज :- सभापति महोदय, बदलापुर की पूरी तैयारी करके आये हैं।

श्री मोहन मरकाम :- अगर हम कोई जांच कराना चाहते हैं तो आपमें इतनी फड़फड़ाहट क्यों है ? हमारे पूर्व मंत्रियों को, पूर्व मुख्यमंत्री को इतनी फड़फड़ाहट क्यों हो रही है ? अगर आपने कुछ गलत किया होगा तो आपको जो भी आरोप हैं, आपको भुगतने के लिए तैयार रहना पड़ेगा ।

सभापति महोदय :- मरकाम जी, कृपया समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, डॉ. रमन सिंह जी की सरकार आदिवासियों की हत्या कराने के आरोप से नहीं बच सकती । बस्तर में अगर सबसे ज्यादा पलायन हुआ है, बस्तर के

लोगों की हत्या हुई है तो कहीं न कहीं दोषी डा. रमन सिंह की सरकार है । मड़कामहिड़के कोंटा से अंदर गांव की है, उसकी शादी हुई थी, दूसरे दिन अपने मायके पहुंची थी, उसकी मेहंदी भी हाथ से खतम नहीं हुआ था, उसके साथ बलात्कार होता है, उसकी हत्या होती है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मोहन भाई, ये जो बार-बार बदलापुर-बदलापुर बोल रहे हैं, अगर बदलापुर की ही बात है तो एक से दो कैसे हुआ, इस बात की भी जांच हो जाए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मरकाम जी, ये सब चीज को अभिभाषण में है ही नहीं । आप अभिभाषण के बारे में बोलिए न । हम ये किताब निकालकर बैठे हैं, आप अभिभाषण में बोल रहे होंगे, आप मडकापुर और क्या-क्या पुर पहुंच रहे हैं, उसको हम लोग क्या जानेंगे ?

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, डॉ. रमन सिंह जी ने जो बातें कही है, मैं उसका जवाब दे रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति जी, इनको बाहर भेज दीजिए, गृहमंत्री जी से बात कर लें, इधर जितना मुकदमा बनवाना है, बनवा लें । जितना मुकदमा बनवाना है, बनवा लें ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, मीना खलको महुआ बीनने जाती है, उसकी डा. रमन सिंह की सरकार न्यायिक जांच कराती है, न्यायिक जांच करने के बाद आरोप तय होते हैं, उसके बाद भी कार्यवाही नहीं होती ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मोहन भाई, बदलापुर में एक से दो रहते, उसकी भी जांच करा लेते, लेकिन उसका जवाब दो तो कैसे दो हो गया ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति जी, चेन्नागेनूर, बेदागेनूर में हमारी बहनों के साथ क्या होता है, उसकी जांच पिछली सरकार ने नहीं की ।

श्री दीपक बैज :- कौन से दो की बात कर रहे हैं, इधर भी दो-दो हैं ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\e10\02.15-02.20

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, सोनकुंवर, बिरजू पढ़ने वाले दो छात्र उनकी हत्या हो जाती है ।

श्री दीपक बैज :- कौन से दो की बात आप कर रहे हैं । इधर भी दो-दो हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, पिछली सरकार ने बस्तरवासियों का, छत्तीसगढ़वासियों का आह लगा है, इसीलिए बस्तर से लेकर सरगुजा तक सूपड़ा साफ हुआ है । सभापति जी, आपका संरक्षण चाहिये । मैं 5 मिनट में अपनी बात करना चाहूंगा । आज राज्य के वन संसाधन,

खनिज संसाधन, जल संसाधन, मानव संसाधन का उपयोग करके ज्यादा से ज्यादा कार्य हमारी सरकार करेगी । रोजगार के अवसर मिलेंगे । माननीय सभापति महोदय, आपने देखा होगा कि चाईना में विश्व की सबसे ज्यादा जनसंख्या है । विश्व का सबसे दूसरा विकसित देश जापान, जहां दूसरे विश्वयुद्ध के हिरोशिमा नागाशाकी में बम से हमला हुआ । वहां के लोगों ने संकल्प लिया कि हम विश्व के लोगों को दिखा देंगे, आज विश्व का चौथा विकसित देश है । आज हमारे छत्तीसगढ़ के संवेदनशील मुख्यमंत्री जी ने संकल्प लिया है कि यहां के मानव संसाधन का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करके छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनायेंगे । माननीय सभापति जी, हमारी सरकार भिलाई स्टील प्लाण्ट जैसे जो बड़े उद्योग खोलकर हमारे देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की एक सोच थी, उसी सोच के तहत छत्तीसगढ़ के लाखों लोगों को रोजगार मिला । मगर साल की डॉ. रमन सिंह की सरकार के कई अनुबंध हुये, उसके बाद एक भी उद्योग नहीं लग पाया । माननीय सभापति जी, लघु वनोपज के तहत हमारी सरकार जहां छत्तीसगढ़ में 80 लाख वनवासी भाई हैं, लघु वनोपज की कीमत जो 25 सौ रूपये था, उसे 4000 रूपये कर दिया गया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूँ कि मोहन मरकामा जी के लिए एक आवेदन प्राप्त हुआ है, एक एसआईटी गठित होनी चाहिये कि एक से अधिक दो कैसे हो गयी । यह जानकारी आप दे दें ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- मोहन भाई आप इसकी चिन्ता मत करो, आप जो बोलना है, बोल लो ।

श्री मोहन मरकाम :-माननीय सभापति जी, हमारी सरकार पत्रकारों, वकीलों और डॉक्टरों के संरक्षण हेतु ......।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, यह सरकार कितनी गंभीर है, आप जरा दाहिनी ओर तो देखिये । आगे की सब कुर्सियां खाली है, एक भी उच्च अधिकारी यहां पर नहीं है । अब यहां किसको सुनाने के लिए बैठे हैं । 80 परशेंट मिनिस्टर नहीं है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- हम लोग तो बैठे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- जिम्मेदार मंत्री बैठे हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपसे तो बात कर नहीं रहा हूँ । मैं सभापति जी से बात कर रहा हूँ । आप सभापति तो है नहीं । आपको बोलने का कोई महत्व तो है
नहीं । आप बोल सकते हैं, आप मंत्री हैं । इसलिए आप बोलें । मंत्रिमण्डल में सारे मंत्री 10 लोग नहीं है । सब गायब हैं । अधिकारी है नहीं। अध्यक्ष महोदय, यहां किससे बात करें, बताईये । आप कितना सुनेंगे । पहले आप सदन की कार्यवाही स्थगित करिये और सब मंत्रियों और अधिकारियों को बुलवाईये ।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार त्रिस्तरीय पंचायत राज संस्थाओं को ग्रामीण विकास का केन्द्र ......।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय सभापति महोदय, हम लोग यहां दो-दो मंत्री बैठे हैं, पूरी जिम्मेदारी के साथ बैठे हैं, आपकी पूरी बात को सुना जा रहा है और पूरी जिम्मेदारी हम लोग लेते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह गैलरी खत्म कराईये । यहां पर पब्लिक जो आती है, वह बाहर में खड़ी रहती है । जब आ ही नहीं रहे हैं तो पब्लिक को बैठाओ । क्वेश्चन देने के लिए, चिट देने के लिए भले ही वे लोग बैठ जायेंगे ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- पब्लिक के प्रतिनिधि यहां बैठते हैं । उधर आपको पब्लिक आपको देख रही है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- पब्लिक को बाहर खड़ा होना पड़ता है । 20 लोगों की सीट है, वहां नहीं आ रहे हैं तो वहां पब्लिक बिठाओ । आप बोल रहे हो कि दो मंत्री पर्याप्त है तो कुर्सी खाली क्यों रखे हो ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारी सरकार त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं को ग्रामीण विकास का केन्द्र बनायेगी और सुनियोजित करेगी कि इन संस्थाओं की स्वायत्ता बनी रहे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तो पूरे पैसे वापस हो रहे हैं, अध्यक्ष महोदय । कहां इधर-उधर की बात में इतना लंबा खींच रहे हो ।

श्री मोहन मरकाम :- इन्होंने ठेका प्रथा शुरू कर दिया था । पंचों और सरपंचों का जो अधिकार था, उस अधिकार को भी इन लोगों ने समाप्त कर दिया था ।

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, कृपया समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- इसलिए हमारी सरकार, जो पंचायतों की स्वायत्ता है, वह बनी रहेगी, पंचायतों को हम ज्यादा अधिकार देंगे, पंचायतों को ज्यादा से ज्यादा काम देंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- किस प्रकार का अधिकार देंगे, बताओ । क्या अधिकार दोगे ।

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- बिना कमीशन दिये कुछ काम नहीं होता था । यह क्यों भूल रहे हैं । आपके राज में बिना कमीशन दिये काम नहीं होता था । हम पंचायतों को अधिकार सम्पन्न बनायेंगे ।

सभापति महोदय :- समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- ज्यादा अधिकार देंगे। माननीय सभापति जी, हमारी सरकार महिलाओं को स्वावलंबन, सम्मान और सुरक्षा प्रदान करेगी।

श्री मिश्रा

श्री अजय चन्द्राकर :- अधिकार संपन्न करेंगे, इनकी स्थिति नहीं है कि कौन सा अधिकार संपन्न करेंगे। इनसे यह बोलवा दीजिए कि अगले बजट सत्र में हम चांद में आदमी भेजेंगे, बोलने में क्या लगता है।

श्री मोहन मरकाम :- थोड़ा सा सुन तो लीजिए।

श्री अरूण वोरा :- चन्द्राकर जी, आप भाग्यशाली हैं कि जो आप 15 लोग चुनकर आये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अरूण वोरा जी, आप बिनाका के भूले बिसरे गीत हो। आप फरमाईस में भी नहीं बजोगे।

श्री अरूण वोरा :- ये आपकी सबसे बड़ी भूल है। अब आपको समझना चाहिए कि सच्चे दिन आ गये हैं।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार परंपरागत कृषि विकास की योजना की उन्नति के लिए काम करेगी, गाड़ा, खूंटा, कोदो, कुटकी, कोसरा, माड़िया, ज्वार, बाजरा जो आज वी.आई.पी. लोगों का भी भोजन है।

श्री अरूण वोरा :- मुझे आपने भूले-बिसरे गीत कैसे बोला यह बताईये ? अभी तो हम लोग ताजा तरीन गीत हैं।

श्री अरूण वोरा :- इसीलिए तो आप पर भरोसा नहीं किए ना। संकल्प लाये हो तो भी नहीं बनोगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप भूले बिसरे गीत पर आपत्ति मत करिये। आज भी भूले बिसरे गीत मधुर होते हैं और उसी को लोग याद रखते हैं। ये चलती क्या खंडाला को कोई याद नहीं रखता।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ की पुण्य भूमि भगवान रामचन्द्र के ननिहाल के साथ माता कौशल्या का जन्मस्थान है। हम इस छत्तीसगढ़ को भाईचारे के साथ पूरे देश में उन्नत, समृद्ध के साथ प्रगतिशील राज्य बनाना चाहते हैं। सभापति महोदय, आपने बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, चन्द्राकर जी सबके भाषण में छेड़ते हैं वजह क्या है?

श्री अमरजीत भगत :- इस सीट की तरफ देख लीजियेगा कि कौन-कौन बैठता है।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- मैं चाहता था कि जिस समय मैं बोलना शुरू करूं इस सरकार के (xx)[5] सहकारिता मंत्री उपस्थित रहते तो मुझे बोलने में अच्छा लगता।

श्री दीपक बैज :- माननीय सभापति महोदय, इसे विलोपित किया जाए।

सभापति महोदय :- (xx) विलोपित किया जाता है।

(xx)[5] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, (xx कैसे असंसदीय हो गया।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, (xx) हैं तभी तो जनता ने आपको इधर बैठा दिया। आपको प्रमाण पत्र देने की जरूरत नहीं, जनता ने प्रमाण पत्र दे दिया है, आपको प्रमाण पत्र देने की जरूरत नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैंने संसदीय शब्दावली पढ़ी है, यदि कोई सहकारिता मंत्री, सहकारिता के नियम को नहीं जानता, शायद उसी स्थिति के कारण वह सदन से बाहर हैं। मैं भाषण अभी रोक सकता हूं, मैं इस सरकार से पूछना चाहता हूं कि अधिनियम में ऐसे कौन से नियम निर्देश हैं।

श्री अमरजीत भगत :- आप हमेशा (xx) करते हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सर्टिफिकेट जनता देती है भैय्या और जनता ने सर्टीफिकेट दे दिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय शिव कुमार डहरिया जी के बारे भर में कोई टिप्पणी नहीं कर सकता। माननीय सभापति महोदय, जितनी टोकाटाकी हो, होनी चाहिए। आप समय की घंटी भर मत बजाईयेगा। जितने घंटे हो, 15 साल की बात हो, 15 साल करेंगे।

श्री अमरजीत भगत :- जैसे बोये हो वैसे ही तो काटोगे।

श्री बृहस्पत सिंह :- 15 साल की भड़ास अब निकालेंगे क्या?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आपने कहा कि बहुमत में हैं, मैं बहुमत से बात शुरू कर देता हूं। हो सकता है तब तक कोआपरेटिव मिनिसटर आ जाएं तब मैं अपनी बात करूंगा। मुझे कर्जमाफी भर में बोलना है। छत्तीसगढ़ के संसदीय इतिहास के सबसे छोटे ..

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\e12\02.30-02.35

श्री अजय चंद्राकर :- छत्तीसगढ़ के संसदीय इतिहास के सबसे छोटे राज्यपाल जी के अभिभाषण से स्पष्ट हो जाता है कि इस सरकार के पास दिशा, दृष्टि सोच सबका अभाव है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, लेकिन छोटे भाषण में बड़े काम हुए हैं साहब। छोटे भाषण में बड़े काम हुए हैं, पूरे छत्तीसगढ़ के किसानों का कर्जा माफ हुआ।

श्री अजय चंद्राकर :- पहले ये कन्फर्म कर लो कि माननीय मुख्यमंत्री जी अंदर फोटो देख रहे हैं कि नई देख रहे हैं। तब जी आर पी बढ़ेगी, समझ रहे हो ना मेरे को कोई प्रभाव नई पड़ना है उससे।

श्री अमरजीत भगत :- सरकारी खर्चे से फोटो नई लगे साहब।

सभापति महोदय :- बृहस्पति सिंह जी बैठिए। माननीय सदस्य को अपनी बात रखने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को, उनके मंत्रिमंडल के सभी माननीय सदस्यों को पहले दिन भी मैंने बधाई देते हुए कहा था चूंकि आज गवर्नर पहले गवर्नर

एड्रेस में बहस शुरू हुई। सभी सम्माननीय सभी पक्ष के विधायकों को बधाई देता हूं और भारतीय जनता पार्टी के सदस्य होने के नाते जनादेश को हम स्वीकार करते हैं। ये कोई बहादुरी नहीं है। यदि लोकतंत्र को ये समझते हैं, संसदीय प्रणाली को ये जानते हैं, थोड़ी एकात चीजें पढ़े होंगे जो 2,3 खड़े होते हैं तो लोकतंत्र में काई जीतता हारता नहीं मानते। लोकतंत्र में जनता जीतती है और सारे अधिकार लोकतंत्र में जनता के हाथ में निहित है और 1980 में जब भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ और आज 2019 तक छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में जो हमारा पुराना राज्य था 15 साल राज करने का यदि रिकार्ड है तो भारतीय जनता पार्टी के नाम पर है। बड़े बड़े लोग आये, बड़े बड़े लोग ये रिकार्ड नहीं बना पाये लेकिन उसके बाद हमें आना पड़ा ये हमने मान लिया लेकिन इस जनादेश के पीछे एक कारण और है, मैं स्वीकार करने के बाद एक बात बोल रहा हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- ऐसा कौन सा कर्म किये जो 15 सीट में सिमट गये। 15 साल राज करने के बाद 15 सीट में सिमट गये।

सभापति महोदय :- कृप्या व्यवधान न करें, जारी रखें।

श्री अजय चंद्राकर :- जितना टोकना लो। माननीय सभापति महोदय, नंदनी सुंदर कोरेगांव भीमा के हिंसा के बाद जिन पांच लोगों को निरूद्ध किया गया उसमें नंदनी सुंदर भी एक थी। जनादेश के पीछे जो सोच, छत्तीसगढ़ के लिए जो सोच काम कर रही है बहुत जो उत्तेजित है साहब जो हमको मिला है, ठीक है साहब लेकिन उनके पीछे और कौन सी ताकतें हैं। उस लेख को मैं उद्घृत कर देता हूं और यदि चाहे तो मैं गृहमंत्री जी को पढ़ने के लिए दे दूंगा।

श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\e13\02.35-02.40

जारी श्री अजय चन्द्राकर :-मसलन यह तथ्य की कांग्रेसी उम्मीद्वारों को उन्होंने दूरस्थ गांवों में प्रचार करने की ईजाजत दी, इस बात का संकेत माना जा सकता है कि माओवादी किस किस्म की वार्ता के लिए तैयार हैं वे बहुत बड़ी मूर्खता करेंगे अगर वे बातचीत के जरिए शांति स्थापित करने का ये मौका यूंही हाथ से नहीं जाने देंगे। स्पष्ट साबित है कि नक्सलियों ने कांग्रेस के उम्मीद्वारों को अंदर तक प्रचार करने के लिए मौका दिया और इसीलिए जो नक्सल डी.जी. बनाया गया है वह काम चलाऊ बनाया गया। पहला समझौता पहले निर्णय में दिख गया कि साहब ....(व्यवधान)

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- माननीय अजय चन्द्राकर जी, ये सूचना आपको सार्वजनिक रूप से मिली है या गुप्त रूप से ? (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, ये घोर आपत्तिजनक है।

श्री दीपक बैज :- ये तो सिर्फ पेपर है आप प्रूफ दिखाईये। आज भी बहुत सारे नेता, विधायक प्रचार करने तक नहीं गये हैं। ये पेपर पढ़कर बता रहे हैं। (व्यवधान) ये गलत है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, ये घोर आपत्तिजनक है। ये नक्सलियों से इनकी 15 सालों में क्या सांठ-गांठ हुई? (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- माननीय सभापति महोदय, इनकी सांठ-गांठ रही। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग बैठिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, ये पेपर दिखा रहे हैं हम लोगों ने पेपर नहीं पढ़ा। (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- माननीय सभापति महोदय, ये गलत है।

श्री अमरजीत भगत :- ये इधर रहते हैं तो दूसरी बात करते हैं और उधर रहते हैं तो दूसरी बात करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, दूसरी बात कांग्रेस के स्टार प्रचारक देश के प्रमुख नेताओं में से एक ..।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय चन्द्राकर जी, हमारी भी बात सुन लीजिए।

सभापति महोदय :- माननीय अमरजीत जी बैठिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, मीना खलको हत्याकांड में एक आदिवासी बालिका की हत्या हो गई, एक तरफ उसको नक्सली बोलकर के उसको गोली मार दी गई और दूसरी ओर सरकार की तरफ से उसको मुआवजा दिया गया। ये क्या बात कर रहे है। आपको दो तरह की बात शोभा नहीं देती।

श्री अजय चन्द्राकर :- कांग्रेस के स्टार प्रचारक देश के प्रमुख नेताओं में से एक ने खुद नक्सलियों को कहा कि ये क्रांतिकारी है ये कांग्रेस की नीति है।

माननीय सभापति महोदय, माननीय मोहम्मद अकबर भईया कॉपरेटिव को बहुत अच्छे से जानते हैं उनको समर्पित करता हूँ।

सभापति महोदय :- माननीय अमरजीत जी बैठिए।

श्री अमरजीत भगत :- मीना खलको काण्ड में आपको मालूम होगा कि वह पुलिस की गोली से मारी गई थी और मरने के बाद आप ही की तरफ से मुआवजा दिया गया । उसमें आप दो तरह की बात करते हैं मीना खलको को क्यों मारा गया आप बतायें। आपने बाद में मुआवजा दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :-आप बोल लीजिए।

सभापति महोदय :- चलिए, अपनी बात रखिए।

श्री अमरजीत भगत :- मीना खलको के बारे में जरूर बताईयेगा कि उसको क्यों मारा गया और सरकार की तरफ से क्यों मुआवजा दिया गया ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय,यहां कॉपरेटिव मिनिस्टर है नहीं। कर्जे पर बहुत बात हो रही है कांग्रेस अपनी इतनी पीठ थपथपा रही है कर्जा को लेकर, जैसे हम लोगों को कुछ समझ में नहीं आ रहा है पहला मैं यह जानना चाहूंगा कि सरकार को कॉपरेटिव एक्ट के किस धारा के तहत सोसाटियों को निर्देश देने का अधिकार है मैं चाहूंगा कि मुख्यमंत्री इसमें उत्तर दें कि इस एक्ट के किस धारा के तहत सोसाटियों को निर्देश देने का अधिकार है मैं चाहूंगा कि मुख्यमंत्री इसमें उत्तर दें कि इस धारा के तहत ये वित्तीय निर्देश सोसायटियों को दिये जा सकते हैं या आप नगद या लिकिंग के पैसे वापस खाता में जमा करिये। कोई भी । आपके सचिव अफसर बैठे हैं मंगवा लीजिए, मैं भाषण रोक सकता हूँ कल उत्तर ले सकता हूँ । दूसरी जो महत्वपूर्ण बात है कॉपरेटिव मिनिस्टर माननीय मोहम्मद अकबर जी को बता देता है कि छत्तीसगढ़ ने बैद्यनाथन कमेटी की रिपोर्ट स्वीकार की। बैद्यनाथन कमेटी की रिपोर्ट.....।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय सभापति महोदय, माननीय चन्द्राकर जी, आप किस धारा के तहत किसानों से प्रिमियम की राशि काटे, ये पहले बता दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- जब छत्तीसगढ़ सरकार ने बैद्यनाथन कमेटी की रिपोर्ट स्वीकार की तो उसमें कर्जा माफी है या नहीं है? और यदि कर्जा माफी नहीं है तो बैद्यनाथन कमेटी की रिपोर्ट की अनुसंशाओं से कितने पैसे प्राप्त किये ?

श्री अमरजीत भगत :- आप कर्जा माफी के पक्ष में है या खिलाफ में है ये बता दीजिए? और यदि खिलाफ में है तो आप कोर्ट में जाईये ? हम लोगों ने कर्जा माफी कर दी। यदि आप किसानों की कर्जा माफी के पक्ष में नहीं है तो आप कोर्ट जाईये। आपका चेहरा स्पष्ट हो जाएगा कि आप किसानों के पक्ष में है या खिलाफ में है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आज इस सरकार में एस.आई.टी. बनाने का एक चलन आ गया है। एक एस.आई.टी. बननी चाहिए कि किस-किस मामले में एस.आई.टी. बनानी है। मैं पूरी निष्ठा से ह्दय की गहराईयों से जो झीरम में क्षति हुई, वह हम सब की क्षति थी ......

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\e14\02.40-02.45

पूर्व जारी.. श्री अजय चन्द्राकर :- वह हम सबकी क्षति थी, प्रदेश की क्षति थी। राजनीतिक जीवन में जो काम करते हैं, उस क्षति को सबने महसूस किया। उमेश पटेल जी बहुत नौजवान हैं, उन्होंने बहुत

मजबूती के साथ परिवार से लेकर राजनीतिक विरासत को संभाला, हम उसकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन अब वह मंत्रिमंडल के सदस्य हैं, मैंने इस कांड का राजनीतिक उपयोग कभी नहीं किया। लेकिन एन.आई.ए जांच, जस्टिस प्रशांत मिश्रा आयोग की जांच और मैंने गृहमंत्री के तौर पर उधर घोषणा की थी इसकी सी.बी.आई. जांच करायेंगे। मैं भाई उमेश पटेल जी और सभी शहीद लोगों के लिए संवेदना व्यक्त करते हुए.. ।

श्री अमरजीत भगत :- आप हमारे प्रश्न का जवाब ही नहीं दिये। हमने आपसे कर्जमाफी में प्वाईन्टेड प्रश्न पूछा, आपने आपत्ति किया। हमने पूछा कि आप कर्ज माफी के पक्ष में हैं या खिलाफ में हैं ? खाली आप एक लाईन बोल दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी बात हो गई। अब वह मुझे कभी सदन में, व्यक्तिगत तौर पर, प्रेसवार्ता लेकर ये बतायें कि एस.आई.टी. जांच बड़ी है या वह तीनों जांच बड़ी है और किसमें फैक्ट एण्ड फाईन्ड सामने आयेंगे, मैं उनके ऊपर छोड़ता हूं ? ये एक भावनात्मक तरीका है कि एस.आई.टी. जांच करेंगे। जितनी एजेन्सियां जांच कर रही हैं, अब आपके पास सरकार है। दूसरी महत्वपूर्ण बात सभापति जी, जब मैंने एक बात कही कि एस.आई.टी. के लिए एस.आई.टी. बनाई जाये कि किन-किन चीजों में एस.आई.टी. बनाई जाये। मैं अभी चुनौती दे रहा हूं। एक एस.आई.टी. एक घंटे के लिए बना दीजिए, आप चलिये।

श्री अमरजीत भगत :- आपकी पहली चुनौती समाप्त नहीं हुई है, आप इस्तीफा देने वाले थे, उस चुनौती का क्या होगा, इसके बाद आगे बढ़िये। आप बोले कि अगर कर्जमाफी और 2500 रुपये करेंगे तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। आप उसी चुनौती को नहीं पूरा किये हैं तो आप क्या आगे बात करेंगे।

सभापति महोदय :- माननीय अमरजीत जी, कृपया आप बैठिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- लेकिन आप तो हर मिनट में खड़े हो रहे हैं तो ऐसे में कैसे चलेगा ? आप तो सीनियर हैं, आप मदद करिये न। हम लोगों को दो शब्द बोलने दीजिए, आपकी कृपा की जरूरत है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय सभापति महोदय, इसी सदन में वर्ष 2016 के बजट सत्र में हम लोगों ने झीरम घाटी की सी.बी.आई. से जांच कराने की मांग की थी, चन्द्राकर जी, आपने गृहमंत्री की हैसियत से जांच कराने के लिए टेबल ठोककर बोला था, 2017, 2018 बीत गया, आपके कार्यकाल में दो साल रहा, उसी सी.बी.आई. जांच का क्या हुआ ? आपको रिपोर्ट देनी चाहिए थी। उसका रिजल्ट क्या निकला ? आप सदन को बताईये। उमेश पटेल जी का जिक्र किये हैं। वह खुद बैठे हुए हैं, मैं भी उसी जिले से आता हूं।

सभापति महोदय :- आप कृपया बैठें। माननीय सदस्य जी को अपनी बात रखने दीजिए।

खाद्य मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- आपने अभी यह कहा कि एन.आई.ए. की जांच सही है, सी.बी.आई. की जांच सही है, क्या इन दोनों से बड़ी एस.आई.टी. है? आप मूल बातों पर नहीं गये। ये

विशुद्ध रूप से नक्सली वारदात थी या इसके पीछे कोई साजिश थी ? ये बिन्दु आपके आयोग में भी नहीं है। हम लगातार मांग करते रहे, लेकिन इसको शामिल नहीं किया गया। एन.आई.ए. ने भी इस बिन्दु में जांच नहीं किया। जब आप एन.आई.ए. की रिपोर्ट पढ़ेगे तो उसमें ये लिखा हुआ है कि नक्सली इस प्रकार की वारदात वातावरण बनाने के लिए साल-दर-साल करते हैं। अब आप जब उसकी रिपोर्ट में आयेंगे तो उसमें लिखा है कि अत्याधुनिक हथियारों से लैस होकर वारदात किया गया, इतने लोगों की मौत हुई। जब अपराधियों को पकड़ा गया तो भरमार बन्दूक के साथ पकड़ा गया। ये सब कारण हैं जिसके कारण संतुष्टि नहीं हैं और इस कारण एस.आई.टी. की जरूरत है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो प्रश्नोत्तर नहीं करूंगा, लेकिन माननीय विद्वान हैं, मैं इस बात को मानता हूं। लेकिन एक बात कहूंगा कि जस्टिस प्रशांत मिश्रा आयोग जांच कर रही है। सरकार के अधिकार क्षेत्र में है कि किसी भी विषय को वह जुड़वा सकते हैं। अब आप सरकार पक्ष में बैठे हैं, आप जो विषय में जुड़वाना है, जुड़वा लीजिए। उसमें कोई आपत्ति नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि आप एक एस.आई.टी. एक, दो घंटे के लिए बना दीजिए। एस.आई.टी. प्रचलन मे है, मैं अभी एस.आई.टी. की और मांग करूंगा। सोसायटी में मैं, मोहम्मद अकबर जी या उसमें से किसी भी सदस्य..... (जारी)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\e15\02.45-02.50

जारी...........श्री अजय चंद्राकर :- सोसायटी में मैं श्री मोहम्मद अकबर जी या उसमें से किसी भी सदस्य जो इस सदन में चारनभाट की परंपरा, वीरगाथा काल की नहीं है चारनभाट की परम्परा, कोई बोल रहा है 25 रूपये किलो धान बिक रहा है, कोई और कर्जा माफी हो गया ऐसा बोल रहा है यानी एक-एक कदम आगे बढ़ रहे हैं कि तुरंत मंत्री पद मिल जायेगा करके । जिस सोसायटी को आप नामांकित कीजिये, कोई भी अननोन किसान के घर चलते हैं उसकी ऋण पुस्तिका लेते हैं, उस ऋण पुस्तिका में सोसायटी से नोड्यूज या ऋणमाफी लिखी है क्या ? इसमें से कौन जायेगा आप तय कर दीजिये, 1 घंटे में रायपुर के आजू-बाजू किसी भी सोसायटी में चल देते हैं । सोसायटी ने जो नगद या लिंकिंग का पैसा वापिस किया है, आपको सोसायटियों को निर्देश देने का अधिकार नहीं है, सोसायटी ने आज तक चाहे जितने पैसे की, मैं आंकड़े में नहीं जाना चाहता, उसमें किसी भी किसान का नोड्यूज नहीं है और जो कल बात आयी, कोई ऋणमाफी नहीं है, जो कल बात आयी । आज की तारीख में छत्तीसगढ़ में अराजकता की स्थिति सब क्षेत्र में है और उसको गिना देता हूं । एक अराजकता यह है कि स्थानीय संस्थाओं में टैक्स, अभी माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि कोई बिजली का बिल नहीं पटा रहा

है, कोई बैंक लोन दे नहीं रहा है, कोई भी चीजें जो व्यक्ति के पास हैं छत्तीसगढ़ में वह सब माफी का इंतजार कर रहे हैं और अब सरकार पीठ थपथपा रही है ।

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- श्री अजय चंद्राकर जी, एक-एक मुद्दे को खत्म करिये । आप झीरम की बात कर रहे थे, मैं कहना चाहूंगी कि मेरा भी भाई झीरम में घायल हुआ था, मैं जानना चाहूंगी कि 5 साल में यदि किसी को भी न्याय मिल गया होता तो एस.आई.टी. नहीं बैठायी जाती, न्याय नहीं मिला इसलिये एस.आई.टी. बैठायी जा रही है । (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि केवल क्रिमिनल पार्ट में ही जांच कर रही है अभी तक, अभी तक जितने आयोग और जो एन.आई.ए. है वह केवल क्रिमिनल पार्ट की जांच कर रही है, षड़यंत्र की जांच नहीं हो रही है कि षड़यंत्र रचने वाले कौन थे । नक्सली वारदात की केवल जांच हो रही है, षड़यंत्र की जांच नहीं हो रही है, सुरक्षा में चूक करने वालों को सजा नहीं दी गयी है, उनकी जांच नहीं हो रही है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी का कांग्रेस कार्यालय में फोटो आया है गंगा जल पिये हैं, पूरा कर्जा माफ किये हैं, करेंगे, गंगाजल पीये थे या कोई और चीज पीये थे यह भी सदन में आना चाहिए और जो कर्जा माफी किये थे उसकी परिभाषा क्या थी ? श्री राहूल गांधी जी ने क्या बोला था, कौन सी परिभाषा थी ? और यदि यह बात सच है कि 10 दिन में कर्जा पूरा माफ नहीं होगा या होता है या नहीं होता है तो फिर मुझे नीति-नियम का उपयोग करना पड़ेगा कि वह उसी बुद्धि में बोल गये कि 10 दिन में कर्जा माफ होगा और गंगा जल की जगह में कोई और चीज पिये थे, वह आबकारी मंत्री जी का फोटो वॉयरल हो रहा है, दो लोगों को आऊट ऑफ टर्न प्रमोशन देंगे, एक बना रहा है, एक उठा रहा है या तो फिर उसका उपयोग करके गंगाजल पिये होंगे यह हो सकता है । मैं फिर उस बात पर लौटता हूं कि मेरे साथ आप जिसको नियुक्त करेंगे, जो सोसायटी बोलेंगे, किसान को बुलायेंगे और उसका नोडयूज लिखा है क्या ? ऋणमाफी लिखा है क्या यह देखेंगे। अब मेरा विषय था ।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- वे जो बोल रहे हैं न हमारी श्री कवासी जी के लिये वह गंगाजल को इन्हीं लोगों ने गांव-गांव में दुकानों को चालू कराया है, छत्तीसगढ़ को बर्बाद करने के लिये हम तो शराबबंदी करने की बात कर रहे हैं, धीरे-धीरे होगा ।

श्री सौरभ सिंह :- क्या शराबबंदी हो गयी ?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैं शराबबंदी पर बोलूंगा ही नहीं, मैं कर्जामाफी पर एकाध-दो विषय पर बोलूंगा । जल्दी अपनी बात समाप्त कर रहा हूं चिंता मत करें । कांग्रेस पार्टी ने कर्जा माफी, बिजली बिल हाफ जितने थे, सपने दिखाये, मैं बोलूंगा नहीं । यह छत्तीसगढ़ के किसानों के साथ धोखा है, धोखा है, धोखा है । माननीय मुख्यमंत्री जी, कल दो लोगों का उदाहरण दे रहे थे । दिनांक 03.12 को एक किसान को नोटिस मिलता है, 1 लाख 20 हजार का ऋण है ब्याज सहित 1 लाख 37 हजार हो गया है । वसूली करें, यह बैंक का है और नहीं तो आपकी एफ.आई.आर. की जा

सकती है, नीलाम किया जा सकता है, आप अनुमति दें तो मैं प्रक्रिया के साथ पटल पर रखा सकता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, जो चीजें कही गयी, आज छत्तीसगढ की स्थिति यह है, बहुत लाख रूपये के क्लब में हम शामिल हो गये बोल रहे थे, बजट बढ़ गया बोल रहे थे, 10 हजार से ऊपर का जो आपका बजट आया है, अनुपूरक कौन सी दिशा में आप छत्तीसगढ़ को ले जाना जाना चाहते हैं, 98 प्रतिशत उसमें से राजस्व व्यय है, यह डेढ़ प्रतिशत पूंजीगत व्यय है । क्या आप अपनी पीठ थपथपा रहे हैं, आप अपने आपको किधर ले जाना चाहते हैं ? आप भी छत्तीसगढ़ के लोग हैं, जिम्मेदार लोग हैं ।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय सभापति महोदय, श्री अजय जी को थोड़ा सा ....

श्री अजय चंद्राकर :- आपके खोजवाने के लिये अभी मैं एस.आई.टी. बनवाउंगा । 2-3 दिन में आये हो, आपको खोजने के लिये एस.आई.टी. बनेगी ।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय सभापति महोदय, श्री अजय चंद्राकर जी को बोलिये कि वे जरा शांति से बोलें क्योंकि हमें इनकी तबीयत की भी चिंता होती है, वे बहुत ज्यादा उद्वेलित हो रहे हैं ।

...........श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\e16\02.50-02.55

श्री अमितेश शुक्ल :- सभापति जी, अजय चन्द्राकर जी को बोलिए कि वे शांति से बोलें क्योंकि हमें इनकी तबियत की भी चिंता होती है । बहुत ज्यादा उद्वेलित हो रहे हैं वे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा, इनके बारे में बोल देता हूं साहब ।

श्री अमितेश शुक्ल :- ये बहुत ज्यादा उद्वेलित हो रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने अमितेश शुक्ल जी से पूछा था कि आपने ताजमहल पिक्चर देखी है या नहीं देखी है ? उन्होंने कहा कि मैंने 4-5 बार देखी है । ताज महल पिक्चर में जब मुमताज महल मरती है तो एक सीन आता है कि सुबह जवान से सीधे बूढ़े हो जाते हैं । यानी उनके विछोह में जवानी से बुढ़ापा आ जाता है। मंत्री नहीं बने तो ये दोनों कांग्रेस के राजकुमार रात भर में पूरे खत्म हो गए । इनका बुढ़ापा आ गया । आप गिना रहे थे न कि आपका तीन पीढ़ी का संबंध है । आप एक पट्टा लटकाइए ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं फिर निवेदन कर रहा हूं कि ये जो उंगली दिखा दिखा कर बात कर रहे हैं, इनकी तबियत खराब हो जाएगी । हमको अभी 5 साल इनकी बात सुनना है । आपको 5 साल अपनी बात सुनाना है, ऐसे-ऐसे करोगे तो तबियत खराब हो जाएगी । अस्पताल चले जाओगे तो हम लोगों को आपको देखने जाना पड़ेगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप एक पट्टा लटकाइए ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मेरा रमन सिंह जी से आग्रह है कि वे थोड़ा शांत रहने को कहें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरे दादा मुख्यमंत्री थी, मेरे पिता जी तीन बार के मुख्यमंत्री थी, मेरे चाचा ईश्वरीचरण प्रसाद जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । मेरे चाचाजी 10 बार के सांसद थे और मैं (xx)[6] मांगने आया हूं । कृपा करके मुझे पहचान लीजिए । मैं उसी वंश का वारिस हूं, एकमात्र वारिस हूं । ऐसा तीन बार के संबंध में मैं दुहाई देने आया हूं । हो सकता है भाग्य खुल जाए ।

सभापति महोदय :- चलिए समाप्त कीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बस 5 मिनट और । ये बैठे हैं इनको भी मैं वोरा जी का पुत्र हूं और ओरिजनल हूं करके, डीएनए टेस्ट करवा लेना चाहिए, बोल देना चाहिए। बन जाएं तो बन जाएं ।

श्री अरूण वोरा :- सभापति जी, मैं जनता से चुनकर आता हूं, जनता के प्रति मेरी जवाबदेही है । मंत्री बनाना या नहीं बनाना, मुख्यमंत्री जी का विशेषाधिकार है । मैंने कभी नहीं कहा, मंत्री बनने कह चाहत मुझे कभी नहीं रही । जब समय आएगा तो अपने आप ही मुख्यमंत्री जी, मुझे मंत्री बनाएंगे ।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सभापति जी, मैं आसंदी से निवेदन करना चाहूंगा कि सदस्यों के लिए चाहे जो भी प्रयोग करें लेकिन (xx)[7] वाला शब्द विलोपित करें । अमितेश शुक्ल जी मंत्री रहे हैं, दो-दो, तीन-तीन बार के विधायक हैं । उनके लिए (xx) शब्द का प्रयोग ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी आपके लिए करने वाला हूं उपयोग ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- मेरे लिए जो कहना हो कह लेना, खुली छूट है आपको । लेकिन मोतीलाल वोरा जी का बेटा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कभी तो नहीं बने हैं, उसमें क्या बुराई है, उसमें क्या असंसदीय है । किताब निकालिए तो रोज विलोपित करवाते हैं, असंसदीय शब्दावली की ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- उनके नाम का उपहासजनक तरीके से प्रयोग न करें तो ज्यादा बेहतर है, ऐसा मेरा कहना है । बाकी उनकी संस्कृति में है जो कहना चाहें कहें, मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- ताम्रध्वज जी, ये इनकी जो पुरानी पृष्ठभूमि है उसी हिसाब से बात करेंगे । जैसा इनका पुराना इतिहास है उसके हिसाब से ही बोलेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय महोदय, माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, आपको समर्पित करके कुछ बात बोल रहा हूं । इधर-उधर की बात नहीं बोलूंगा । आसंदी के पास विचाराधीन है । माननीय वरिष्ठ नेता एआईसीसी के पिछड़ा वर्ग के राष्ट्रीय चेयरमेन, प्रदेश के स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य क्या-क्या बहुत सारी डिग्री है । तीन बार विधायक, सांसद रहे, अभी दुहाई दे रहे थे । नोटिफिकेशन के बाद राजिम पुन्नी मेला होगा, ऐसा बयान देते हैं । राजिम पुन्नी मेले का जो भी नाम है, हमने जो भी संशोधित

---

[6] **(xx) आसंदी के आदेशानुसार निकाला गया**

[7] **(xx) आसंदी के आदेशानुसार निकाला गया.**

किया, लेजिसलेशन से किया और लेजिसलेशन से ही उसका नाम बदल सकता है । क्या विधानसभा के चलते वे अध्यादेश लाएंगे ? या जब राजिम मेला शुरू होगा क्या उस समय तक ये कानून बना लिए होंगे ? जो नये मंत्री हैं या इस तरह के उतावले मंत्री हैं, जो सदन के चलते नीतिगत् बात कर रहे हैं ।

श्री अमितेश शुक्ल :- सभापति जी, इन्हें कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है । शंकराचार्य जी बोलते थे कुंभ नहीं है और इन्होंने उसे कुंभ बोलकर पांच साल चलाया, बाद में अर्धकुंभ करा । ये क्या बात करते हैं ?

श्री शैलेश पांडे :- सभापति महोदय, 15 वर्ष तक रमन सिंह जी की सरकार ने इसे कुंभ नाम दिया । धर्म को भ्रष्ट करने का काम किया गया । भ्रष्टाचार हुआ यहां पर। (व्यवधान) इस सरकार द्वारा शंकराचार्य जी जैसे लोगों का अपमान किया गया है। सनातन धर्म परम्परा का सत्यानाश कर दिया यहां पर । इस सरकार द्वारा शंकराचार्य जी जैसे लोगों का अपमान किया गया है । अगर हमारे मंत्री जी ने कहीं इस बात का विरोध किया और धर्म का साथ दिया तो इस बात को यहां विरोधाभासी बता रहे हैं, आपको तो उन पर नाज़ होना चाहिए, ताली बजाना चाहिए कि उन्होंने इस बात की तारीफ की है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बहुत सुंदर, बहुत सुंदर । आप पहली बार आए हैं इसलिए आपकी बात नहीं काटूंगा । अच्छा बोल रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, ...

--- श्री ठाकुर -

ठाकुर\09-01-2019\e17\02.55-02.60

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय सभापति जी, अमितेष जी विरोध कर रहे हैं। बृजमोहन जी के बाजू में सबसे ज्यादा मंच में बैठने का शौक अमितेष जी को ही रहता था और राजिम कुंभ कल्प शब्द माननीय शंकराचार्य जी के निर्देश पर ही संशोधन करके जोड़ा गया था आपकी जानकारी में ला दूं। माननीय शंकराचार्य जी सुझाव था था कि इसमें कल्प शब्द जोड़ो तो संशोधन किया गया था कल्प शब्द जोड़ने का ।

श्री अमितेष शुक्ल:- माननीय सभापति जी, मैं एक बात बताना चाहूंगा शर्मा जी ने जो मंच में बैठने की जो बात कही..........(व्यवधान) शंकराचार्य जी ने बोला कि शराब बंद कर दो। उसकी बात को आपने नहीं सुना। मैं तो मंच में बैठकर के चिल्लाता रहा। एक बात नहीं सुनी आप लोगों ने। ....व्यवधान।

सभापति महोदय:- माननीय अमितेष जी कृपया आप बैठें। जी आप अपनी बात रखें।

श्री अजय चंद्राकर:- मैं छत्तीसगढ़ के कलाकारों को प्राथमिकता प्राथमिकता दूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह:- एक मिनट। अध्यक्ष जी, सभापति जी, अनावश्यक बहस हो रही है इन्होंने ये तो कहा ही नहीं आप कुंभ की जगह में पुन्नी मेला क्यों रखा। ये प्रक्रिया की बात कह रहे हैं। जब सदन

का सत्र चल रहा है तो सदन के अंदर ही वो घोषणा होनी चाहए थी अब उसमें तीसरे चौथे दाएं बाएं से बात करने की जरूरत नहीं थी। इसका जवाब माननीय संसदीय मंत्री दे देंगे या माननीय मंत्री जी दे देंगे। अब वो कुंभ क्यों रखे या क्यों नहीं रखे ये बोलना ही नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर:- ये तो बोला ही नहीं हैं। हम तो नाम पर बहस कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, कुंभ पर जब मैं बात कर रहा था इस प्रदेश का संस्कृति मंत्री सांस्कृतिक रूप से निरक्षर व्यक्ति है इसलिए कि संस्कृति आदान-प्रदान से समृद्ध होती है और जब वो संस्कृति में जाएंगे तो वे समझेंगे कि नाम में क्या रखा है इसको किसने कहा है।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :-अब मैं कुछ बात कर रहा हूं। आपने संसदीय कार्य मंत्री का जिक्र किया था। आप बैठिए न। 2 मिनट बैठ जाइए। सभापति जी, विवाद ये नहीं है कि नामकरण क्यों हुआ और नामकरण होना चाहिए या नहीं होना चाहिए। आपने विशेषाधिकार लगाया। प्रिविलेज की सूचना दिया आसंदी को। आसंदी के पास तो वो विचाराधीन है और जब लाएंगे इस सदन में तो आपकी बातों का जवाब दिया जाएगा कि प्रिविलेज का बनता है या नहीं बनता है नंबर एक आपने विशेषाधिकार का प्रश्न अखबार में छपे किसी समाचार को लेकर को लगाया है। माननीय मंत्री के कथन या स्टेटमेंट या कोई प्रेस कान्फ्रेंस को लेकर कहीं कोई बात कही उसको लेकर नहीं लगाया है इसलिए आसंदी उसमें विचार करेगा पहली बात। आपने कहा सांस्कृतिक रूप से निरक्षर। ये अधिकार है आपको तय करने का। अरे, आपकी आलोचना पूरे प्रदेश में हुई। आपने करीना कपूर, करश्मिा कपूर, सलमान खान लाया। छत्तीसगढ़ के कलाकारों की उपेक्षा की गई। (मेजों की थपथपाहट) यहां के किसी कलाकार को वहां मंच में आप ठीक से सम्मान नहीं दे सकते। बात इस बात पर हो रही है और जहां कुंभ की बात है शंकराचार्य जी आये थे। उनकी बातों पर यहां बहस करने का मुद्दा है। आये हैं वहां हमारे द्वीपीठा ईश्वर भी है। हम भी गये हैं आपके साथ। गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य जी आये हैं हम भी गये हैं वहां साथ। इसमें क्या आपत्तिजनक है। हम अपने गुरूदेव भगवान के साथ धर्माचार्यों के साथ कहीं जाते हैं तो यहां यह बहस का मुद्दा नहीं है। लेकिन सवाल इस बात का है कि वो विरासत से पुन्नी मेला ही है। वो हजारों साल पुरानी परंपराएं हैं। रेत में आप करोड़ों रूपया खर्च करके भ्रष्टाचार करने के लिए कुंभ जैसा नाम आप दिये थे। बजट में प्रावधान किये। 5-5 10-10 करोड़ रूपया हर साल रेत में बहा दिये और उसके बारे में सरकार की नयी सोच हो सकती है तो उसमें बहस का मुद्दा क्या है और जहां तक विशेषाधिकार की बात आपने कही है आसंदी फैसला देगा बनता है या नहीं बनता है।

श्री शिवरतन शर्मा:-सांस्कृतिक विविधता। माननीय मंत्री जी संसदीय मंत्री जी वरिष्ठ है आप ये बता दीजिए कि नोटिफीकेशन के पश्चात् माननीय मंत्री की घोषणा उचित है क्या।

श्री रविन्द्र चौबे:- मैं बता देता हूं क्या विशेषाधिकार भंग की सूचना आसंदी को देने के बाद मुझसे जवाब चाहते हैं कि आसंदी से व्यवस्था चाहते हैं पहले ये बता दीजिए।

..........जारी श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\e18\03.00-03.5

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं बता देता हूँ। क्या विशेषाधिकारी भंग की सूचना आसंदी को देने के बाद मुझसे जवाब चाहते हैं या आसंदी से व्यवस्था चाहते हैं , पहले यह बता दीजिये ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने सांस्कृतिक निरक्षरता पर यह बात कही। मैंने आपको समर्पित किया था। मैं आपको विशेषाधिकार पर बोलता हूँ। सांस्कृतिक रूप से खुलापन, जिसको सांस्कृतिक साक्षरता कहते हैं, वह दिमागी खुलापन और उद्देश्यों में व्यापकता लाती है। मैं एक उदाहरण दे देता हूँ। बहस बहुत बड़ी होगी, लेकिन मैं संक्षिप्त में कर देता हूँ। चूंकि उधर ले जा रहे थे। ये डॉ0 रमन सिंह जी है, जिसने मुक्तिबोध, पन्नालाल जी बस्सी और बलदेव प्रसाद मिश्र, तीनो की अलग-अलग विचारधारायें थी। आज भी वामपंथी विचारको में लेखकों में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले आदमी हैं तो मुक्तिबोध जी हैं। यदि छत्तीसगढ़ में उनको काई सम्मान दिया तो डॉ0 रमन सिंह जी है, जिस पर, हम लोगों के ऊपर आरोप है कि फण्डामेन्टलिस्ट, दक्षिणपंथी, क्या-क्या बोलते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- इसका राजिम कुम्भ से क्या सम्बन्ध ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनिये तो, सुनिये तो, सुन लीजिये। आप बात को सुन लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, आप उसमें बहस करा लेना। लेकिन राजिम की चर्चा हो रही है। कुम्भ के नामकरण पर चर्चा हो रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन कल आप ये उत्तर देना।

श्री रविन्द्र चौबे :- हां, उत्तर देंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- यहां से उत्तर देंगे ?

श्री रविन्द्र चौबे :- हां-हां देंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिये ठीक है। माननीय सभापति महोदय, मैं इस बात को कह रहा हूँ कि मैं एक दूसरे मंत्री की बात कह देता हूँ। विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों की बात हुई। हमको किस तरह के विशेषाधिकार किन कार्यों के लिए प्राप्त है, वे भी जानते हैं, मैं भी जानता हूँ। सिर्फ यहां की कार्यवाहियों के लिए विशेषाधिकार प्राप्त है। लेकिन कुछ मंत्री विशेषाधिकार किस बात को समझ लिए हैं ? मैंने अभी अराजकता की बात कही। एक मंत्री बोलते हैं कि मैं इस आई0ए0एस0 को, मेरा टारगेट है कि मैं उससे निपट लूंगा, उसको देख लूंगा। यह उनका कौन सा विशेषाधिकार है ? प्रेस कान्फ्रेंस है, छपा हुआ है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय इतने गुस्से में क्यों ? रिलेक्स-रिलेक्स। इतने गुस्से में क्यों ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह अराजकता है। यह कौन सा विशेषाधिकार है ? जब विशेषाधिकार में बहस चल रही है तो और अराजकता बता देता हूँ। ये कार्यपालिका के लोग बैठे हैं साहब। ये भी संवैधानिक स्तम्भ हैं। आपने रातोरात अपमानजनक ढंग से सी0एस0 का बंगला खाली करवाया, उसी मंत्री के लिए। अब मैं आगे बढ़ूंगा। जिन कारणों से उन्होंने कलेक्टर को लक्षित किया है, आज तो उसी विभाग में उसी कुर्सी में बैठे हैं। खेल लें, जितना खेलना है। कोरबा में रायगढ़ में वह खेल बहुत आम है। उनको खेलने के लिए अनुमति दे दीजियेगा। आपने अस्सी विभाग बना दिया है। वह नहीं करेगा, सब भ्रष्ट रहेंगे। सब भ्रष्ट रहेंगे उसके हिसाब से, क्योंकि करना उनके हिसाब से है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इन्हीं तीन विषयों पर बात करनी थी। मैं कुछ बात करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

माननीय सभापति महोदय, यदि सोसायटियों को शासन पैसा नहीं देगी, मैंने मोहम्मद अकबर जी को कहा था। नाबार्ड, नाबार्ड से, अपेक्स, अपेक्स से, जिला सहकारी बैंक और जिला सहकारी बैंक से सोसायटी आते तक वह साढ़े बारह प्रतिशत हो जाता है। साढ़े बारह प्रतिशत सोसायटी को ब्याज है। वह पैसा कब मिलेगा। माननीय पटवा जी ने जब माफ किया था तो उस सदन में माननीय रविन्द्र चौबे जी सदस्य थे, उन्होंने पहले सोसायटियों को पैसा दिया। आज जितने ऋण माफी की घोषणा है, जितने पैसे वापिस करवायेंगे, जितनी लिकिंग हुई है, उतने का बजट आयोजन नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय 35 लाख किसानों के शेयर हैं, यहां 14 सौ सोसायटियां चलती हैं। सहकारी आंदोलन को बंद करने का षडयंत्र है। इसी कांग्रेस कार्यकाल में रायगढ़ बैंक डिफाल्ट हुआ था। बाकी जो 6 बैंक कार्यरत हैं न, ये आंदोलन को क्षति पहुंचाकर सोसायटियों को क्षति पहुंचाकर बाकी 6 बैंक को डिफाल्ट करेंगे। सहकारी आंदोलन को नष्ट करने का कांग्रेस का एक इतिहास रहा है।

माननीय सभापति महोदय, एक बात। आपने शपथ ले लिया, आपने बहुमत कहा। माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी, आपको नैतिक रूप से शपथ लेने का अधिकार नहीं था, यदि नैतिकता की बात करें तो। मेन्डेट की बात करें तो आपके पास मेन्डेट है, मैंने अपने भाषण के शुरूआत में बात कही। आप वकील के द्वारा व्ही0व्ही0पी0टी से गिनती करवाने हाईकोर्ट गए थे। आपने संवैधानिक संस्थाओं पर उंगली उठाई। अब आपके मुंह मौन है। अब आपके विचार मौन है कि कौन सा व्ही0व्ही0पी0टी है। आप आज भी बोलिये, मांगिये व्ही0व्ही0पी0टी0 से गिनती करवाईये करके। कम से कम आप लोग बैठ गए हैं तो मुख्यमंत्री को बोलिये कि इस्तीफा दे दें और जब व्ही0व्ही0पी0टी0 से रिजल्ट आये तो फिर आप उनको बना दीजिये। यह नैतिकता होती है।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, 35 मिनट हो गए हैं। कृपया जल्दी समाप्त करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, किसानों का कर्जा माफ नहीं हुआ। मंत्रियों के स्वाभाव में अराजकता है, इन्होंने संवैधानिक संस्था पर उंगली उठाई। व्ही0व्ही0पी0टी0 से गिनती की मांग की, जितनी जन घोषणा-पत्र है, उसको पूरा करने के लिए गंगाजल की कसम खाई। कर्ज माफी के

लिए जो प्रक्रिया अपनाई, एक भी पैसा सोसायटी को नहीं मिला, एक भी किसानों की ऋण मुक्ति नहीं हुई। जब हम मौलिक रूप से, तथ्यगत रूप से आयें, तो जोगी जी जिस कण्डिका को पढ़ रहे थे, तारीख वाईज

..........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\e19\3.05-10

जारी...श्री अजय चन्द्राकर :- जब मौलिक रूप से, तथ्यगत रूप से हम आये तो जोगी जी जिस कंडिका को तारीखवार पढ़ रहे थे, 27 तारीख को हुआ है, मैंने जिस 10 की बात कही थी, वह 26 तारीख होता है । आज उसके बाद भी एक रूपये का, एक आदमी को नो ड्यूस नहीं मिला है, ऋणमाफी नहीं हुई है । नैतिकता के आधार पर, जो मैंने बातें कहीं, उसके आधार पर भूपेश बघेल जी माननीय मुख्यमंत्री जी को और सहकारिता मंत्री जी को इस्तीफा देना चाहिए कि वे छत्तीसगढ़ के 36 लाख किसान, जो सोसायटी के शेयरधारक हैं, उनके साथ छल किया है । झुनझुने पकड़ाए हैं, सब्जबाग दिखाये हैं और ये अनैतिक संसदीय आचरण है । सरकार की विश्वसनीयता संकट में हैं, छत्तीसगढ़ के किसान छला महसूस कर रहे हैं । इस सरकार को एक मिनट बैठने का अधिकार नहीं है, मैं इस सरकार से इस्तीफे की मांग करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- क्या जोरदार भाषण आपने सुनाया चन्द्राकर जी, आपका इस्तीफा कब आ रहा है, आप तो पहले घोषणा कर चुके हैं ।

श्री विनोद सेवन लाल चन्द्राकर :- सभापति महोदय, अभी माननीय अजय चन्द्राकर जी सहकारिता आन्दोलन की बात कर रहे थे । वनोपज सहकारी समितियां हैं, जो दम तोड़ रही हैं, ये कैसे 15 साल चलाएं हैं, पहले ये बताएं ।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय सभापति महोदय, अभी हमारे सदन के बहुत ही विद्वान सदस्य, जो पूर्व में संसदीय कार्यमंत्री भी रहे हैं, संसदीय क्षेत्र के ज्ञाता हैं और उन्होंने बहुत सारी बातें कहीं । उसमें कितना सही था, कितना गलत था, मैं समझता हूं कि ये जांच का विषय होना चाहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, अभी अमितेश शुक्ला जी को रोज हाऊस में लाने के लिए एस.आई.टी. गठित करवा ली । वे फ्रस्टेड हैं, हाऊस नहीं आ रहे हैं । हमारे नेता के, 10 बार सांसद रहे हैं, उनके वे भतीजे हैं, सदन को, हम लोगों को, हमारे पक्ष को उनकी चिन्ता है । उनको रोज सदन में लाएं, इसके लिए एस.आई.टी. बनवाएंगे ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भाई, मेरे प्रति आपकी जो चिन्ता है, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । कृपया आप अपने तबीयत की चिन्ता करिए, मुझे पांच साल आपका भाषण सुनना है। आप जितने ज्यादा उत्तेजित हो रहे हो, ऐसे चिल्ला रहे हो, मुझे आपके ब्लड प्रेशर की बहुत चिन्ता है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आपका मतलब क्या है, बीच में कुछ हो जाएगा, ऐसा है क्या ।

सभापति महोदय :- बांधी जी, आप बैठिए ।

श्री अरूण वोरा :- सभापति महोदय, सच तो यह है कि 15 साल में भारतीय जनता पार्टी से लोगों का मोह भंग हो गया । रमन सिंह जी ठीक हैं, लेकिन रमन सिंह जी का पूरा मंत्रि-मण्डल कैसा था, वह यहां पर दिखलाई दे रहा है । 13 मंत्रियों के केवल दो ही लोग पहुंच पाए हैं । तो इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि सरकार ने 15 साल में कैसा कार्य किया । किसान आत्महत्या करते रहे, लेकिन सरकार को कोई चिन्ता नहीं रही । बहुत सारे ऐसे काम हैं, जिसे करने में इनकी सरकार पूरी तरीके से नाकाम रही है, जिसका परिणाम है कि इनको विपक्ष में बैठना पड़ा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आप सबको बधाई दे दिया, स्वीकार कर लिए, जितने दिन हैं, बैठ जाएं, मैंने कहा कि जनता तय करती है, हम नहीं करते हैं । हमने जनता को 100 बार धन्यवाद दे दिया है ।

श्री अमरजीत भगत :- अभी भी वे अपने आप को मंत्री वाले से उतर ही नहीं रहे हैं, नहीं सुधरेंगे ।

श्री अरूण वोरा :- सभापति महोदय, आपका भूत कैसे उतरेगा, ये मुझे समझ में नहीं आता ।

माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल के अभिभाषण से यह परिलक्षित और स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस की सरकार सर्वहारा वर्ग के उत्थान के लिए काम करेगी और जो-जो वायदे सरकार ने अपने जन-घोषणा पत्र में किये हैं, उन वायदों को एक-एक करके पूरा करेगी, भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, ये जवाबदारी कांग्रेस सरकार की है और कांग्रेस सरकार अपनी जवाबदारी को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करना जानती है । पूरे प्रदेश में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है । जनहित से मुद्दे पर त्वरित निर्णय लेकर मतदाताओं के विश्वास पर खरा उतरना ही सच्चा लोकतंत्र होता है और इसको हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने परिभाषित करके दिखलाया है । शपथ लेने के दो घंटे बाद ही, जो 15 सालों से किसानों का कर्जा माफ नहीं हुआ था, उन्होंने 15 लाख किसानों का कर्ज माफ किया और धान का समर्थन मूल्य 2500 रूपये देने की घोषणा की, न केवल घोषणा की, बल्कि उसको पूरा किया ।

माननीय सभापति महोदय, ये सरकार का बहुत ऐतिहासिक फैसला था, सरकार ने न सिर्फ धान ही नहीं, मक्का, सोयाबीन, गन्ना का समर्थन मूल्य बढ़ाने का जो निर्णय लिया है, वह निश्चय ही समयावधि में पूर्ण होगा.......

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\f10\03.10-03.15

जारी ...श्री अरूण वोरा :- धान ही नही, मक्का, सोयाबीन, गन्ना, चना का समर्थन मूल्य बढ़ाने का जो निर्णय लिया है । वह निश्चय ही एक समयावधि में पूर्ण होगा । इसके अलावा बकाया बोनस देने

की बात जो सरकार ने की है, उस पर भी किसान खुशहाल है, पूरे किसानों में हर्ष की लहर है । माननीय अध्यक्ष महोदय, बिजली का बिल हाफ करने की बात हमने घोषणा पत्र में कही है । केन्द्र सरकार की मंहगाई के चलते यह निर्णय सरकार को लेना पड़ा है । माननीय डॉ. साहब बिजली का बिल हाफ होगा । आप चिन्ता कर रहे थे, बिजली का बिल हाफ होगा, निश्चित रूप हाफ होगा । माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार ने शिक्षा के अधिकार को अभी तक करने और छात्राओं को नर्सरी से पोस्ट ग्रेजुएट होने तक नि:शुल्क शिक्षा देने का जो निर्णय लिया है.....।

श्री धर्मजीत सिंह :-इस किताब में बिजली बिल कहां पर हाफ करने की बात है ।

श्री सौरभ सिंह :- राज्यपाल के अभिभाषण में बिजली का ब नहीं लिखा है ।

लोक निर्माण मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- नई है तो उधर से चर्चा क्यों उठाये ।

श्री अरूण वोरा :- जो चर्चा हुई है उसकी चिन्ता को मैं दूर कर रहा हूँ ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह चर्चा यह उठाये कि हाफ का जिक्र नहीं है । अब यह बोल रहे हैं कि हम बिजली बिल हाफ करेंगे । जो किताब आनंदीबेन पटेल जी ने जो दिया है, उसे पढ़ा है तो उसमें तो नहीं है । वह कहां है, बताईये ना पढ़ के ।

श्री अरूण वोरा :- मैंने जो चर्चा में सुना है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सुना नहीं पढ़कर चर्चा करनी चाहिये । सुनी हुई बात में चर्चा नहीं होती है ।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- उधर से उठाते हैं तो इधर से जवाब दिया जा रहा है ।

श्री अरूण वोरा :- शराबबंदी की चर्चा हो रही थी, हम सब सुन रहे थे, शराबबंदी का बहुत जबरदस्त ढंग से विरोध किया । हमने यह कहा कि बच्चे बिगड़ जायेंगे । हर वार्ड में शराब की दुकान खुल रही है । मेंरे अपने दुर्ग शहर में 10-10 लाख रूपये सरकार ने दिये । उसका बहुत जबरदस्त विरोध हुआ । महिला कमांडो बनकर आई । उसका विरोध हमने किया और जो हमने अपने घोषणा पत्र में शराबबंदी की बात कही है, उसका भी निर्णय और उसके लिए अध्ययन किया जा रहा है । समय आने पर शराबबंदी भी पूरी तरह से की जायेगी ।

श्री केशव चन्द्रा :- माननीय सभापति महोदय,बंद करने के लिए क्या अध्ययन है । खोलने के लिए अध्ययन है कि कैसे खोलना है । बंद करने के लिए क्या अध्ययन है । एक आदेश हो जाये, बंद हो जायेगी ।

श्री अरूण वोरा :- इसकी समीक्षा की जा रही है कि पूर्ववर्ती सरकार ने क्यों.... श्री केशव चन्द्रा :- बंद करने के लिए क्या अध्ययन, बंद करना है यानी बंद करो । उसमें और क्या अध्ययन की जरूरत है।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- आपने जो मेनोफेस्टो बनाया, उसमें कितने लोगों के सुझाव लिये....व्यवधान

श्री बृहस्पत सिंह :- यह छत्तीसगढ़ की जनता से सुझाव लिया गया है । काम चल रहा है । आगे बढ़िये ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- अध्ययन किस बात का । माननीय सदस्य कह रहे हैं कि घोषणा काफी है ।

श्री अरूण वोरा :- आपके सुझाव के आधार पर ही शराबबंदी की जायेगी । शराब बेचने का निर्णय रमन सिंह जी की सरकार ने लिया है । रमन सिंह जी अच्छे तरीके से जानते हैं । माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार ने अनियमित संविदा और दैनिक वेतनभोगियों पर पूर्व सरकार द्वारा कभी भी ध्यान नहीं दिया गया । इस बार ध्यान दिया जा रहा है ताकि उनके रोजगार को सुनिश्चित किया जा सके । माननीय सभापति महोदय, शिक्षाकर्मी को सर्वोपरि मानकर ही 1384 पदों पर भर्ती करने की प्रक्रिया सरकार ने प्रारंभ कर दी है । कालेजों में प्रोफेसरों की जो कमी थी, वह कमी अब दूर हो सकेगी । माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल ने जो अपना अभिभाषण सरकार की तरफ से प्रस्तुत किया है, मैं समझता हूँ कि यह सर्वहारा वर्ग के लिए है । इस अभिभाषण में जो बिन्दु दर्शाये गये हैं, उससे पूरे प्रदेशवासियों का भला होगा । मैं इन्हीं शब्दों के साथ, आपने मुझे समय दिया, धन्यवाद ।

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, 15 साल में कार्यपालिका इतनी सर चढ़ गई है कि आसंदी में उसको बैठने का जरा भी एहसास नहीं हो रहा है । कार्यपालिका की तरफ ध्यान दें ।

सभापति महोदय :- श्री सौरभ सिंह ।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय राज्यपाल जी के दिये गये छत्तीसगढ़ की प्रथम विधान सभा के पंचम अभिभाषण में माननीय अमरजीत भगत जी द्वारा लाये गये कृतज्ञता प्रस्ताव पर बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ । माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल का अभिभाषण राज्यपाल का ट्रेलर है । सरकार क्या करेगी । सरकार बदली है और सरकार का ट्रेलर हमको दिखाया गया है । सरकार का जो अभिभाषण है, वह 18 साल में सबसे छोटा अभिभाषण आया है। लगभग 8 मिनट और 14 पेज का यह अभिभाषण है। इसमें जो बहुत सारी बातें कही गई है,उसमें बिन्दुवार चर्चा करूंगा । बाहर कहीं नहीं जाऊंगा.......

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\f11\.-.5

जारी .. श्री सौरभ सिंह :- और इसमें जो बहुत सारी बातें कही गई हैं इसमें मैं बिन्दुवार-बिन्दुवार चर्चा करूंगा, उससे बाहर कहीं नहीं जाउंगा। सिंगापुर के निर्माता थे-लीकॉन यू। उन्होंने एक बात कही थी कि गुड गवर्नेंस इज बैड पॉलिटिक्स एंड बैड गवर्नेंस इज गुड पॉलिटिक्स। हमारी सरकार ने 15 साल गुड गवर्नेंस दिया तो खराब पॉलिटिक्स हो गई और आपने अच्छी राजनीति की तो आप वहां आ गये। अब आपका गवर्नेंस करने का मौका है। अब गवर्नेंस की बारी आपकी है और गवर्नेंस कैसा होगा इस पर चर्चा करेंगे। थोड़ा-थोड़ा रॉलआऊट चालू हुआ है। जनघोषणा पत्र में आपने जो बात कही थी उसकी एक चीज

शराबबंदी का कहीं पर उल्लेख नहीं है। कहीं पर भी बिजली बिल के आधे का उल्लेख नहीं है। अब गवर्नेंस की बात आ रही है तो अभी तक आबकारी नीति नहीं आई है।

श्री बृहस्पत सिंह :- साहब, थोड़ा इंतजार कर लीजिए, अभी तो शुरू हुआ है।

श्री सौरभ सिंह :- मैं कहां कह रहा हूं कि नहीं होगा। हम इंतजार करेंगे और 5 साल यहां बैठेंगे। कोई बात नहीं, शराब बंदी में यू-टर्न हुआ है। माननीय मुख्यमंत्री जी कल बोल रहे थे कि हम उस पर विचार करेंगे, उस पर सोच करेंगे, यू टर्न चालू हुआ है।

श्री दीपक बैज :- ऐसे ही बोलते -बोलते 15 साल निकल गया साहब, अभी तो एक ही महीने हुए हैं।

श्री सौरभ सिंह :- अभी यू-टर्न चालू हुआ है। मैं कल भी बोल रहा था और आज भी बोल रहा हूं कि 1 लाख 7 हजार करोड़ रूपये के बजट पर अगर आबकारी का 4300 करोड़ का बजट खत्म कर दें तो सरकार चलेगी कैसे? इस पर सोच की आवश्यकता है। सरकार को चलाने के लिए पैसे की आवश्यकता है और इस पर यू टर्न शुरू हुआ और उस चीज का कहीं पर कोई उल्लेख नहीं है। यहां पर उल्लेख किस बात का है कि गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। नरवा, घुरूआ, गरूआ और बाड़ी इस पर योजना बनेगी। देखेंगे कि पांच साल में क्या-क्या योजना आयेगी इस पर चर्चा करेंगे। जब नवा छत्तीसगढ़ बनेगा तो मैं पूछना चाहता हूं कि नवा छत्तीसगढ़ में क्या होगा। छत्तीसगढ़ को तो माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने बनाया नहीं तो अभी तो मध्यप्रदेश में 320 की असेंबली में रहते। उन्होंने बना दिया तो 90 की असेंबली में यहां पर बैठ रहे हैं। उन्होंने बना दिया तो 1 लाख 7 हजार करोड़ का बजट हो गया नहीं तो उस बजट में एक-एक सड़कों के लिए वहां घूमते रहते। जब नया छत्तीसगढ़ बनेगा तो आपकी योजना क्या है। कया नये छत्तीसगढ़ में डोमीसाईल का एक्ट लाने वाले हैं कि छत्तीसगढ़ में सिर्फ छत्तीसगढ़िया की जमीन रहेगी। छत्तीसगढ़ के निवासी को ही छत्तीसगढ़ में नौकरी मिलेगी इस पर कुछ नया छत्तीसगढ़ में ग्रहण होने वाला है क्या? इस पर भी चर्चा नहीं हुई। राज्यपाल के अभिभाषण में लिखा है कि 16 लाख 65 हजार किसानों का 6100 करोड़ रूपये माफ किया गया और अनुपूरक में 4235 करोड़ रूपये दिये गये हैं। ये बीच का डिफरेंस कहां से आयेगा ? जब यहां से जायेगा नहीं तो इसे कौन लेकर आयेगा? माननीय अजय चन्द्राकर जी उसकी चिन्ता कर रहे थे कि क्या सोसायटियों का पैसा कर्ज माफी में जायेगा? यह डिफरेंस पैसा कहां से आयेगा? अभी का जो डिफरेंस है वह डिफरेंस कहां से आयेगा? अगर डिफरेंस आयेगा तो वह सोसायटियों से आयेगा और अगर सोसायटियों से आयेगा तो पुन: वही बात होगी कि रायगढ़ का बैंक बैंकरप्ट हुआ और वैसे ही और कोआपरेटिव बैंक बैंकरप्ट होंगे। वह सोसायटी का पैसा जायेगा जो किसानों ने अंशदान जमा किया है वह 1200 करोड़ रूपये वहां डिफरेंस में जायेगा क्या। अगर 6100 करोड़ रूपये की घोषणा थी तो अनुपूरक में 6100 करोड़ रूपये आना था। राज्यपाल के अभिभाषण और अनुपूरक में कर्जमाफी के फिगर में फर्क है तो इस पर पैसा कहां से आयेगा? उद्योगों के जमीन की

बात की गई। आपके विधानसभा क्षेत्र में बहुत अच्छी बात है कि उद्योगों की जमीन वापस हुई है, अगर मैं गलत नहीं हूं तो जिंदल द्वारा रायगढ़ में भी सीमेंट प्लांट लगाने के लिए 2006 में 33 एकड़ जमीन अधिग्रहित की गई थी और आज वहां भी आंदोलन चालू हो गया है। वहां के किसान भी मांग कर रहे हैं। एफ.आई.आर. हुआ है या नहीं, एफ.आई.आर. की प्रक्रिया की भी बात चल रही है। लोगों के जमीन की वापसी की मांग सारे उद्योग कर रहे हैं। सारे जगह जहां पर जमीनों का अधिग्रहण हुआ है, हमारे जांजगीर-चांपा जिले में जमीनों का बहुत अधिग्रहण हुआ है। कर्नाटक पावर के लिए अधिग्रहण हुआ है, आधुनिक पावर के लिए अधिग्रहण हुआ है, मोजरबियर के लिए तो महंत रामसुंदर दास जी यहां पर पूरा डेलीगेशन लेकर आये थे कि उस जमीन को वापस किया जाए। इस पर भी थोड़ा विचार होना चाहिए कि कितने किसानों की जमीन वापस होगी और अगर प्रदेश में उद्योग नहीं लगा तो रोजगार कहां से आयेगा? ये दुधारी तलवार है। मैं जो पॉलीटिक्स और गवर्नेंस की बात कर रहा था न यह दुधारी तलवार है। अगर उद्योग नहीं लगेगा तो रोजगार कहां से आयेगा और यदि रोजगार नहीं आयेगा तो आपने 2500 रूपये बेरोजगारी भत्ता की भी बात कही है। 2500 रूपये बेरोजगारी भत्ता के लिए बजट में कहां से व्यवस्था होगी? ये सारी चीजें हैं जिसकी चिंता हमारे नेता डॉ. रमन सिंह जी कर रहे हैं कि प्रदेश कहां जायेगा।

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\f12\04.10-04.15

श्री सौरभ सिंह :- सभापति महोदय, ये सारी चीजें हैं जिसकी चिंता हमारे नेता और डॉ. रमन सिंह जी कर रहे हैं कि प्रदेश कहां जाएगा करके। आज यहां पर उद्योगों की चर्चा हुई, ये हमारे विधानसभा से......।

परिवहन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- ये जो उद्योगों का जमीन अधिग्रहण हुआ है उसमें पांच साल तक उद्योग नहीं लगाने के कारण निरस्तीकरण हुआ है। अब ऐसे बाकी के जो प्रकरण हैं। वो प्रकरण वाईस उसकी अलग अलग समीक्षा की जाएगी।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, यहां से विधानसभा से बहुत थोड़ी दूर में मांढर करके गांव है। वहां सी.सी.आई का एक सीमेंट कारखाना बहुत दिन से बंद है और एक मेरे विधानसभा क्षेत्र में अकलतरा में सी.सी.आई का सीमेंट कारखाना बंद है। ऐसे जो बंद कारखाने है जिससे रोजगार का सृजन हो सकता है इसके ऊपर भी व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसे जो कारखाने जहां पर बंद हैं, कोरबा में एक फर्टिलाइजर का कारखाना बंद है। इन कारखानों पर भी व्यवस्था होनी चाहिए। माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कोरबा और भिलाई उद्योगों की चर्चा हुई। जो कोरबा था वो हमारे आदरणीय ननकीराम कंवर जी यहां बैठे हैं, जो कोरबा था उसका नाक कोरवा आदिवासियों के नाम से पड़ा इसलिए वो कोरबा था। कहां गये कोरवा आदिवासी, क्या उद्योगीकरण हुआ उस दौर में क्या ऐसी औद्योगीकरण

चाहिए। भिलाई स्टील प्लांट में आदरणीय रविन्द्र चौबे जी बोल रहे थे कि हम छात्र जीवन की राजनीति में लोगों को नौकरी मिला उसके लिए आंदोलन करते थे। ऐसा औद्योगीकरण चाहिए जिसकी परिकल्पना हम राज्यपाल के उसमें कर रहे हैं करके। आज भी कोरबा में कई ऐसे परिवार है जिनको एस.ई.सी.एल से जमीन अधिग्रहण की न नौकरी मिली है, न रोजगार मिला है न कोई व्यवस्थाएं हुई है। ऐसा उद्योगीकरण और उसकी चर्चा हो रही है। इतिहास की चर्चा हो रही है कि कोरबा को भिलाई जैसे बनाया जायेगा करके। कोरबा सबसे ज्यादा पैल्यूटेड एरिया में आता है इंडिया में। वहां पर उस कलस्टर को बंद कर दिया गया, वहां पर कोई पर्यावरण की अनुमति नहीं होती। उसकी हम चर्चा कर रहे हैं, राज्यपाल के अभिभाषण में, हम ये चर्चा नहीं कर सकते की एग्रीकल्चर बेस उद्योग आएंगे यहां पर, एग्रीकल्चर बेस की बात करेंगे करके, डेयरी डेव्हलपमेंट की बात करेंगे। नरवा, घुरवा और बाड़ी की बात कर रहे हैं जब तो उस पर क्यों बात नहीं हो सकती। आज कोरबा का औद्योगीकरण पूरे भारत के लिए प्रीविटी प्राइव है कोरबा, वो फूट के पहाड़ पर माननीय ननकीराम जी कंवर का क्षेत्र है विधानसभा क्षेत्र, वो फूट के पहाड़ में कहां पर हैं प्रीविटी प्राइव के क्षेत्र में आते हैं पहाड़ी कोरबा जिनके नाम से कोरबा था। आज वो कहां पर हैं उसकी कोई परिकल्पना नहीं है। ये हम ऐसा नया छत्तीसगढ़ रचेंगे। हम उस छत्तीसगढ़ में जिसमें गड़बड़ियां हुई थी उसको सुधारने की बात करे हम, वो नवा छत्तीसगढ़ रचा जाएगा तो नवा छत्तीसगढ़ होगा। चिटफंड कंपनियों की बात हुई। चिटफंड कंपनियों के बारे में बोला गया है। कार्यवाही की बात हुई कि लोंगो के खिलाफ जिनके खिलाफ कार्यवाही हुई है उनकी कार्यवाही वापस की जाएगी। मुझे नहीं लगता कि वापस की जाएगी। मुझे नहीं लगता की ऐसी कोई कार्यवाही वापस की जाएगी। किसी के खिलाफ जो कार्यवाही हुई थी वो कार्यवाही वापस हुई है। उसके साथ साथ प्रदेश में बहुत सारी माइक्रो फायनेंस कंपनियां काम कर रही हैं। पौंजी स्कीम की कंपनियां काम कर रही करके जिन्होंने प्रदेश की जनता के पैसे को लेकर जा रही है। उस प्रदेश की जनता के पैसे पे संरक्षण की बात करनी चाहिए। चिटफंड कंपनी ठीक है, वे लोग निर्दोष हैं फंस गये किसी जाल में, और उनके खिलाफ जो एफ.आई.आर है वो वापिस नहीं हुई। सिर्फ बातें हो रही हैं चर्चा हो रही है निर्देश कुछ नहीं दिये हैं जिले में, जब निर्देश जाएगा तो पूरी प्रक्रिया होगी करके। बहुत सारे लोग जेल में भी हैं। उस प्रक्रिया पर बात होनी चाहिए। माननीय सभापति महोदय, इस अभिभाषण में हाथी के बारे में चर्चा हुई। 5 दिनों में 6 मौतें हुई है। हाथी के आतंक से लेकर सिर्फ उदयपुर के वन परिक्षेत्र में घटना हुई है। माननीय श्री ननकीराम कंवर जी के क्षेत्र में कोरबा में कहां पर कैसे हाथी कहां चले जाएंगे इसका कोई हिसाब किताब नहीं है। 8 गांड़ियां भेजी गई है। उस गाड़ियां से कुछ होने वाला नहीं है। उस पर नीति की आवश्यकता है। थोड़ा सा लिखा है हाथी की बात। हाथी की जो समस्या है.....।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय सभापति महोदय, हाथी का साथ छोड़ दिये इसलिए इधर उधर भटक रहे हैं।

श्री सौरभ सिंह :- अमरजीत जी बार बार हाथी की बात करने दीजिए एक बार मैं कल भी बोला आपको, हाथी में चढ़कर आते थे इस बार बहुत बड़ी हाथी को पछाड़कर आये हैं। हाथी की बात करने दीजिए, प्रदेश की समस्या आपके विधानसभा में सबसे ज्यादा उत्पाद मचा रहे हैं हाथी। कहीं महुआ खोजने चले जाते हैं, किसी के घरों में चले जाते हैं करके, हाथी का उत्पाद जो है, वो चारों तरफ फैल गया है। लेमरू की जो परियोजना थी । कोरबा में आज हाथी घूम रहे हैं । उनके दलों की कोई रेडियो कालीरिंग नहीं है। उनका आईडेन्टीफिकेशन नहीं है। हाथी की समस्या पर मैं कल भी बोला था, जंगल सफारी के लिए 12 करोड़ की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता आज फारेस्ट विभाग के लिए, सबसे बड़ी कोई आवश्यकता है तो हाथी के ऊपर कैसे काम करेंगे इसकी आवश्यकता है। उस पर काई चर्चा नहीं।

श्री अमरजीत भगत :- आप बार बार हाथी हाथी बोल रहे हैं बाजू वाले नाराज हो जाएंगे उधर।

श्री सौरभ सिंह :- वो मेरे पड़ोसी है, मैं उनको मना लूंगा।

श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\f13\03.25-03.30

श्री मोहित राम (पाली-तानाखार) :- माननीय सभापति महोदय, भाई हमारे एम.एल.ए. साहब सौरभ सिंह जी हाथी,कोरवा के बारे में बोल रहे हैं मैं जानना चाहता हूँ कि पूर्व वन मंत्री ननकीराम कंवर जी कोरबा के वर्तमान विधायक है। 15 सालों तक आपकी सरकार रही। कोई भी हमारे भाई को अगर हाथी के द्वारा कुचल दिया गया तो उसके मुआवजे के लिए किसान दर-दर भटकते रह गया। आपने कोरबा समाज की बात बोलें आपको ये मालूम है कि कोरवा पहाड़ में निवास करते हैं और उनके स्थान से ही कोरबा का नाम पड़ा है।

सभापति महोदय :- माननीय मोहित राम जी बैठिए। माननीय सदस्य को अपनी बात कहने दें।

श्री मोहित राम :- माननीय सभापति महोदय, एक भी कोरबा समाज के नाम से न कोरबा में विद्यालय है न ही कोई आश्रम है।

श्री अमरजीत भगत :- ये कौन है आपको मालूम है श्री मोहित राम जी।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं सब पाल रहा हूँ।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय सभापति महोदय, जब मैं वन मंत्री थी उस समय हाथी के लिए व्यवस्था करने का आदेश हो चुका था। केन्द्र में आपकी सरकार थी दुर्भाग्य से उस प्लान को ही रद्द कर दिया।

खाद्य मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट। आपने ये जो हाथियों के मामले में बात रखी है ये निश्चित रूप से चिन्ता का विषय है और इस मामले में गंभीरता से हम लोग कुछ करना चाहते हैं इसके लिए मैं आपसे और माननीय सभी सदस्यों से उनका सुझाव भी

चाहूंगा। यदि कोई महत्वपूर्ण सुझाव आपके किसी के भी पास हो तो कृपया करके वह बतायें तो उसमें हम लोग अमल करने की कोशिश करेंगे।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय सभापति महोदय, आपको निश्चित रूप से हाथी से निजात मिल जाएगी। आप उसको खिलाईये। जैसे शेर को खिलाते हैं। वैसे अभ्यारण्य बनाकर खिलाईये, वह आपको अटैक नहीं करेगा। एक मिनट सुन लीजिए। मैं यहीं सुझाव दे देता हूँ। अभी क्या होता है कि हम उसके पीछे लैम्प, हथियार लेकर जाते हैं उसको दौड़ाते हैं वह आपसे मानने वाला नहीं हैं। आप उसको आराम से खिलाईये, वे आपको आराम से रहने देंगे। धन्यवाद।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, माननीय अकबर भाई ने जो बात कही। वे माननीय सदस्य ने जो बात कही, उसके बारे में बोलने की कोई बात नहीं रही।

माननीय सभापति महोदय, अब तीन चार चीजें हैं नरवा, घुरवा, गुरूआ और बाड़ी। फोकस वही पर है नरवा में एनीकट बनेगा तो नरवा में बहुत सारे एनीकट बन गये हैं। पर एनीकट के नरवों की ये स्थिति है कि उस पर रोक लगाने की आवश्यकता है। जो पानी होता है उसको लोग सब्बल से उठाल देते हैं और पानी को बहा देते हैं क्योंकि मछली मारना रहता है और उसके बाद से उसमें रेत भी निकालना रहता है। इस पर थोड़ी कार्यवाही होनी चाहिए। अगर नरवा बचाना है। नरवा के किनारे कहुआ का पेड़ होता है, वह कहुआ का पेड़ कट गया, उस कहुआ के पेड़ के बारे में भी चिन्ता होनी चाहिए और अगर आज नरवा में आप स्टाप डेम बना लेंगे, उसके बगल में बिजली नहीं देंगे तो उस पानी का क्या मतलब हुआ? डिजल पम्प से किसान आपासी नहीं कर सकता। जब बिजली होगी तब सब्जी की खेती होगी, नरवा के किनारे । अगर नरवा की बात करनी है तो इस नरवा की बात करनी पड़ेगी। नरवे के रिजनरेशन की क्या बात है ? इस पर बहुत व्यापक योजना की आवश्यकता है। पानी आखिर आगे कहां आएगा ? हम जो मिनिमम वॉटर रिसिव करते हैं, मानसून में जो छत्तीसगढ़ में पानी गिरता है वह बहुत कम हो गया है। हर साल कम होते जा रहा है।

सभापति महोदय :- सौरभ सिंह जी कृपया समाप्त करें। समय का ध्यान रखें।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ।

माननीय सभापति महोदय, घुरवा उसके बारे में चर्चा नहीं करूंगा। छत्तीसगढ़ी में कहते हैं कि घुरूआ के दिन बदल गे, उसके बारे में मैं चर्चा नहीं करता। आप लोगों ने खोल दिया तो घुरूआा का भी दिन बदल गया। चलिए, बाड़ी के बारे में बात नहीं करूंगा । अंतिम में सिर्फ गरूआ के बारे में बात करूंगा। छत्तीसगढ़ राज्य दुग्ध संघ 20 करोड़ लॉस में चल रहा है और किसानों को 3-3 महीने से पैसा नहीं मिला है जिन्होंने देवभोग में दूध दिया है तो गरूआा कौन पालेगा ? गरूआ पालना और गरूआ की नस्ल का संरक्षण करना, गरूआ को घर में रखना और उसका दूध निकालना और दूध बेचना, वह कहीं पर भी प्रोफिटेबल होगा तो किसान गरूआ को पालेगा और आज परिस्थिति ऐसी है कि गरूआा जिस दिन

दूध देना बंद करती है उस दिन किसान छोड़ देता है और वह गरूआ रोड पर मिलती है। आज ये परिस्थिति है कि किसी गांव में कांजी हाऊस का संचालन नहीं हो रहा है और किसी गांव में राऊत गरूआ नहीं राख रहा है ये परिस्थिति है राऊत लोग रिफ्यूज कर दिये हैं अगर कांजी हाऊस का संचालन नहीं होगा तो हम गरूआ को नहीं रखेंगे। इस साल कम से कम जांजगीर जिले में बंधेज नाम की कोई चीज ही नहीं है। पूरी फसल बिना बंधेज के हुई है। आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अमरजीत भगत :- सौरभ सिंह जी, गरूआ के बारे में बात करने के लिए हमारे पास एक नये सदस्य जीतकर आये हैं। वह अभी बात करेंगे।

श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\f14\03.30-03.35

समय :
3.30 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए।)**

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- माननीय सभापति महोदय, श्री भूपेश बघेल जी की सरकार के अभिभाषण को माननीय राज्यपाल महोदया जी ने पढ़ा, उनके शपथ पत्र को भी हमने देखा और उसके क्रमांक-5 में ही लिखा है कि - जनादेश का सम्मान करते हुए मेरी सरकार ने जनघोषणा-पत्र 2018 को आत्मसात किया है। मैं उनके जनघोषणा-पत्र से राज्यपाल महोदया जी के अभिभाषण के पत्र को मिला रहा था, इसमें मुझे इन्होंने जनघोषणा पत्र का जो आत्मसात किया है, वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आपने पूरा जनघोषणा पत्र पढ़ा?

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं पूरा 7 बार पढ़ा। अभी मैं अरूण वोरा जी से भी मदद लिया कि आप ही बता दो कि कहां लिखा है, शायद हम न देखें हों तो। इसमें है या नहीं है, मैं उस पर बहस करने के लिए नहीं खड़ा हूं। हम लोगों ने भी कई बार अभिभाषण को पढ़ा। जो सरकार होती है उसके एक साल के या आगे के कार्यक्रमों की रूपरेखा अभिभाषण में राज्यपाल महोदया पढ़ती हैं। इसमें एक-दो बिन्दुओं पर ही जोर दिया गया। बाकी ऐसे ज्वलन्त मुद्दे जिनका निराकरण ये सरकार करना चाहती है और घोषणा की है, उन मुद्दों को इसमें शामिल नहीं किया गया है, इसलिए बहुत ही लचर, दिशाहीन और अक्षम भाषण है। इस भाषण से हम बहुत ज्यादा आशा नहीं कर सकते हैं।

माननीय सभापति महोदय, वर्ष 2013 की झीरम घाटी की घटना के बारे में यहां जिक्र हुआ है। ये बात सच है कि छत्तीसगढ़ में एक दर्दनाक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हुई। उस घटना में श्री

विद्याचरण शुक्ल जी जो इस प्रदेश के कद्दावर नेता थे, श्री महेन्द्र कर्मा जी जो हमारे यहां पर नेता प्रतिपक्ष थे, हमें उनके साथ काम करने और बैठने का सौभाग्य मिला था, श्री उदय मुदलियार जी जो हमारे मित्र साथी थे, यहीं हम लोग बैठा करते थे, श्री योगेन्द्र शर्मा जी की हत्या के कुछ दिन पहले मेरे घर में मेरे साथ बैठकर नाश्ता किये थे, श्री नंदकुमार पटेल जी जिनसे हमारा बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है और जो इस प्रदेश के कद्दावर नेता थे सहित अन्य बहुत से जिसमें हमारे फौजी भी थे, पी.एस.ओ. भी थे, अन्य कांग्रेस के कार्यकर्ता थे, कुछ नागरिक थे, उस जघन्य हत्याकांड के कारण ये सारे काल-कलवित हुए। अध्यक्ष जी, हम भी व्यथित हैं, अत्यन्त व्यथित हैं। मुझे याद है उस समय भारत के प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी यहां आये थे, श्रीमती सोनिया गांधी जी भी आई थीं, जो आज हमारे मुख्यमंत्री हैं वह हमारे दिवंगत शहीदों का पार्थिव देह लेने के लिए भी जगदलपुर गये थे। भारत की सरकार के प्रधानमंत्री यहां आते हैं और एन.आई.ए. से जांच कराने की घोषणा करते हैं। वहां कहां भाजपा की सरकार थी? जब एन.आई.ए. की जांच हुई, कांग्रेस पार्टी के नेता शहीद हुए, कांग्रेस पार्टी के प्रधानमंत्री दिल्ली में थे, वह एन.आई.ए. की विस्तृत जांच जितना चाहते थे, उतना करा सकते थे, लेकिन ये उनके विषय का मामला था। एन.आई.ए. की जांच का आदेश दिल्ली से हुआ, उस टीम ने आ करके यहां जांच की। अभी जैसा मोहम्मद अकबर जी बता रहे थे कि ये बिन्दु शामिल नहीं किया। जब कोई भी जांच करायें तो तो उसके चारो तरफ के परिप्रेक्ष्य में जांच होनी चाहिए। किसी भी जांच का दायरा सीमित नहीं होना चाहिए। चलिये वह नहीं हुआ। फिर हाईकोर्ट के जस्टिश मिश्रा की अध्यक्षता में न्यायिक जांच का गठन हुआ। उस सरकार ने कौन-कौन से बिन्दु तय किये, वह सरकार के कार्यक्षेत्र की बात थी। आपने एस.आई.टी. का गठन किया, मैं इस एस.आई.टी. के गठन का स्वागत करता हूं। मैं इस एस.आई.टी. के गठन का इसलिए स्वागत करता हूं कि इस हत्याकांड के आगे एक पर्दा झिलमिला रहा है। वह पर्दा हटना बहुत जरूरी है.... (जारी)....

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\f15\03.35-03.40

जारी...........श्री धर्मजीत सिंह :- मैं इस एस.आई.टी. के गठन का इसलिये स्वागत करता हूं क्योंकि इस हत्याकांड के आगे एक परदा झिलमिला रहा है वह परदा हटना बहुत जरूरी है । इस हत्याकाण्ड में कौन शामिल था उसका चेहरा बेनकाब होना बहुत जरूरी है । इस हत्याकाण्ड में कौन शहरी, कौन ग्रामीण और कौन नक्सली और गैर नक्सली, कौन राजनीतिज्ञ और कौन गैरराजनीतिज्ञ, कौन दक्षिणपंथी और कौन उत्तरपंथी, कौन वामपंथी इन सबके चेहरे से नकाब हटना चाहिए क्योंकि हिंदुस्तान के इतिहास में इतना बड़ा जघन्य हत्याकाण्ड आज तक नहीं हुआ है । हम व्यथित हैं लेकिन एस.आई.टी. के गठन के पहले चूंकि अभी माननीय मुख्यमत्री जी तो नहीं हैं, यहां डी.जी. भी नहीं हैं, होम सेक्रेटरी जी कौन हैं, मैं नहीं जानता हूं वे भी नहीं हैं लेकिन आप तो हैं ।

माननीय सभापति महोदय, जब श्री नंदकुमार पटेल जी की हत्या हुई । हमने अखबारों में पढ़ा, मीडिया में देखा कि उनकी हत्या के ठीक पहले एक व्यक्ति वहां था और वह व्यक्ति आज श्री भूपेश बघेल के मंत्रिमण्डल में मंत्री हैं । वह व्यक्ति मंत्री हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या एस.आई.टी. की जांच की शुरूआत वहीं से होगी ? अगर एस.आई.टी. की जांच वहां से शुरू होगी तो क्या माननीय मंत्री महोदय के पास उस एस.आई.टी. में इतनी हिम्मत है कि वह जाकर के पूछे ? अध्यक्ष महोदय, मैं इस एस.आई.टी. की जांच का स्वागत करता हूं लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करता हूं कि जब तक यह जांच पूरी न हो जाये श्री नंदकुमार पटेल जी की हत्या के 5 मिनट पहले के चश्मदीद गवाह को मंत्री पद से हटा देना चाहिए, नहीं रखना चाहिए तब यह जांच सही होगी। (शेम-शेम की आवाज) किसी को कोई फिक्र नहीं है, अगर कोई यह चाहता है कि - तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं, तुम किसी और को चाहोगे तो मुश्किल होगी । आप पता करिये, पूरे प्रदेश की जनता की ओर से मैं मांग कर रहा हूं, मैं अपनी पार्टी की ओर से मांग करता हूं कि अगर जांच में कोई भी दोषी व्यक्ति पाया जाता है तो नियमों को भी ताक में रखकर उसे जयस्तम्भ के चौक पर फांसी की सजा देने के बाद भी वह सजा कम होगी क्योंकि हमने अपने प्रिय नेताओं को खोया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, हम यह कैसे भूल सकते हैं ?

(श्री धर्मजीत सिंह जी के द्वारा माननीय सभापति जी को बार-बार माननीय अध्यक्ष महोदय बोलने पर)

सभापति महोदय :- माननीय अध्यक्ष जी चैम्बर में हैं । (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, हमारे लिये आप अध्यक्ष से कम नहीं हैं । आप हम सबके गुरूदेव हैं । अब आप ठीक है, एक पद की गरिमा के अधीन अध्यक्ष बोल दिये लेकिन आप अध्यक्ष से किसी कदर कम नहीं हैं । आपका जो अनुभव है, हम तो आपके सामने बच्चे हैं ।

सभापति महोदय :- ठीक है, चलिये-चलिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, एस.आई.टी. की कौन अफसर जांच करेगा आई.पी.एस. अफसर, उसके छोटे अफसर, अगर कोई गलती आई.पी.एस. अफसरों की होगी, सुरक्षा में कोई चूक होगी या कोई आई.पी.एस. अफसर किसी नेता के ईशारे पर इस मौत की साजिश का ताना-बुना बुनने के लिये लगा होगा तो क्या एक आई.पी.एस. अफसर दूसरे आई.पी.एस. अफसर के खिलाफ जांच करने का हौसला रखेगा ? यह मेरा दूसरा प्रश्न है । मेरा तीसरा प्रश्न यह है कि एन.आई.ए. की जांच की रिपोर्ट, ज्यूडिशियली जांच की रिपोर्ट और एस.आई.टी. जांच की रिपोर्ट अगर तीनों अलग-अलग आयेगी तो जनता के भ्रम का या जनता की सोच का फैसला कैसे होगा, सत्य से परदा कैसे उठेगा, यह मैं आपसे जानना चाहता हूं, इस सरकार से जानना चाहता हूं इसलिये मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि

यह एस.आई.टी. जांच कराईये, इसमें और जो एक्सपर्ट हों, हिंदुस्तान के दूसरे प्रदेशों के पुलिस के एक्सपर्ट जो इस प्रकार की घटनाओं की जानकारी लेना चाहते हैं, जानते हैं उनको भी शामिल करिये लेकिन इन सबके ऊपर सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट की निगरानी में यह जांच होनी चाहिए यह मेरी मांग है इस एस.आई.टी. के संबंध में । आप मंत्री से इस्तीफा लीजिये, जब यह जांच पूरी हो जाये तो आप मंत्री को बना दीजिये क्योंकि शुरूआत तो वहीं से होगी कि श्री नंदकुमार पटेल जी की जब हत्या हुई उस वक्त नक्सलियों से क्या बात हुई, किस भाषा में बात हुई, कौन बात किया, क्या बोला गया, किसके कहने से बोला गया, क्यों बोला गया, क्यों वे बचे, क्यों वे मरे इन सब चीजों से भी परदा हटाने का दायित्व इस सरकार का है इसलिये मैं इस एस.आई.टी. की जांच के बारे में चाहता हूं कि इसका हाईकोर्ट की ज्यूडिशियली के संरक्षण में और नियंत्रण में यह जांच होनी चाहिए ताकि यह जो अधिकारी हैं, जो जांच करने वाले आये हैं,...........जारी

.............श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\f16\03.40-03.45

जारी--------श्री धर्मजीत सिंह :- इसलिए मैं इस एसआईटी की जांच के बारे में चाहता हूं कि ज्यूडिशियरी के संरक्षण और नियंत्रण में यह जांच होनी चाहिए ताकि जांच करने वाले अधिकारी तोता मत बने, जिस प्रकार से सीबीआई को तोता बोलते है, ये तोता की श्रेणी में मत आएं । हमें अपने अधिकारियों के ऊपर भरोसा है । वे जांच करें और दोषियों को सज़ा दो, यही छत्तीसगढ़ की जनता ने जनादेश किया है, उसका पालन होना चाहिए । आपने दूसरी एसआईटी बनाई, करिये जांच, पहले तो आपका बयान पढ़ते थे कि 36 हजार करोड़ का घोटाला हुआ है, वह एकदम से घटकर कुछ करोड़ में आ गया है । जो-जो प्रश्न आपने यहां पर बैठकर उठाए हैं, उन सभी प्रश्नों का उत्तर भी आपको ही देना पड़ेगा । अब उन प्रश्नों और उन उत्तरों पर लीपापोती नहीं होगी, सभापति महोदय । आप जो जांच कराना चाहते हैं, जैसी जांच कराना चाहते हैं, जिसकी जांच कराना चाहते हैं, जिससे बयान लेना चाहते हैं, सबसे लीजिए । लेकिन कृपा करके समय सीमा का ज़रूर ख्याल रखिएगा । आपकी पिछली सरकारों का अनुभव यह रहा है कि कोई भी जांच आयोग गठित होने के बाद उनकी फाइंडिंग्स और रिज़ल्ट समय पर नहीं आते हैं । इसे ब्लैक मेलिंग करने, इसे धमकाने, इसे भयभीत करने का हथियार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए । आपको जनादेश मिला है आप सारे तथ्यों की जांच पूरी गहराई से करके उसके परिणाम से जनता को अवगत कराएं । चाहे जो भी दोषी हों, इधर बैठे हों, उधर बैठे हों, बाहर बैठे हों, उनका आप सज़ा देना चाहते हैं तो जरूर दीजिए । यह मांग मैं अपने दल की ओर से कर रहा हूं ।

आपने चिटफंड कंपनियों की बात की है । सभापति जी, इस प्रदेश में खेती किसानी के नाम से भी दुर्ग जिले में चिटफंड कंपनियों ने ठगी की है । चिटफंड कंपनियों का जाल बिछा हुआ है । मैं आपके

माध्यम से पूछना चाहता हूं कि इस पर तो आप कार्यवाही करेंगे ही, लेकिन क्या आप यह निर्धारित करेंगे कि भविष्य में किसी भी जिले में चिटफंड कंपनियों के चलने पर और शिकायत आने पर उस जिले के एसपी और कलेक्टर के ऊपर कार्रवाई करने की घोषणा करेंगे । ये कार्रवाई करके आप किसी को राहत दे सकते हैं लेकिन इस प्रदेश में चिटफंड कंपनियों को पैर पसारने का अड्डा नहीं बनने देंगे । इस बात का भी आश्वासन इस सरकार को देना होगा । सभापति महोदय, सट्टा चल रहा है । शराब की बोतलें चारों तरफ बिक रही हैं, जुआ चल रहा है । 25 मार्च से आईपीएल होना है, आईपीएल का सट्टा करोड़ों रूपए का होता है । मैंने तो अपने दोस्त के बच्चों को आईपीएल के सट्टे में करोड़ों रूपया हारने के कारण आत्महतया करते हुए भी देखा है । इसलिए हम चाहते हैं कि आप पुलिस को फ्री हैंड दीजिए । फिर वह किस नेता के साथ फोटो आती है, वह किस मंत्री के साथ है, किस पूर्व मंत्री के साथ है, किस विधायक के साथ है, इन बातों में भेद नहीं होना चाहिए। सटोरिया, सटोरिया होता है । सटोरिया छत्तीसगढ़ के लोगों को लूटने का काम कर रहा है । उन सटोरियों को ज़मींदोज़ कर देना चाहिए, सरकार के पास इतनी ताकत है । आपको इनके ऊपर भी कार्रवाई करनी चाहिए ।

सभापति महोदय, इन्होंने 24 वें बिंदु में रेल और विमान के बारे में भी कहा है । पुरानी सरकार ने रेल का पीपी मॉडल किया । बीच में हल्ला हुआ कि इन्हीं की सरकार ने उसको यहां से वहां कर दिया, वहां से यहां कर दिया । कई गांव के लोग आंदोलित हैं । वह बनेगा, नहीं बनेगा, कितना पैसा है, रेल्वे से मन्जूरी मिली है या नहीं, रेल्वे के सर्वे में उसकी उपयोगिता है या नहीं । कौन गांव से कौन गांव जाएगा, छत्तीसगढ़ बहुत छोटा है 10, 20, 25, 50 स्टेशन होंगे । उनमें कोटा है या नहीं, उसमें लोरमी है या नहीं, उसमें पंडरिया है या नहीं, उसमें कवर्धा है या नहीं । अगर नहीं है तो दूसरा स्टेशन कहां है, इन सब चीजों के बारे में एक श्वेतपत्र इस सरकार को जारी करना चाहिए । ताकि जनता के बीच भ्रम की स्थिति न रहे । आपने हवाई सेवा का भी ज़िक्र किया है । सिविल एवियेशन के अफसर बिलासपुर आते हैं, कलेक्टर से कहते हैं कि हवाई पट्टी चौड़ी होनी चाहिए । इतनी लम्बी होनी चाहिए, ये होना चाहिए, वो होना चाहिए और जब कलेक्टर काम करके देते हैं तो वो सिविल एवियेशन वाला आता है और बोलता है कि इसको तो आधा मीटर और चौड़ा होना चाहिए ....जारी

----श्री ठाकुर -

ठाकुर\09-01-2019\f17\03.45-03.50

...........जारी धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, और बोलता है इसको तो आधा मीटर और चौड़ा होना चाहिए। अरे तो भैय्या तू एक बार क्यों नहीं बता के जाता कि कितना मीटर चौड़ा होना चाहिए कितना मीटर लंबा होना चाहिए। अधिकारी परेशान। जनता परेशान। सामंजस्य के अभाव में हवाई सेवा शुरू नहीं हो पा रही है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वो इस सेवा के लिए स्वयं

दिल्ली जाकर के सिविल एविएशन मिनिस्टर से चर्चा करें और हमारे बस्तर, अंबिकापुर और बिलासपुर जैसे दूरस्थ अंचलों को हवाई सेवा से जोड़ने का काम आपको करना चाहिए। हमारे बिलासपुर को हवाई सेवा से जोड़ना बहुत जरूरी है। क्योंकि वह न्यायधानी है। वहां से दिल्ली से बड़े-बड़े वकील आना चाहते हैं, वहां पर बड़े-बड़े उद्योगपति आना चाहते हैं। वहां बड़े-बड़े कारखाने हैं। एन.टी.पी.सी. है, कोल इंडिया है, अपोलो है और दुनियाभर का पावर प्लांट है। इन सब को कनेक्टीविटी हवाई सर्विस की चाहिए। उनके लिए आप प्राथमिकता के आधार पर काम करेंगे ऐसी मैं आशा करता हूं आपके घोषणा के अनुरूप ।

श्री नारायण चंदेल:- धरमजीत जी, चौबे जी, यहां जेट एयरवेज की सर्विस की सेवा बंद होने वाली है। ये हवाई सेवा की बात कर रहे हैं अभी।

श्री रविन्द्र चौबे:- डॉ. साहब, पूरे 15 साल निकाल दिये। हम लोग कहते रह गये। अब 15 दिन निकला है थोड़ा धैर्य रखो न। तो करेंगे न। करेंगे, शुरूआत करेंगे, आदरणीय सदस्य मांग कर रहे हैं अंबिकापुर को जोड़ा जाए अब जगदलपुर में तो हरी झंडी लेकर के प्रधानमंत्री आये थे कहां गया वो।

श्री धर्मजीत सिंह:- चौबे जी, मोदी जी के बाद जेट चलवाए थे न वो आपके आने के बाद बंद होने वाला है ये बोल रहे हैं वो। ये जदगलपुर, बिलासपुर और अंबिकापुर की बात नहीं है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अभी आपने मांग अंबिकापुर, बिलासपुर की बात की थी।

श्री धर्मजीत सिंह:- मैं तो इनकी बात कह रहा हूं ये तो शुरू कराने ही वाले हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- वो आपकी बात कहते हैं आप उनकी बात कहते हैं। यही तो हमें तकलीफ है।

श्री धर्मजीत सिंह:- नहीं, आप तकलीफ मत पाइए। जनहित की बात है।

श्री रविन्द्र चौबे :- बाहर कहते हैं हम अलग हैं। यहां आप एक दूसरे की बात करते हैं। गलत बात है न।

श्री धर्मजीत सिंह :- आदरणीय जेट की सेवा इसलिए बहाल कराना चाहते हैं क्योंकि आप लोगों को किसी भी वक्त फोन आता है शाम को। 14 तुगलक रोड में मीटिंग है । तो जरूरी तो आपके लिए है हमको तो दिल्ली जाना नहीं है। जिंदगी भर के लिए बंद हो जाए जेट। हमारा तो दिल्ली से कोई काम ही नहीं है। जिंदगी भर के लिए बंद करो, वहां खेती करवाओ आप। हमको कोई मतलब नहीं। पशुधन और गोठान और कुक्कुट पालन का जो आपसे संबंधित है माननीय मंत्री जी, एक प्रावधान आपने किया है। इस संदर्भ में मेरा कहना है अध्यक्ष जी कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का एक सशक्त माध्यम कुक्कुट पालन और गौ पालन और मछली पालन है लेकिन ये कागजों की शोभा बनकर के रहता है। कागजों में गौ पालन हो जाता है। उसका जो फायदा मिलना है नुकसान होना है सब होता है और किसान गरीब का गरीब रहता है। तो इसको प्राथमिकता के आधार पर करिए। जितने डेयरी के कर्ज के लिये हुए किसान हैं जो नहीं पटा पा रहे हैं तो उनको भी इस कर्ज माफी में शामिल करिए । जितने पोएट्री फार्म के कर्जे हैं, उनको भी इसमें शामिल करिए। जितने उद्वहन सिंचाई के कर्जे में किसान डूबे

हुए हैं, उनके पट्टे पर्ची सब जब्त है उनको भी माफ कर दीजिए तब तो आगे किसान कुछ करने का हिम्मत रखेगा। अध्यक्ष जी, बस मैं दो बात कहकर खत्म करूंगा। शराब के बारे में मैं कल बोल चुका हूं अध्यक्ष महोदय। शराब का पौवा, सट्टे की चौवा और इनकी सरकार का हौवा था तो ये यहां आये हैं। अगर आप भी उसी तरह से करेंगे सट्टे का चौवा, शराब का पौवा और ये अड़सठ कांग्रेस वालों का कहीं हौवा दिखा अगर जनता के बीच में तो 5 साल में आपका भी दुर्दशा तय है। इसलिए शराब को आप बंद कराइए। एक बहुत महत्वपूर्ण बात की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और संभवत: मैं एक बात कहके खत्म कर दूंगा। वनवासियों की बसाहट के बारे में।

श्री अजय चंद्राकर:-इस कागज को देखकर धर्मजीत भैय्या पढ़ रहे हैं न वो धर्मजीत भैय्या को छोड़कर दूसरे को समझ में भी नहीं आयेगा न।

श्री धर्मजीत सिंह :- बहुत गंभीर बात है न। चौवा आप समझते हैं, पौवा समझते हैं, हौवा आप समझते हैं न। अभी उसी का जिक्र हुआ है।

श्री अजय चंद्राकर:- सरकार की इतनी भैय्या इतनी उपलब्धि है। इतनी उपलब्धि कि हमारे रिपोर्ट का अध्ययन कर रहे हैं। रिपोर्ट का गंभीरता से अध्ययन कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह:- आपको अगर आबकारी रिपोर्ट लेना ही था तो कवासी लखमा पर्याप्त थे, अमरजीत भगत पर्याप्त थे उनसे बैठ लेते आप तो महाराज का नाम तो नहीं जानते।

..............जारी श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\f18\03.50-03.55

.....जारी श्री धर्मजीत सिंह कवासी लखमा पर्याप्त थे, अमरजीत भगत पर्याप्त थे। आप उनके साथ बैठ जाते। महाराज, आप तो नाम तक नहीं जानते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- आदरणीय, डॉ0 रमन सिंह जी ही बतायेंगे कि जो कमेटी बनाई थी, आपने उसको शराबबंदी करने के लिए कहा था या शराब का विस्तार कैसे किया जाए, इसके लिए कहा था ? बस बात केवल यह है।

श्री धर्मजीत सिंह :- लेकिन मैं आपसे एक बात कह देता हूँ। देखिये, आप पूछ लिए तो वह बतायेंगे। आप भी वरिष्ठ हैं, वे भी वरिष्ठ हैं। मैं आपसे बोल रहा हूँ। इस विषय के बारे में अध्ययन दल की रिपोर्ट मत पढ़िये। उसमें कुछ भी लिखा होगा, आप क्या समझेंगे ? वह तो कवासी लखमा बतायेगा। अगर आपसे राहुल गांधी यह पूछ देता कि चार ब्राण्ड का नाम बताओ, मैं आपको मुख्यमंत्री बनाऊंगा तो आप ऐसे ही नहीं बन सकते थे मुख्यमंत्री। क्योंकि आपको मालूम ही नहीं है कि क्या-क्या है, सिगनेचर है, डायरेक्टर स्पेशल है, ये है, वो है, यह सब जानना जरूरी है।(हंसी) तो आप नहीं बन सकते थे। इसलिए दूध-दही वाला विभाग है। इसलिए आप दूध-दही खाओ। कृष्ण राज में दूध-दही मिलता था। आप

भी हमारे दूध-दही के मालिक हो। पंडित जी दूध-दही प्रेमी हैं। जो दूध-दूध वाले हैं, दही-दही वाले हैं, भैय्या उनको खोजो और बाकी को कवासी के पास भेजो।

श्री शैलेष पाण्डेय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय धर्मजीत भैय्या, आप एक जानकारी बताईये। पिछले सरकार के समय जब शराब बंदी को लेकर एक जांच समिति बनाई गई थी, एक समिति का गठन किया गया था। विधान सभा में भी इस बात का जिक्र आया था, मैंने पेपर में पढ़ा था। शराब बंदी को लेकर जो कमेटी बनाई गई थी उसकी क्या पूर्ववर्ती सरकार की रिपोर्ट आ गई है ?

डॉ0 कृष्णमूर्ति बांधी :- पाण्डेय जी, आप तो अपने हिसाब से शराब बंदी करिये। शैलेष भाई आप अपने हिसाब से करिये।

सभापति महोदय :- कृपया बैठे-बैठे न बोलिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं बता रहा हूँ न। पाण्डेय जी, यह रामकथा दो दिन से चल रही है। ये श्री रामकथा का आयोजन इस सदन में दो दिन से बड़े प्रकाण्ड, विद्वान बोल रहे हैं। इस सरकार ने ये रिपोर्ट पेश किया, इसमें ये लिखा, वो लिखा। हुजूर आप थे नहीं, तो क्या करें। हुजूर, आप नहीं थे। पर पंडित जी, मुख्यमंत्री जी, भाषण में मुख्यमंत्री जी बोले कि आपने इस रिपोर्ट में दारू बेचने का प्रमोशन दिया। ये सब पढ़ लिये, वह रिपोर्ट आ चुकी है। इसीलिए हम कह रहे हैं कि आप उस रिपोर्ट को मत पढ़िये। कवासी लखमा को पढ़ने दो और आप सिर्फ दूध-दही तक रहिये।

सभापति जी, मैं सिर्फ दो बात कहना चाहता हूँ। सिर्फ दो मिनट।

श्री शिवरतन शर्मा :- धर्मजीत भैय्या, कवासी जी को पढ़ने के लिए एक आदमी देना पड़ेगा न। वह बोल रहे हैं कि किसको देंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह अमरजीत पढ़कर सुनायेगा और फौरन दिमगा में भर जायेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- धर्मजीत भैय्या, कवासी लखमा जी को जिस दिन से वह विभाग मिला है, सेकेण्ड हाफ से हाऊस में ही नहीं आ रहे हैं। (हंसी)

श्री संतराम नेताम :- महोदय, कल मेरे क्षेत्र में कार्यक्रम था। वह उसमे गये थे। आप उनके ऊपर आरोप मत लगाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, हम आरोप नहीं लगा रहे हैं। दिख नहीं रहे हैं, बोला।

श्री संतराम नेताम :- मैं गवाह हूँ। मेरे साथ मेरे क्षेत्र में थे। कवासी लखमा जी के साथ हम लोग लगातार थे। ऐसा आरोप लगाना गलत है।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम आरोप नहीं लगा रहे हैं। कवासी लखमा हमारे मित्र हैं। 1998 में वह एम0एल0ए0 बने थे, हम भी बने थे। वह हमारा दोस्त है, उसने खुद सल्फी पिलाया है। (हंसी) हम कोई छिपाकर बात नहीं करते। और सुनिये, अगर वह पीता भी है, नहीं पीता है, वह उनकी संस्कृति का

परिचायक है। हम किसी की संस्कृति पर आक्षेप करने वाले होते कौन हैं ? हमें गर्व है कि वह अपनी संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। वह हमारा मित्र है। हमारा उसके ऊपर कोई व्यक्तिगत आरोप नहीं है ।

माननीय अध्यक्ष जी, वन विभाग का एक मामला है। चीफ सेक्रेटी साहब सुन रहे हैं। बाकी सब साहब गायब हैं, कोई है ही नहीं यहां पर। वन मंत्री जी बहुत काबिल हैं और वह पूरा ध्यान देते हैं, वह आगे ध्यान देंगे। मैं यहां बोल देता हूँ, वह सुन लेंगे। यहीं होंगे, सुन रहे होंगे। चाय-वाय पी रहे होंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- कोआपरेटिव मंत्री के बारे में आपकी क्या धारणा है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- वह तो आप बता चुके हैं। (हंसी) अध्यक्ष जी, अचानकमार टाइगर रिजर्व है। आपने इसमें राज्यपाल महोदय आनंदीबेन पटेल जी के भाषण में बसाहटों की बात किया है। बसाहटों की तरक्की करेंगे, रक्षा करेंगे, ये बना देंगे, वह बना देंगे। अध्यक्ष महोदय, अचानकमार टाइगर रिजर्व के 30 गांव के लोग भय में अपना जीवन जी रहे हैं। फारेस्ट के पी0सी0सी0एफ0, ए0पी0सी0सी0एफ0, सी0एफ0 या और उनके कौन-कौन साहब हैं। जो बिलासपुर जाते हैं, उनको एक शौक है। जाते ही कुछ बोल तो सकते नहीं हैं, क्योंकि शेर की रक्षा तो कर नहीं पाये। सफेद शेर मर गया

......जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\f19\3.55-60

जारी...श्री धर्मजीत सिंह :- कुछ बोल तो नहीं सकते क्योंकि वे शेर की रक्षा नहीं कर पाये । सफेद शेर मर गया, सफेद शेर कितना दुर्लभ होता है, वह मर गया, उसकी रक्षा नहीं कर पाये और बोलते हैं कि हम आदिवासियों को विस्थापित करेंगे । कहां करोगे, कब करोगे, किस एरिया में बसाओगे, कितना रूपया है, आपके पास कितना फंड है, उनके रहने की, मकान बनाने की व्यवस्था आपके पास है कि नहीं, बिजली की व्यवस्था नहीं है, पानी की व्यवस्था नहीं है, आंगनबाड़ी की व्यवस्था नहीं है, स्कूल की व्यवस्था नहीं है, किसी की कोई व्यवस्था नहीं है, लेकिन उसका जो छोटा सा झोपड़ा है, जो बेचारा घास-फूंस से बनाकर रखा है, उसको भी उजाड़ने का भय प्रेस कांफ्रेंस में बिलासपुर के बैठकर देते हैं, इस पर रोक लगनी चाहिए । किसी भी अधिकारी को बिलासपुर में जाकर गरीबों को हम उजाड़ देंगे, बसा देंगे, यह कहने का अधिकार नहीं होना चाहिए, नहीं तो सरकार एक श्वेत-पत्र जारी करे कि हमारे अचानकमार टाईगर रिजर्व सहित इस पूरे प्रदेश के जो-जो टाईगर रिजर्व में हैं या सेन्चुरी में हैं, उनको आप कहां बसाओगे, कब तक बसाओगे, कैसे बसाओगे, पूरा मद सहित पूरी विवरण इस सदन को देना चाहिए । हमारे लोगों को हम भय में जिन्दा नहीं रहने देंगे । हमारे लोगों को अधिकारियों के रहमो करम पर जिन्दा रहने की इजाजत नहीं रहेगी । हमारे लोग 12 हजार लोग वहां के मतदाता हैं और 12 हजार मतदाता हैं तो उनका परिवार कितना बड़ा होगा, 25 हजार को एक चुटकी में किसी अधिकारी के आदेश से बिना उनका आशियाना बनाए, बिना उनकी व्यवस्था किये हम कैसे हटा देंगे । इसका विरोध होगा, यहां से लेकर न्यायालय तक इसका विरोध होगा, सदन से लेकर सड़क तक विरोध होगा इसलिए मैं वन

विभाग के अधिकारियों को चेतावनी दे रहा हूं कि ज्यादा नादिर शाही तरीके से सोचने की आदत बंद करिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- धर्मजीत भैया, एक निवेदन था । आप सदन में बोल रहे हैं या अधिकारियों को निर्देश दे रहे हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, मैं तो सरकार से बोल रहा हूं, आप क्या समझते हो, मैं अधिकारियों से बात कर रहा हूं क्या ? वह तो मैं बोल रहा हूं तो इतने अधिकारी भी हैं, आप लोग बोल रहे थे तो दो आदमी नहीं बैठे थे । मैं तो सरकार से बोल रहा हूं, मेरे सरकार सामने बैठे हैं । ये मेरी सरकार सामने बैठे हैं, ये सरकार सिर्फ आप लोगों की है, ऐसा भ्रम मत पालिए, हमारी भी सरकार है । ये आपके बस मुख्यमंत्री हैं, ऐसा मत सोचिए, वे हमारे भी मुख्यमंत्री हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- सरकार तो पूरे छत्तीसगढ़ की है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, ये जो मंत्री बैठे हैं, वे आपके मंत्री नहीं हैं, हमारे भी मंत्री हैं, इस प्रदेश के ढाई करोड़ लोगों के मंत्री हैं और हमें अधिकार है कि हम अपने जनता की आवाज को उनके बीच ले जाएंगे और उसके बीच में हम किसी की दखलंदाजी को सुनना भी पसंद नहीं करते ।

माननीय सभापति महोदय, नम्बर-25 । पत्रकारों की, वकीलों की, डाक्टरों की सुरक्षा बहुत अच्छी बात है, होना चाहिए, ये सब बुद्धजीवी वर्ग के हैं, पर मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि ऐसे बहुत से अस्पताल हैं, जहां गरीब लोग ईलाज कराने आते हैं और बिल नहीं पटाने के कारण उनकी डेड बॉडी नहीं दी जाती है, ऐसे समय में क्या व्यवस्था होनी चाहिए, क्या नियम बनने चाहिए, इसके बारे में भी आपको विचार करना होगा । वकील, डाक्टर, पत्रकार हमारे बहुत आदरणीय लोग हैं, पत्रकारों की सुरक्षा तो और ज्यादा जरूरी है क्योंकि एक पत्रकार सुशील पाठक की आज से कई साल पहले हत्या हो गई । इस सदन में मैं ही यहां खड़े होकर माननीय मुख्यमंत्री जी से सीबीआई की मांग किया, सीबीआई की जांच हुई, फिर भी हत्यारा नहीं पकड़ाया । आप तो एसआईटी बना रहे हैं न, एक पत्रकार के हत्यारों की खोज के लिए भी एसआईटी बना दीजिए, ताकि उस पत्रकार के हत्यारे पकड़ में आयें । जो पत्रकार निष्पक्षता से लिख रहा है....।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, एक एसआईटी की मांग और कर दीजिए न । अमितेश शुक्ल जी को डेली विधान सभा लाने के लिए क्योंकि वे नाराज हैं, उनके लिए भी एसआईटी बनाना है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अमितेश जी हमारे मित्र हैं, मैं उनके सम्मान के खिलाफ नहीं बोलूंगा, मैं मांग करूंगा कि एक सीट जो बची है, वह आपको ही दी जाए । (हंसी)

श्री अमितेश शुक्ल :- एक मिनट, बड़ी बात बोल लिए । असली में रामचरित मानस की जो कहावत थी-ऐसा कलयुग आयेगा, जब हंस चुगेगा दाना...

श्री धर्मजीत सिंह :- और कौवा मोती खायेगा, वही होगा ।

श्री अमितेश शुक्ल :- मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता, आप लोग मुझे बार-बार बोल रहे हैं इसलिए मैंने कहा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम समझ रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आपकी बात कही, आपका अभिनंदन करते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपकी योग्यता का विपक्ष बहुत कद्र करती है और आपकी पीड़ा को भी हम महसूस कर रहे हैं क्योंकि हो तो हमारे ही गुरू परिवार के ।

श्री अमितेश शुक्ल :- धर्मजीत जी, ज्यादा दुखी मत करो आप ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\g10\04.00-04.5

श्री धर्मजीत सिंह :- योग्यता की कदर करते हैं और आपकी पीड़ा को भी हम महसूस कर रहे हैं । क्योंकि हो तो हमारे ही गुरू परिवार के हो ।

श्री अमितेश शुक्ल :- धर्मजीत जी आप ज्यादा दु:खी मत हो ।

श्री धर्मजीत सिंह :- ज्यादा दुखी नहींकरूंगा । पर जाईये ना । प्लेन भी बंद होने वाला है । आप किसी दूसरे प्लेन में जाओ ।

सभापति महोदय :- कन्क्लूड करिये बस ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बाद में बात करेंगे अध्यक्ष महोदय । एक छोटा सा हिस्सा इसमें अपने जनसंवाद, जनघोषणा पत्र वगैरह का लिखे हैं । बाकी सब गायब है । यह शंका है कि उन वादों का क्या होगा । क्या हुआ तेरा वादा । इसमें वह वादा क्यों नहीं आया । यही जनता पूछना चाह रही है । आप अपने वायदों को पूरा करिये । सरकार को जनादेश मिला है । हम आपका हर अच्छे काम में सम्मान करेंगे । लेकिन आप अपने वायदोंसे मुकरेंगे तो इस सदन में आपका घनघोर विरोध किया जायेगा । आपने वख्त दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- माननीय संतराम जी ।

श्री संतराम नेताम (केशकाल) :- माननीय सभापति महोदय, हमारे पूर्व मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह जी ने अभी अपने भाषण में कहा कि कांग्रेस सरकार की कथनी और करनी में काफी अंतर है । मैं साहब को वर्ष 2013 के घोषणा पत्र की याद दिलाना चाहता हूँ । उन्होंने किसानों के साथ क्या वादा किया था कि हम किसानों को 300 रूपये बोनस देंगे । 2100 रूपये समर्थन मूल्य देंगे । कितने सालों बाद उन्होंने

दो साल में बोनस दिया । मैं शिक्षाकर्मी की बात करूं। शिक्षाकर्मियों को उन्होंने कहा था कि हमारी सरकार आयेगी तो हम आपको एक घण्टा में आपको नियमित करेंगे । वर्ष 2003 में उन्होंने कहा था । आज 15 साल होने के बाद हमारे जिम्मेदार पूर्व सी.एम. वादा को पूरा नहीं किये ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- संतराम जी, अभी राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है ।

श्री संतराम नेताम :- उसी में आ रहा हूॅं । मैं आपको याद दिला रहा हूॅं । 20 दिन में इतने उतावले क्यों हो रहे हो । मैंने कल की घटना को देखा । कल हमारे पूर्व कृषि मंत्री बृजमोहन अग्रवाल जी नारा लगा रहे थे, किसानों के साथ अत्याचार करना बंद करो । वाह रे 2013 से हमारी वादा करने वाली सरकार । किसानों के साथ धोखा । आज हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने शपथ लेते ही एक घण्टे में पहला कैबिनेट की बैठक हुई । उन्होंने किसानों के प्रति, किसानों का बेटा होने के नाते, किसानों के दर्द को समझने वाले होने के नाते उन्होंने 16 लाख 65 हजार, किसानों का 6100 करोड़ से अधिक अल्पकालीन .ऋण को माफ करने का निर्णय लिया। आदरणीय सभापति महोदय, उन्होंने एक बड़ा फैसला लिया, प्रदेश के किसानों के लिए कि आज वे 2500 रूपये में किसानों का धान खरीदी करेंगे । यह देश में हमारा छत्तीसगढ पहला राज्य है जो प्रदेश के किसानों लिए चिन्ता कर रहे हैं । पूर्व सरकार के बारे में कहना चाहता हूॅं । कल जो इन लोगों ने इतना हड़बड़ी किया, बौखलाहट किये, 54 विभाग के लोग पूरे प्रदेश में हड़ताल कर रहे थे, अगर आपकी सरकार की इच्छाशक्ति होती, निश्चित तौर पर आप 15 में नहीं सिमट जाते । यह आपके कथनी और करनी में है । आदरणीय सभापति महोदय, हमारे कृषि मंत्री जी बोल रहे थे कि हमारे प्रदेश में आत्महत्या करने लग गये हैं । जब हम पिछले बार सरकार को याद दिलाते थे, उन्होंने क्या कहा कि अन्य बीमारियों में आत्महत्या किये हैं । दारू पीकर, शराब पीकर, उनकी आत्महत्या हुई है । आज हमारे कृषि मंत्री बृजमोहन अग्रवाल जी कह रहे थे कि यहां पर किसान आत्महत्या कर रहे हैं । यह भारतीय जनता पार्टी के लोगों के कथनी और करनी में अंतर है .....

जारी....श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\g11\.-.5

जारी.. श्री संतराम नेताम :- बृजमोहन अग्रवाल जी कह रहे थे कि यहां पर किसान आत्महत्या कर रहे हैं, यह भारतीय जनता पार्टी के लोगों की कथनी और करनी में अंतर है। हमारे माननीय भूपेश बघेल जी ने एक नई सोच की है, मैं उसे एक लाईन में बोलना चाहता हूं-

अब मिलकर नया छत्तीसगढ़ गढ़ना है,
जनता के सुख और दुख का साथी बनकर दिल पर राज करना है।

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार और हमारे मुख्यमंत्री जी की सोच, किसानों के प्रति उनकी सोच इसलिए हमारी पार्टी को एक बड़ा जनादेश मिला है। मुख्यमंत्री जी की जो सोच है जो हमारे

अभिभाषण पत्र में आया है और मुख्यमंत्री जी ने इस प्रदेश को कैसी दिशा और दशा देना चाह रहे हैं नरवा, गरवा, घुरवा, बाड़ी ये चार जो चिन्ह हैं इनके माध्यम से वह प्रदेश को आगे ले जाना चाहते हैं। हम आदिवासी क्षेत्र से आते हैं, बस्तर में कैसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हम लोग प्रताड़ित हुए, हमारे वहां के बेरोजगार दूसरे प्रदेश में मजदूरी करने के लिए पलायन करते थे। बस्तर आज भी भारतीय जनता पार्टी के कारण जल रहा है। विकास की बात करते थे। पिछले बार विकास यात्रा निकाला । मैं आपको बताना चाहता हूं कि आज भी केशकाल विधानसभा का वह इलाका जो बड़ेडोंगर से मात्र 15 किलोमीटर दूर है आज वहां चलकर देखिए। वहां के आदिवासी भाई, वहां के गरीब आदिवासी, पिछड़े वर्ग के लोग ब्लाक मुख्यालय नहीं आ पाते, जिला मुख्यालय की बात तो छोड़िए, तो ये है इनका 15 साल का विकास। वहां के कई गांव उजड़ गए। आदिवासी परिवार बर्बाद हो गये। वहां के लोगों को पुलिस ने मारा, अंदर वालों ने मारा। किन -किन लोगों ने मारा। अगर आंकड़े की बात करें, आप अगर वहां सर्वे करायेंगे, वहां पर अगर जनसंख्या की बात करें तो कई ऐसे गांव हैं जो वीरान हो गये हैं। कितनी संख्या घट गई है ये सरकारी आंकड़े में भारतीय जनता पार्टी को नहीं दिखता। आदरणीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि अभी हमारी सरकार ने वहां के आदिवासियों के लिए एक बडा काम करने जा रहे हैं। वहां के वनोपज के लिए उन्होंने राशि को बढ़ाकर 2500 रूपये से लेकर 4000 तक प्रतिमानक बोरा उन्होंने बढ़ाने का निर्णय लिया है और भारतीय जनता पार्टी उसका विरोध करती है और कहती है कि ये होना चाहिए, वो होना चाहिए? 15 साल में आपने घोषणा पत्र का कितना वायदा पूरा किया? आज हमारी सरकार 20 दिन की है, आप शराबबंदी की बात कर रहे हैं। शराब एकाएक बंद नहीं किया जा सकता। किसी भी शराबी को अगर एकाएक बंद करा देंगे तो उसकी मृत्यु हो जायेगी। इसलिए उनहोंने अध्ययन की बात की है। शराब को धीरे-धीरे बंद किया जायेगा। सभापति महोदय, हमारी सरकार सही सोच की ओर बढ़ रही है। और मैं कल से ये देख रहा हूं कि हमारे विपक्ष के भाई लोगों में इतनी बौखलाहट हो गई है कि हार के लिए इनको इतनी पीड़ा हो गई है कि कल मैं डॉ. रमन सिंह जी को देखा कि कैसे गर्भगृह में आ गये थे। मैं इनके लिए एक लाईन कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं, आप लोगों को अगर इधर आना है तो इस कविता के माध्यम से सीखना है :-

मत बैठो हारकर जिन्दगी में ना जाने कब बंद पड़ा ताला खुल जाए,
पतझड़ में कब बहार आ जाए, मायूस न हो जाना कभी,
जिन्दगी में कभी तकदीर बदल जाए।

तो आप जनता के लिए वह प्रयास कीजिए। आप उन किसानों के लिए लड़ाई लड़िए।

श्री प्रमेश

श्री संतराम नेताम (केशकाल) :- माननीय सभापति महोदय, आपको लड़ना है, किसानों के लिए, आपको लड़ना है बेरोजगारों के लिए, आपको लड़ना है छत्तीसगढ़ के लिए, आपको जीना है छत्तीसगढ़ के लिए, इसको सबब लेते हुए आप काम करिये। बौखलाहट होने की जरूरत नहीं है। अभी 15 साल देख लीजिए, हम कैसा काम करते हैं। निश्चित तौर पर क्षेत्र की जनता हमारे आएगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- 15 साल में वहां आपको बैठने का मौका मिला। हार में या जीत में किंचित भयभीत नहीं हूं मैं, संघर्ष पद पर जो मिला, यह भी सही वह भी सही, वरदान मांगूगा नहीं।

श्री संतराम नेताम :- कई जलजले देखें हैं हमने कार में, और कब से बैठे थे आपके कविता के इंतजार में। सभापति महोदय, आपने मुझे समय दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

(मेजों की थपथपाहट)

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- सभापति महोदय, आज माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में चर्चा करने के लिए हम उपस्थित हैं और मैं इस पर अपना विचार रखता हूं कि अभी जो राज्यपाल जी का अभिभाषण पूरा प्रस्तुत है, और ये अभिभाषण है कथनी का, और जो करनी है वो ये बजट अनुपूरक बजट है, और इस पर जो बात कही गई है, और उसको इस पर लागू करने का था। इसमें से देखा गया कि किसान की बहुत सारी बातें कही गई, जिसमें से अभी श्री अजीत जोगी जी ने कहा कि किस तरीके से कर्जो के विषय को लेकर भ्रम पैदा किया गया। किस तरीके से किसानों को लघु सीमांत, अल्पकालीन ऐसा कह करके, लोगों को भ्रम किया जाए कि कर्ज माफी करने का एक ही निर्णय था, कर्जमाफी मतलब कर्जमाफी उसमें कोई किन्तु और परंतु नहीं होना चाहिए। इसीलिए ये जो कथनी करनी है, उसको हम समय समय पर ये बताते चले आ रहे हैं। किसानों के हित की बातचीत करते हैं, और बातचीत करते हैं, घुरवा बाड़ी का। सभापति महोदय किसानों की चिंता करने का एक विषय है। हम इसको देख रहे हैं। किसान जो है, आज गांव में तिवरा ले नहीं पा रहा है। गांव में चना नहीं आ पा रहा है। गेहूं नही ऊगा पा रहा है और इसलिए गेंहूं चना उगा नहीं पा रहा है कि उसके गेहूं की कोई सुरक्षा नहीं होती। कौन पशु किसको कब खा दे और इसलिए आज विश्वास की कमी हो गई है गांव में, और उस गांव में विश्वास की कमी होने के कारण, आज जो फसल लेते थे पहले जमाने में, दोहरा फसल लेते थे, रबी का फसल लेते थे कि तिवरा होता था। तिवरा के प्रति पूरे गाय का संरक्षण होता था, गाय के प्रति उसके जो चारा उपलब्ध होती थी, दाना तो उसका उपयोग करते थे, उसकी प्रोटीन का उपयोग करते थे। राहल बहुत प्रोटीनयुक्त है, उसका उपयोग करते थे लोग, लेकिन गाय, के लिए कूना की व्यवस्था होती थी और इस तरीके से गांवों में गायों के चारे के लिए उपलब्धता होती थी पहले आज वे पुन- कूने के बारे में, उस तिवरा के बारे में जब तक सोचेंगे नहीं गाय संरक्षित नहीं होगा। दूसरी चीज है आज फसल नहीं होते गांव में, गांव में फसल के लिए हम बहुत सारे सुविधा देते थे लेकिन जिस सुविधा को आपने मनरेगा के तहत लेने की कोशिश किया है, वह सुविधा है कि जालीतार मनरेगा में जोड़िए। जब तक आप जालीतार के लिए जोड़ेगे

नहीं, तो किसानों को खेत चाहे वो बाड़ी हो, चाहे उसके खेत हो, वह सुरक्षित नहीं रहेगा और जो हम किसानों को लाभ देने के लिए, किसानों की आर्थिक संपन्नता के लिए जो प्रयास कर रहे हैं वो हमारे प्रयास सफल नहीं हो पाएंगे। जब तग गायों को संरक्षित नहीं करने का है। घुरवा बना देने से ग्रामीण की इकानामी बढ़ेगी। ग्रामीणों के लिए घुरवा इसलिए बनाने चाहते हैं कि आर्गेनिक खेती की ओर जाए। आज पूरे छत्तीसगढ़ में इस पूरे माडल में आर्गेनिक खेती के एक भी सर्टिफिकेट जहां से सर्टिफिकेशन होना चाहिए, जो टेस्ट होना चाहिए कि आर्गेनिक है। यह प्रोडक्ट किसी एग्रीकल्चर का आर्गेनिक है। एक भी ऐसा केन्द्र नहीं है, जहां पर छत्तीसगढ़ में किसानों को आर्गेनिक सेंटर के लिए जाए। घुरवा, एग्रीकल्चर और आर्गेनिक खेती के कांसेप्ट पे कहां जा रहा है ये आपके अभिभाषण पर, हमारा ये कहना है कि अगर ये कांसेप्ट लेना है तो ये गोल मोल बातें नहीं होना चाहिए। बारीकियों से सोच करके.........।

जारी श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\g13\04.15-04.20

जारी श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, आपकी पिछली सरकार में गौशालाओं में कितनी गायों की मौत हुई ? डॉ. साहब आपको पता होगा ? भूख से मौत हुई और आप लोग गायों का चारा पूरा खा गये थे।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, जब ये पुराने ने किया तो हम यहां पर है आप नये में बने रहिए, इसके लिए कोई बारिकी से सोचिए, कोई गोल मोल बातें नहीं चलेगी। भ्रम पैदा करने की स्थिति नहीं चलेगी। अगर कर्जा माफ किये हो तो पूरा कर्ज माफ करने की जिम्मेदारी लीजिए। अगर किसानों की समृद्धि की बात करते हैं तो जब तक किसान का फसल संरक्षित नहीं होगा। जब तक उसके पशुधन का सरंक्षण नहीं होगा तब तक आप क्या कल्पना कर सकते हैं कि कोई किसान तिवरा, चना और गेहूं ले सके।

श्री बृहस्पत सिंह :- डॉ. साहब आप पूर्व मंत्री रहे हैं आपको मालूम है पिछली सरकार जो 15 सालों तक गड़बड़ी की, इसी पाप को तो हम लोग धोने की कोशिश कर रहे हैं।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- उसको सुधारने की कोशिश कर रहे हैं या उसको ढोने की कोशिश कर रहे हैं ?

श्री बृहस्पत सिंह :- बिल्कुल सुधारने की कोशिश कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- माननीय बृहस्पत सिंह जी, ये उचित नहीं है। आप बैठिए।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, वास्तव में सरकार किसानों की समृद्धि चाहती है। सरकार वास्तव में चाहती है कि ग्रामीण अंचलों में किसानों की आर्थिक समृद्धि, आर्थिक इकानॉमी बहुत मजबूत होनी चाहिए तो कोई संदेह नहीं है ग्रामीण एरिये में जो पशुधन है और जो उसकी व्यवस्था

है उसमें अमूलचूल परिवर्तन आ सकता है। माननीय सौरभ सिंह जी कह रहे थे कि कई ऐसे गांव है कि इस बार बिलासपुर जिले में भी, जांजगीर जिले में भी देखने को मिला कि लोग गॉव के गॉव ट्रकों में भरकर के अपने गांव के जो गाय हैं उसको दूसरे गॉवों, जंगलों में जाकर छोड़ते थे। इससे हमारी इकॉनामी को बहुत बड़ी ठेस पहुँच रही है इसलिए गायों के प्रति सोच है तो उसको संरक्षित किया जाए। जालीदार के लिए जैसा भी बजट करिये, मनरेगा का बजट इसमें करिए, लेकिन जाली अगर दे देते तो पूरा इकॉनामी एकदम एक झटके में आ जाए। हर किसान बोलेगा कि अब मेरा खेत पशुओं से संरक्षित हो गया और जो फसल लेना चाहता है वह फसल लेने की तैयारी करेगा, सोचेगा और जब तक के किसान ऐसा नहीं सोचेगा तो मेरा फसल सुरक्षित नहीं होगा तो हम कितने भी बाड़ी की रचना कर लें, वह संरक्षित नहीं होगा। इसलिए जो जमीनी बात सोचने की जरूरत है ये गोल मोल कागजी की बात नहीं सोची जानी चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, अभी लोहाण्डीगुड़ा के किसानों की एक बात आयी। लोहाण्डीगुड़ा के किसानों ने 10 वर्ष पहले जो टाटा स्टील को जमीन दिये हैं उसे वापस किये हैं ये ठीक बात भी हो सकती है। लेकिन मैं ये चाहता हूँ कि जिस तरीके से उस लोहाण्डीगुड़ा क्षेत्र की जनता की बात हो रही है ऐसे और भी क्षेत्र है जहां पर किसानों की जमीनों को अधिग्रहण करके रखे हुए हैं। मेरा ही जो मस्तुरी विधान सभा का क्षेत्र है जो बोड़ाडीह है चिलहाटी के आसपास के क्षेत्र में है वहां किसानों से 7-8 साल पहले उनकी जमीनों का अधिग्रहण किया और उसको उचित मुआवजा नहीं दिया गया, दलाल लगाये गये और उस आधार पर अधिग्रहण किया गया है और अभी तक के उस क्षेत्र में काम प्रारंभ नहीं हुआ है।

श्री दीपक बैज :- माननीय सभापति महोदय, माननीय डॉ. साहब अधिग्रहण और मुआवजा किसकी सरकार ने दिया था?

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, जो सरकार ने नहीं किया। आपने बहुत अच्छा निर्णय लिया। अब उस अच्छे निर्णय के हिसाब से क्या छत्तीसगढ़ के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा हुआ है उसके लिए भी फैसला हो सकता है ? मैं तो ये बात कर रहा हूँ कि जो आपकी नजर है उन क्षेत्रों के लिए भी हो, जिन क्षेत्रों में जिनकी जमीनें अधिग्रहण की गई है।

श्री बृहस्पत सिंह :- ऐसा फैसला नहीं होना, किसकी गलती है?

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- मैं तो आपके लिए बोल रहा हूँ। आपने अच्छा कदम उठाया।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार को धन्यवाद तो दे दीजिए। (व्यवधान)

श्री दीपक बैज :- मतलब पहले की सरकार गलत थी।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- मैं तो आपको धन्यवाद देना चाह रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- हम आपको इस बात में धन्यवाद देते हैं कि आप अपनी गलती, अपने सरकार की गलती को यहां पर स्वीकार रहे हैं।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- आप अपने घोषणापत्र से भयभीत हैं इस घोषणापत्र के अनुसार हो पाएंगे या नहीं। आपने कर्ज माफी की, पूर्ण कर्ज माफी नहीं है और जिस दिन पूर्ण कर्ज माफी करेंगे उस दिन आप दावे करिएगा, हमने किसानों का कर्जा माफ कर दिया। अभी माननीय जोगी जी ने उस बात पर आपको अच्छे से समझाकर बोले हैं।

सभापति महोदय :- माननीय बांधी जी, 10 मिनट हो गये हैं। एक मिनट में खत्म करिये।

श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\g14\04.20-04.25

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, घोषणा पत्र में किसानों के संदर्भ में और भी बात आई है, जल संरक्षण की बात आई है। यह वास्तव में बहुत ही अनिवार्य बातें हैं। लेकिन सरकार की जो क्रियान्वित एजेन्सियां हैं, इनके कार्य करने की जो शैली है, उस पर हमें शंका है। कहीं ये अपनी ही बातों पर अपनी जिस ढंग की कार्यशैली को एडाप्ट किया हुआ है, जिस तरीके से कथनी-करनी किये गये है, ऐसा लगता है कि यह पत्र केवल औपचारिक मात्र न रह जाये। क्योंकि आपने जो कर्ज माफी किया है, वह पूर्ण नहीं है। अभी एस.आई.टी. की जांच के संदर्भ में माननीय धर्मजीत सिंह जी ने भी उन बिन्दुओं पर अपनी बात रखा, उन्होंने बड़ी गंभीर बात रखी है।

सभापति महोदय :- चलिये, धन्यवाद।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजैपुर) :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीया राज्यपाल महोदया श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने जो अभिभाषण दिया है एवं उनके अभिभाषण पर माननीय अमरजीत भगत जी के द्वारा लाये गये कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। राज्यपाल का अभिभाषण सरकार का आईना होता है और यह अभिभाषण तय करता है कि सरकार किस दिशा में काम करना चाहती है, सरकार का विजन कया है, सरकार का उद्देश्य क्या है, सरकार प्रदेश के हित में क्या करना चाहती है ? माननीय सभापति महोदय, मैं जनघोषणा-पत्र की बात नहीं करूंगा। जनघोषणा-पत्र की बात इसलिए नहीं करूंगा, समाचार पत्रों में पढ़ते थे कि कांग्रेस के द्वारा एक कमेटी बनाई गई है और कांग्रेस के बहुत ही प्रबुद्धजन जनघोषणा-पत्र को बना रहे हैं और उनको जनघोषणा-पत्र बनाने के लिए 6 महीना लगा। अगर उस घोषणा पत्र को हम एक बार, दो बार पढ़ लेंगे, जिस घोषणा पत्र को बनाने में 6 महीने लगा तो उसको हम क्या समझेंगे ? अगर घोषणा पत्र का अध्ययन करें, घोषणा पत्र में किये वादों पर हम विचार करें तो मेरे को नहीं लगता कि ये सरकार 5 साल में उसमें से किसी एक बिन्दु को पूरा

कर पायेगी। माननीय सभापति महोदय, कल माननीय मुख्यमंत्री जी गुड गवर्नेस के बारे में बोल रहे थे। पिछली सरकार के बारे में बोल रहे थे कि आपसे न तो गरूआ संभला और न गवर्नेस संभला। यह सही बात है। पिछली सरकार ने अच्छा काम नहीं किया इसलिए जनता ने जनादेश उनके विरोध में किया। अगर वह अच्छा काम करते, जनता के हित में काम करते तो शायद आज भी जनादेश उनके पक्ष में रहता। लेकिन कल भी मैं इस बात को अनुपूरक में बोला था, सरकार बदली है, दल बदला है, इधर के बैठने वाले उधर बैठ गये, लेकिन अधिकारी राज आज भी कायम है। अभी हमारे एक साथी माननीय सौरभ सिंह जी बोल रहे थे कि नीति कितनी भी अच्छी हो, लेकिन अगर नीयत साफ न हो, नीति को चलाने वाले सही न हों तो उस नीति का लाभ लोगों को नहीं मिलेगा। अगर उसके चलाने वाले, संचालन करने वाले की नीयत साफ हो तो खराब नीति भी अच्छी हो सकती है। माननीय सभापति महोदय, पूरे प्रदेश में यही अराजकता की स्थिति है। अधिकारी राज कायम है। मुख्यमंत्री जी, सरकार, मंत्री जी निर्देश दे दें, लेकिन अगर निर्देश कागज तक ही सीमित है, उसको पालन करने वाले अधिकारी अगर काम नहीं कर रहे हैं तो लोगों को क्या फायदा हो रहा है ? केवल समाचार पत्रों में छपेगा, टी.व्ही. में आयेगा कि इन्होंने आज ये घोषणा किया। माननीय सभापति महोदय, कर्ज माफी के बारे में अभिभाषण में भी ये बात आई... (जारी)...

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\g15\04.25-04.30

जारी...........श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- केवल समाचार-पत्रों में छपेगा, टीवी में आयेगा कि इन्होंने आज कर्जमाफी के बारे में यह घोषणा की । माननीय सभापति महोदय, अभिभाषण में भी यह बात आयी, कर्जमाफी की बात सभी सदस्यों ने की । सत्तापक्ष के सदस्यों ने तो सराहना की, विपक्ष के सदस्यों ने उस कमी को बताया लेकिन जिस ढंग से कर्ज माफी की घोषणा की गयी है छत्तीसगढ़ के केवल 30 प्रतिशत लोगों को उसका लाभ मिल रहा है आज भी 70 प्रतिशत लोग, 70 प्रतिशत किसान जो कृषि के लिये कर्ज लिये हैं आज भी उसके लाभ से वंचित हैं और आप 70 प्रतिशत लोगों को अगर उससे वंचित करते हैं तो हम कैसे उस किसान के विकास की बात करेंगे, कैसे हम लोगों के हित की बात करेंगे ?

माननीय सभापति महोदय, कल अंत में तो माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हम राष्ट्रीयकृत बैंक का अध्ययन करेंगे लेकिन प्राईवेट सेक्टर का बैंक जो आपकी अनुमति से संचालित है और हर जगह संचालित है, अगर वहां किसान कर्जा लिये हैं तो उस प्राईवेट सेक्टर के बैंक लोन का क्या होगा ? साहूकारों से जो कर्ज लिये हैं उनका क्या होगा ? इसमें किसान का क्या दोष है ? आपने तो कहा कि पूरा कर्ज माफी होगा, लोगों ने आपकी बातों पर विश्वास भी किया और इतना बड़ा आपको समर्थन दिया

जिसकी कल्पना आप स्वयं नहीं करते थे तो कम से कम आप उसके ऊपर विश्वास करो । माननीय सभापति महोदय, अगर नीयत की नीयत पर शक हो तो फिर क्या कहा जा सकता है, अगर आपकी नीयत साफ है तो कर्ज कितना भी हो आप उस बजट का बजट में प्रावधान करें तो निश्चित रूप से इसका लाभ होगा । गुडगवर्नेंस सुशासन की बात है, आप जब तक मजबूत प्रशासन नहीं रखेंगे, प्रशासन को अपने नियंत्रण पर नहीं रखेंगे तब तक एक बार नहीं सैकड़ों बार आप कर्ज माफी कर लो किसान दुखी ही रहेगा, किसान प्रताड़ित ही रहेगा, किसान रहेगा और पुन: आने वाले दिनों में वह कर्ज में लद जायेगा । किसान का क्या काम है ? कौन किसान फैक्टरी लगाने के लिये आपसे आवेदन लेकर आता है कि मुझको एन.ओ.सी. दे दो । कौन किसान फैक्टरी लगाने के लिये आपके पास बिजली के कनेक्शन के लिये आता है ? किसान का छोटा-छोटा काम है । पटवारी से उसको नक्शा-खसरा लेना है, अपने परिवार की मौत पर उसको फौती कटवाकर अपना नाम जोड़वाना है, नामांतरण करवाना है, जमीन खरीदी-बिक्री करता है तो नंबर छांट लेना है, सीमांकन करवाना है और आज यह तमाम् काम बिना किसी लेन-देन के किसी भी पटवारी हल्का पर नहीं हो रहा है । हर जगह पटवारी दलाली कर रहा है, दलाल रखा है, आप इस पर नियंत्रण नहीं रखेंगे, इस व्यवस्था को आप नहीं सुधारेंगे तो आप किसान के हित की बात कैसे करेंगे ? पूरे प्रदेश में एक पटवारी 4-4, 5-5 हल्के का काम देख रहा है । ठीक है, तत्काल व्यवस्था नहीं कर सकते, तत्काल पटवारी हर हल्का पर नहीं कर सकते लेकिन इस व्यवस्था को तो सुधार सकते हैं जो जड़ में भ्रष्टाचार घुसा है उस भ्रष्टाचार को आप समाप्त कर सकते हैं । मुआवजे की बात है, अब फिर मैं बोलूंगा तो मेरे साथी लोग बोलेंगे कि यह व्यवस्था किसने दी तो अब हम इसी पर जायें कि आप 50 साल राज किये, आप 15 साल राज किये तो इससे लोगों का हित थोडी न होगा, आप 50 साल के राज को भूलें, आप 15 साल के राज को भूलें । आपको जनता ने जनादेश दिया है, अब आपको क्या करना है, कैसे बेहतर काम कर सकते हैं, कैसे लोगों के हित में काम कर सकते हैं, कैसे लोगों को सुविधा दिला सकते हैं, कैसे लोगों को भ्रष्टाचार और शोषण से मुक्त करा सकते हैं, इनके बारे में अगर आपकी सोच होगी, आपका नजरिया होगा तब लोगों को लाभ होगा । 10-10 साल हो गये, सड़क बन गयी है, बिल्डिंग बन गयी है, नहर बन गया, बांध बन गया है लेकिन किसानों को आज भी मुआवजा नहीं मिला इसी सदन में संकल्प पारित हुआ था ट्रांसमिशन लाईन बिछेगा, टॉवर लगेगा और केंद्र सरकार ने घोषणा भी की, नियम भी लाया कि शतप्रतिशत मुआवजा के बाद कोई टॉवर कंपनी टॉवर लगायेगा लेकिन बिना मुआवजा दिये मेरे जांजगीर-चांपा जिले में..........जारी

..........श्री कुरैशी

जारी............श्री केशव चन्द्रा :- शत-प्रतिशत मुआवजे के बाद ही कोई टावर कंपनी, टावर लगा सकती है । लेकिन बिना मुआवजा दिये ही मेरे जांजगीर-चांपा जिले में 4-4 टावर लग गये । काम हुए साढ़े तीन साल हो गए, साढ़े तीन साल में अनेक शिकायतें हुईं, अनेक आंदोलन हुए। जिला प्रशासन का संरक्षण मिला, पुलिस का संरक्षण मिला । जहां-जहां किसानों ने मना किया, वहां पुलिस वाले डंडा लेकर खड़े हो गए । अगर आप ऐसे ही गवर्नमेंट चलाना चाहते हैं तो इस सरकार और उस सरकार में क्या अंतर रहेगा ? सभापति महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में सेवा सहकारी समिति कचन्दा है । सरकार ने धान खरीदी बंद कर दी । वहां सरकार ने धान खरीदी बंद कर दिया क्योंकि वहां पिछले साल 1 करोड़ रूपए के धान की कमी आई । कमी करने वाले कौन ? प्रशासन में बैठे हुए अधिकारी । वहां धान खरीदी कौन कर रहा था, देखरेख कौन कर रहा था ? और सज़ा किसको मिली ? किसानों को । आपका धान हम नहीं खरीदेंगे, आप 15 किलोमीटर दूर जाकर धान बेचोगे । सभापति महोदय, 11 तारीख को चुनाव का रिजल्ट आया, 12 तारीख को मैंने जिले के मुखिया कलेक्टर को पत्र लिखा, खाद्य विभाग के सचिव को पत्र लिखा, माननीय मुख्यमंत्री को पत्र लिखा । मुख्यमंत्री जी का एक निर्देश गया था कि जनप्रतिनिधियों का सम्मान होना चाहिए । एक महीना होने के बाद किसी अधिकारी का जवाब नहीं आया कि उस समिति में धान खरीदी होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए । आप किसानों के हित की बात करते हैं ।

सभापति महोदय :- माननीय कृषि मंत्री जी, माननीय सदस्य जिस मुद्दे के ऊपर बोल रहे हैं । उसका ज़रा परीक्षण करवा लें ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- धन्यवाद् सभापति महोदय । 15 दिनों में भी व्यवस्था हो जाएगी तो किसान अपना धान बेच सकेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय कृषि मंत्री जी, आज आसंदी से अच्छा निर्देश आया और सदन की गरिमा इससे बढ़ती है, मैं आपको प्रणाम करता हूं । आपने सरकार को ऐसे निर्देश दिये ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर मजदूरों के लिए कुछ नहीं कहा गया है । छत्तीसगढ़ प्रदेश किसानों का प्रदेश है तो दूसरी ओर छत्तीसगढ़ प्रदेश श्रम करने वाले मजदूरों का भी प्रदेश है। अपनी मेहनत के बदौलत काम करके अपने परिवार का लालन-पालन करने वाले उन मजदूरों के हित में कहीं बात नहीं आई ।

समय :
4:33 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

आज मजदूर पलायन कर रहे हैं । मजदूर बंधक बन रहे हैं, कहीं भी सरकार ने यह व्यवस्था की कि कितने मजदूर पलायन करके गए हैं और क्यों गए हैं? जब तक ऐसे काम करने वाले, मेहनत करने

वाले जिनकी बदौलत हम अपनी उपलधि गिनाते हैं । प्रदेश का और राष्ट्र का निर्माण करते हैं । ऐसे मजदूरों के हाथ में काम की व्यवस्था नहीं बनाएंगे तो संभव नहीं है कि इस देश और प्रदेश का विकास होगा ।

श्री दीपक बैज :- चन्द्रा जी, मजदूरों को टिफिन बांटना सही था या गलत था, यह बताइए ?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- गलत था या सही था उसको आप भूल जाइए । आप इधर बैठकर बहुत चिल्लाते थे । क्या आपने मनरेगा के बकाया का भुगतान कराने के लिए सरकार से एक बार भी कहा ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय चन्द्रा साहब, हम लोग सब सुधारेंगे, अभी तो जुमा-जुमा 15 दिन ही हुए हैं । आप इंतजार करिये, सब व्यवस्था करेंगे ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- गलत था या सही था, यह विषय अलग है । लेकिन आपके क्षेत्र में भी मजदूर हैं, मेरे क्षेत्र में भी मजदूर हैं, पूरे प्रदेश में मजदूर हैं। आपको अच्छा लगता है क्या कि मजदूर अपने परिवार को छोड़कर, बाल बच्चों को छोड़कर, अपने घर परिवार, अपने नाते रिश्तेदारों को छोड़कर उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, दिल्ली जाकर बंधक बनें, वहां काम करें, काम के लिए लालायित हो अपने पेट को पालने के लिए बाहर जाकर वे लाचार ओर बेबस हों । मेरे हिसाब से किसी भी जनप्रतिनिधि को यह अच्छा नहीं लगता होगा । मनरेगा में कही भी काम नहीं चल रहा है । थोड़ी बहुत स्वीकृति, छोटे मोटे काम की हुई थी, आपकी सरकार बनने के बाद आपने वह पैसा भी वापिस मंगवा लिया । क्यों मंगा लिए वापिस, किसलिए मंगा लिए वापिस ? ऐसा निर्देश क्यों ? माननीय सभापति महोदय, देश का निर्माण करने वाले युवा हैं । वे हमारा आने वाला भविष्य है, केवल अपने परिवार का भविष्य नहीं बल्कि देश का भविष्य भी हैं । सरकार ने उनको एक सपना दिखाया कि रोजगार देंगे। लेकिन आज ....।

--- श्री ठाकुर -

ठाकुर\09-01-2019\g17\04.35-04.40

जारी............श्री केशव प्रसाद चंद्रा:- केवल उस परिवार के भविष्य नहीं बल्कि देश के भविष्य भी हैं। सरकार ने उनको एक सपना दिखाया। रोजगार देंगे लेकिन आज माननीय अध्यक्ष महोदय, 2 मिनट लेकिन आज इस अभिभाषण में कहीं भी बेरोजगार को रोजगार देने के लिए बात नहीं हुआ। मैं माननीय अध्यक्ष महोदय सरकार को निश्चित रूप से धनयवाद दूंगा उन्होंने बहुत अच्छा निर्णय किसान के हित में लिया है। टाटा इस्पात संयंत्र, उसमें जो अधिग्रहित जो जमीन था उनको किसान को वापस दिलाने का लेकिन एक ही संयंत्र के वापस करा देने से पूरा सिस्टम नहीं बदलेगा। बहुत सारे ऐसे जगह है जहां किसान का जमीन अधिग्रहित किया गया है लेकिन 5-5 साल 6-6 साल से 7-7 साल से वहां काम शुरू नहीं हुआ। मेरे खुद के विधानसभा में माउजर बियर बिर्रा में माउजर बियर स्थापित करने के लिए 7 साल पहले 1 हजार एकड़ किसानों का जमीन अधिग्रहित किया गया। आज 7 साल गुजरने के बाद भी एक भी काम शुरू नहीं हुआ। मैं माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से सरकार से निवदेन करना

चाहता हूं ऐसे तमाम जो संयंत्र जिसके लिए जमीन अधिग्रहित किया गया अगर वह नहीं खुला है तो वो जमीन भी किसान को वापस करायी जाये। छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा अगर शोषण हुआ है लोगों का सबसे ज्यादा पैसा बर्बाद हुआ है तो चिटफंड कंपनी के कारण हुआ है। एक बड़ा सपना दिखाया दुगुना कर देंगे डबल कर देंगे 6 गुना कर देंगे 10 गुना कर देंगे और प्रलोभन पर आ करके लोगों ने बेतहाशा पैसा उस चिंटफंड कंपनी में लगाया है। छोटा-मोटा कार्यवाही जरूर हुआ लेकिन किसी भी पैसा लगाने वाले।

श्री अजय चंद्राकर:-आप तो बजट में अभिभाषण में कुछ नहीं बोलूंगा घोषणा पत्र में बोल दिये हो मांग करो घोषणा पत्र में वापस किया जाएगा और पहले कसम खा दिये हो कुछ नहीं बोलूंगा करके।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय चंद्राकर जी।

श्री अजय चंद्राकर:-आप पहले ये बोलोगे कि हाथी के खिलाफ कुछ किया गया तो प्रिविलेज मोशन कर दूंगा वनमंत्री के खिलाफ। या फिर इतना ही बोलकर बैठो। उसमें घोषणा पत्र में है वो।

अध्यक्ष महोदय:-माननीय चंद्राकर जी। समय बहुत हो चुका है। मैं सदन से यह जानना चाहता हूं कि कितने बजे तक आप बैठना चाहते हैं, 12 बजे 2 बजे रात तक उस हिसाब से मैं व्यवस्था करूं।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा:- आसंदी के निर्देश का पालन करेंगे। जितने समय तक आप बैठाते हैं।

अध्यक्ष महोदय:- अभी 25 लोग तो इस पक्ष से बचे हैं। 5 लोग इधर से बचे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- हम तो आपसे निवेदन करते हैं कि हमारी तरफ से नेता प्रतिपक्ष बोल लें उधर से माननीय मुख्यमंत्री जी बोल लें। समाप्त कर दें।

अध्यक्ष महोदय:- वो कल बोल लेंगे आज मैं जितने नये सदस्य हैं उनको भर समय दूंगा जो पुराने विधायक हैं उनको समय नहीं दूंगा। शांतिपूर्वक बैठिए आप।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा:-माननीय चंद्राकर जी बोल रहे थे लेकिन राज्यपाल के अभिभाषण में आया है चिटफंड कंपनी के पैसे को वापस करवाएंगे और मैं अभिभाषण पर ही बोल रहा हूं कहीं बाहर नहीं बोल रहा हूं और निश्चित रूप से बहुत बड़ा निर्णय होगा। ये अलग बात है कि सरकार पैसे लगाने वाले को कैसे वापस करते हैं। चिटफंड कंपनी के मालिक से पैसा ले करके के वापस करते हैं, उनके संपत्ति को जब्त करके व करके वापस करते हैं, या सरकार ऐसा बजट में कोई व्यवस्था बनाता है कि उनको कहीं पैसा मिले या न मिले पैसा लगाने वाले व्यक्ति को मिल जाए तो निश्चित रूप से ये बहुत बड़ा कदम होगा।

अध्यक्ष महोदय:- डॉ. लक्ष्मी ध्रुव।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा:- माननीय अध्यक्ष महोदय एक मिनट। अभी लगातार समाचार पत्रों में पढ़ने को मिला और कई लोगों ने सूरजपुर जिला से मुझको फोन करके भी कहा कि 5-6 दिनों में हाथी के द्वारा लोगों को मार दिया गया अनेकों लोगों को घायल किया गया।

श्री बृहस्पत सिंह:- वो आपका वाला हाथी तो नहीं था।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा:- पिछले समय आप सदन पर नहीं थे। हाथी की जब समस्या आया तो मैंने कहा था कि हाथी का सरकार बना दो हाथी को हम संभाल लेंगे। हाथी की सरकार अब ऐसा है कि अब हाथी को भी बोलेंगे मान जाओ भैय्या तो बोलेंगे आपका तो सरकार नहीं है। तो ये काम आपका है। आपको संभालना है हाथी को। लेकिन ये जो मौत हुआ है समस्या गंभीर है तत्काल कोई निराकरण नहीं है लेकिन तत्काल में आप ये राहत दे सकते हैं जिनकी मौत हुई है उनको आप कम से कम मुआवजा दें। उनको मुआवजा दें तत्काल पीड़ित व्यक्ति हैं आजतक उनको मुआवजा नहीं मिला। उनको मुआवजा दें और भविष्य में प्रयास करें कि ऐसा हाथी और आदमी का द्वंद मत हो जिससे कोई नुकसान हो।

श्री अरविन्द

अरविंद\09-01-2019\g18\04.40-04.45

अध्यक्ष महोदय :- डॉ0 लक्ष्मी ध्रुव।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- हमारा तो जय भीम है, जय भीम ही रहेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- हम तो हाथियों का सरंक्षण करेंगे, यह सोच रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने प्रदेश स्तरीय बात को छोड़िये, आप अपने क्षेत्र की बात करिये। आपका पहला भाषण है।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा भी नंबर था।

अध्यक्ष महोदय :- आपका नंबर नहीं आयेगा, आप बैठिये।

श्री दीपक बैज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षिप्त में बोलूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठ जाईये न, मैं बुलाता हूँ। पहले नये लोगों को बोलने दीजिये।

डॉ0 (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 07 तारीख को माननीय राज्यपाल महोदया आनंदी बेन पटेल ने अभिभाषण दिया है। उनमें मुद्दे थे। मैं भारतीय संविधान के बारे में कहना चाहूंगी। अनुच्छेद-1 क, भाग-4 राज्य के नीति निर्देशक तत्व को पूर्ण करता है। क्योंकि राज्य के नीति निर्देशक तत्व एक लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करता है। राज्य को निर्देश देता है कि उसे किस मार्ग पर चलना है और लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के लक्ष्य को प्राप्त करना है। तो जो अभिभाषण है, उसमें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, न्याय, पर्यावरण, अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा, इन सारी व्यवस्थाओं को हमारे राज्यपाल महोदया ने पूर्ण किया है। हमारा 2018 का चुनाव के जन घोषणा-पत्र में जिन मुद्दों को शामिल किया गया है, उसमें भाग-4 को पूर्ण रूप से शामिल किया गया है। अभिभाषण में हमारे जो राष्ट्रीय आंदोलन के सेनानी थे, जिन्होंने त्याग किया है, बलिदान किया है और संसदीय लोकतन्त्र के बीज का सपना देखा था, हमारे राज्यपाल महोदया ने इस परम्परा को निभाने की बात कही है। हमारे आधुनिक भारत के निर्माता पं. जवाहर लाल नेहरू, श्री लाल बहादुर

शास्त्री, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद और भीमराव अम्बेडकर के जो उच्च मूल्य से संबंधित जो विचार हैं, उनका भी सम्मान करते हुए उनको अपने अभिभाषण में शामिल किया है। मैं उनके इस अभिभाषण का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। हमारे जो पुराने नेता थे, जिन्होंने देश के लिए बलिदान किया, त्याग किया और देश को आगे बढ़ाने के लिए सर्वोच्च मूल्य, सर्वोच्च मूल्य मतलब पं. जवाहर लाल नेहरू हमारे जो प्रथम प्रधानमंत्री थे, वह आधुनिक भारत के निर्माता थे। वे आधुनिक भारत के निर्माता होने के कारण आंतरिक और विदेश नीति का प्रतिपादन किया और उन नीतियों में विरोधी पक्षों को भी शामिल किया, अपने कैबिनेट में भी शामिल किया। लाल बहादुर शास्त्री की बात करते हैं, तो लाल बहादुर शास्त्री इतने राष्ट्रभक्त थे कि उनको ताशकंद समझौता इतना खला कि उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। यदि डॉ0 अम्बेडकर की बात करें तो उन्होंने स्त्री शिक्षा ...।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा।

डॉ0(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- जितने भी बातों को जन घोषणा-पत्र में शामिल किया गया है, मैं उन सब बातों का समर्थन करती हूँ। क्योंकि वह हमारे भाग-4 की सभी बातों को पूर्ण करता हूँ। बस मैं इतना कहती हूँ। धन्यवाद। जय हिन्द।

आदरणीय महोदय, मैंने एक डाटा तैयार किया था। यदि आप आज्ञा दें तो।

अध्यक्ष महोदय :- क्या?

डॉ0(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- किसानों एवं ग्रामों के विकास के लिए और उनकी अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए हमारी सरकार ने नरवा-घुरवा, गरवा और बाड़ी के समग्र विकास की अवधारणा पर काम करेगी। यदि हम नरवा की बात करते हैं, भूजल स्तर

.....जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\g19\4.45-50

जारी...डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- पर काम करेगी । यदि हम नरवा की बात देखते हैं तो भू जल स्तर 24.32 और सिंचाई 19 लाख हेक्टेयर सिंचित है, जबकि 58 लाख, 30 हजार हेक्टेयर जमीन सिंचित योग्य है और हमारा राष्ट्रीय औसत 38 प्रतिशत है और हम 24 प्रतिशत में पहुंचे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महोदया का मैडन स्पीच है इसलिए मैं टोकने के लिए खड़ा नही हुआ हूं....

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय ने उनको बोलने की अनुमति दी है, वे एक नई सदस्या हैं और पहली बार अपनी बात बोल रही हैं...

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट सुन लो, मैं उनके खिलाफ नहीं बोल रहा हूं । हर बात में नहीं खड़ा होना चाहिए । उनकी मैडन स्पीच है, इसलिए मैं टोकने के लिए खड़ा नहीं

हुआ हूं, पर एक नई परम्परा पड़ रही है कि देखकर पढ़ा जा रहा है । ये परम्परा हमारे विधान सभा में नहीं थी । एक्सटेम्पर उनको जो बोलना है, बोलिए... ...(व्यवधान).

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- वे पहली बार आई हैं, उनको अध्यक्ष जी ने अनुमति दी है, टोकना जरूरी है क्या । ...(व्यवधान)

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- अध्यक्ष महोदय, ये बिल्कुल गलत बात है, चन्द्राकर जी टोका-टाकी कर रहे हैं...(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, पहली बार निर्वाचित महिला अगर पढ़ रही हैं तो आपको क्यों दिक्कत हो रही है...(व्यवधान)

स्कूल शिक्षा मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- वे नई सदस्य हैं, उनको नहीं टोकना चाहिए, बहुत आपत्तिजनक बात है...(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, वे पहली बार आई हैं, देखकर पढ़ रही हैं तो आपको क्या दिक्कत है...(व्यवधान)

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- आप जब पहली बार आये थे तो उतना भी नहीं आता था...(व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- वे पहली बार निर्वाचित हैं, पहली बार सदन में बोल रही हैं तो उनको प्रोत्साहित करना चाहिए...(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- चन्द्राकर जी, वे पहली बार निर्वाचित हुई हैं, देखकर पढ़ रही हैं तो पढ़ने दो, ये लोग तो कई बार चुनकर आये हैं तो भी देखकर पढ़ते हैं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए ...(व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, मैं आंकड़ों को देखकर पढ़ रही थी...(व्यवधान)

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, अभी रमन सिंह जी बोल रहे थे, वे भी आंकड़े देखकर ही बोल रहे थे...(व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, आपके समय में आपको टोका गया था इसलिए आप बदला ले रहे हैं ...(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली बार है तो उनकी बात को सुनेंगे, बहुत अच्छा बोल रही हैं, सब चीज है । मैंने सिर्फ इस बारे में कहा कि हमारे सदन में देखकर पढ़ने की नई परम्परा स्थापित हो रही है, ये बस मैंने आपसे कहा । वे बहुत अच्छा बोल रही हैं, उनकी प्रशंसा करता हूं । ...(व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- फिर आपको तकलीफ क्या है ...(व्यवधान)

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- आंकड़े तो पूर्व मुख्यमंत्री जी भी देखकर बोल रहे थे ...(व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- माननीय चन्द्राकर जी, सुनिए...

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अच्छा ठीक है, मैं अपने शब्द वापस लेता हूं । ...(व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- मैं वापस लेने के लिए नहीं बोल रहा हूं, सम्माननीय सदस्य प्रोफेसर हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- इस सदन में भी मंत्रिगण पढ़ते हुए दिखे हैं इसलिए इसमें ज्यादा आपत्ति नहीं करनी चाहिए, मंत्रि भी देख-देखकर अपना भाषण दिए हैं, आप अपना भाषण समाप्त करिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय चन्द्राकर जी की पुरानी आदत है । ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग समय खराब करने के लिए खड़े हो जाते हो।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, मैं ये कहना चाहती हूं कि 2018 की जो जन घोषणा पत्र है, उसका मैं पूर्ण रूप से समर्थन करती हूं और खूबचंद बघेल जी ने जो सपना देखा है, उसको हमारी सरकार पूर्ण करेगी, मैं बस इतना ही कहना चाहती हूं ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा (धरसींवा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी सरकार एवं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने वर्ष 2013 में घटित झीरमघाटी की दुर्घटना के लिए सरकार बनते ही एसआईटी जांच के आदेश दिए हैं, इसे मेरे एवं झीरमघाटी में शहीद हुए परिवार को न्याय मिलने का भरोसा हुआ है, जो षड़यंत्र किये हैं, वह सामने आयेगा । जो सुरक्षा में चूक के लिए जवाबदार हैं, उन्हें सजा मिले ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने हमारे घोषणा-पत्र में उल्लेख कृषि ऋण माफी पर अमल करते हुए सरकार बनते ही सबसे पहला निर्णय लेते हुए कृषि ऋण माफी की घोषणा की, साथ ही किसान...

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\h10\04.50-04.55

जारी...श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- हमारे घोषणा पत्र में उल्लेख किया कि कृषि ऋण माफी पर अमल करते हुये हमारी सरकार बनते ही सबसे पहला निर्णय लेते हुये कृषि .ऋण माफी की घोषणा की । साथ ही किसान का धान समर्थन मूल्य 25 सौ रूपये क्विंटल जो निर्णय लिया, वह सराहनीय है । माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश में पूर्व सरकार के शासन में जिन चिटफंड कंपनी ने हमारे राज्य की भोली-भाली जनता के साथ आर्थिक धोखाधड़ी की है, उनके खिलाफ हमारी सरकार कठोर कार्यवाही तथा निवेशकों की राशि लौटाने के लिए यथासंभव कार्यवाही करने के लिए जो निर्णय लिया है, वह उल्लेखनीय है। माननीय अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं हमारी सरकार और माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा

छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता के हित के लिए किये गये फैसलों के लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ एवं धन्यवाद देती हूँ। आपने बोलने के लिए मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :-श्रीमती छन्नी चन्दू साहू ।

श्रीमती छन्नी चन्दू साहू (खुज्जी) :- अध्यक्ष महोदय, पूरा सदन ला जय जोहार । माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सबसे पहली किसान माटी पुत्र मुख्यमंत्री ला धन्यवाद देना चाहूं । 15साल में पहली बार ऐसे सरकार हरै, पहली तो उद्योगपति मन के कर्जामाफ करत रहिसे, आज पहली बार हमर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ह पहली कलम चलाईसे तो किसान मन के कर्जामाफ बर चलाईसे । एखर लिये मोर पूरा खुज्जी विधान सभा के किसान अऊ राजनांदगांव जिला के किसान के तरफ से हदय से मुख्यमंत्री और मंत्रिगण ला धन्यवाद देना चाहूं । ओखर साथ कहे गे हे कि छत्तीसगढ़ धान के कटोरा ए, जिंहा किसान मन निवास करथे । अऊ धरती माता के सेवा करके अन्न ला उगाथे । लेकिन आज तक 15 साल में भारतीय जनता पार्टी के नेता मन किसान के प्रति हित नइ करिस । जेन किसान ह धरती माता के सेवा करके अन्न ला उगाथे, ओखर सही दाम नई दिस, हमर प्रदेश के मुखिया सम्मानीय भूपेश बघेल जी हा हमर किसान के हित के बारे में 25 सौ रूपया क्विंटल और कर्जा माफ घोषणा पत्र में लिखिस औ करिस । मैं हदय से धन्यवाद देना चाहथंव । साथ ही साथ कल हमर पूर्व मुख्यमंत्री जी हा बोलथ रहिस हावय, 15 साल में राजनांदगांव के किसान हा बहुत खुशियाली मनाईसे । अइसे बात ला पूर्व मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह हा बोलथ रहिसे। सम्माननीय अध्यक्ष महोदय जी, राजनांदगांव के 50 हजार किसान जब सड़क मा उतरिसे त भारतीय जनता पार्टी के नेता मन हा, 144 के धारा किसान ऊपर लगईसे । जे आज सदन में नौटंकी करथ रहिसे, किसान हित के जो बात करत रहिसे, कहां रहिसे ओ दिन किसान मन बर 144 के धारा लगइस भारतीय जनता पार्टी हा । कहां रहिसे जो किसान हितैषि बात करत रहिसे ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद, धन्यवाद । आप बैठ जाओ ।

श्रीमती छन्नी चन्दू साहू :- एक मिनट अध्यक्ष महोदय जी, यही भारतीय जनता पार्टी के स्वाथ्य मंत्री जी हा हड़बड़ गोठियात रहिथे, अऊ बोलत रहिथे, मैं अवगत कराना चाहूं, जिला पंचायत में स्वास्थ्य विभाग के सभापति रेहेंव, जेमे मेडिकल कालेज में एक बच्ची के लाश के पी.एम. करवाये बर 700 रूपया कमीशन मांगत रहिसे, भारतीय जनता पार्टी के मंत्री हा । मैं अवगत कराना चाहूं । हम सब मिलके, जेन भारतीय जनता पार्टी किसान मन के सीना में गोली चलइया, आप किसान मन के बददुआ लगिसे, जेन शिक्षाकर्मी हमर बहिनी जे अपन अधिकार के लड़ाई लड़े बर रायपुर में उतरिस, अपन लइका ला दूध पिलाथ रहिस तेला छिनिस ए भारतीय जनता पार्टी के नेता मन । एसन नेता मन जो आज बहिष्कार करिसे, मैं बताना चाहूं अध्यक्ष महोदय जी, निश्चित रूप से एक सामान्य परिवार के बहू यहां विधायक के रूप में आय हंव ।हमर मुख्यमंत्री जी ला भी धन्यवाद देना चाहूं कि हम सब मिलके किसान हितैषी

काम ला करबो । निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ के किसान ला आगे बढ़ाबो । आप बोले के मौका देव, एखर लिए आपला हदय से धन्यवाद । जयहिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ ।

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\h11\.-.5

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लोकतंत्र के इस मंदिर में प्रथम बार मुझे बोलने का अवसर मिल रहा है, आप सभी को प्रणाम करती हूं।

माननीय महोदय, सबसे पहले तो राज्यपाल के जिस गरिमामय अभिभाषण में कंडिका 2 के विषय में मैं बात करना चाहती हूं जिसमें आदरणीय भाई साहब भगत जी ने उस विषय पर बात किया था उसे मैं दोहराना चाहती हूं। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि दीवारों पर जिस चित्र को लगाते हैं यदि उसे उतार दिया जाए तो चित्रों को उतारने से इतिहास के तथ्यों को बदला नहीं जा सकता। वास्तव में इस बात से हम सब सहमत हैं? यह बात प्रमाणित है, यह कथन सत्य है। किन्तु खेद के साथ मुझे यहां पर पूरे सदन के माध्यम से सभी का ध्यान आकृष्ट करना पड रहा है कि इस इतिहास में हम देखते हैं कि एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और एकात्म मानववाद जो इतिहास के सुनहरे अक्षरों में उनकी विचारधारा अंकित है और उनके चित्रों को विभिन्न जगहों से हटा दिया गया है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि उन चित्रों को हटाने से क्या इतिहास को बदला जा सकता है? और यदि नहीं बदला जा सकता तो माननीय महोदय मैं इस सदन के माध्यम से आपसे मांग करती हूं कि गरिमामय कलयाणकारी इस एकात्म मानववाद की विचारधारा से हमारे आने वाली पीढ़ी को अवगत कराने के लिए हम उनके चित्रों को उनके स्थान पर सुनिश्चित कर दें।

(मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में मेरा प्रथम आगमन हुआ था और उस दिन से देख रही थी कि लगातार किसानों के बारे में बात चल रही थी और सत्ताधारी पक्ष अपने आपको किसान हितैषी बता रहे हैं। मैं जानना चाहती हूं क्या सत्ताधारी पक्ष जिस हथियार को लेकर यहां पर बैठे हुए हैं अपने घोषणा पत्र से यदि वह एक भी बिन्दु इस विषय को मैं दोहराना चाहती हूं कि एक भी बिन्दु यदि वह लागू करते हैं, कहते हैं कि किसानों का कर्ज माफ लेकिन....।

(एक महिला सदस्य द्वारा बोलने हेतु खड़े होने पर।)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू:- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट मैडम, महिला हैं, महिलाओं का सम्मान कीजिए। (हंसी)

एक माननीय सदस्य :- जब आपस में महिलाएं बात करेंगी तो हम लोग बीच में कुछ नहीं बोलेंगे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू:- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे समय दीजिए, मैं इस विषय को दोहराना चाह रही हूं क्योंकि ये बहुत गरिमामय सदन है और मैं यहां पर ग्रामीण क्षेत्र का नेतृत्व करती हूं। मेरे किसान भाईयों के लिए मैं यहां पर कुछ कहहना चाह रही हूं और उसमें माननीय महोदय जी मैं आपका संरक्षण भी चाह रही हूं। मैं यहां पर हमारे किसान भाईयों के लिए खड़ी हुई हूं और एक भी विषय पर यदि वह अपनी बातों को लागू करते हैं तो बराबर हम उनका समर्थन करेंगे। माननीय महोदय, उन्होंने कहा कि यदि हमारी सत्ता आती है तो हम धान का समर्थन मूल्य 2050 से बढ़ाकर 2500 रूपये करेंगे। लेकिन उन्होंने इस तिथि को बढ़ाकर मार्च और अप्रैल किया क्योंकि बीते हुए विधानसभा में उन्होंने यही किया और अभी आने वाले लोकसभा चुनाव में वह यही करना चाह रहे हैं और लोगों को वह चतुराई से यह कहने का प्रयास कर रहे हैं और फिर से वह लोकसभा चुनाव में अपनी चालाकी दिखा रहे हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि मैं भी उस ग्रामीण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हूं और ऐसे जो जनता के मन से जो खिलवाड़ किया जा रहा है वह खिलवाड़ न हो। मैं निवेदन करना चाहती हूं कि 2050 से लेकर 2500 के बीच की जो राशि है वह हमारे किसान भाईयों के खाते में जानी चाहिए। माननीय महोदय, सिर्फ एक विषय मैं यहां पर और रखना चाहती हूं यहां पर लगातार चिटफंड कंपनियों का जिक्र हो रहा था। चिटफंड कंपनियों में जिन जिन निवेशकों ने अपने निवेश किए हैं वह बड़ी आशा के साथ सत्तापक्ष की ओर निहार रहे हैं कि कब उनकी निवेश की हुई राशि उनको वापस होगी लेकिन इनकी एक भी विषय पर बात नहीं हुई। उनका विषय यही था कि चिटफंड कंपनियों से पैसे वापस दिलाये जायेंगे लेकिन उन्होंने यह उल्लेख नहीं किया है कि

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\h12\05.05-05.10

..जारी ... श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनका विषय यही था कि चिटफंड कंपनियों से पैसे दिलाये जाएंगे, लेकिन उन्होंने यह उल्लेख नहीं किया है कि कौन कौन से चिटफंड कंपनियां है और कितने निवेशक हैं और कितने लोगों ने जिन्होंने निवेश किया है उसकी राशि कितनी होगी। माननीय महोदय जी, आज बहुत भरे मन से मुझे आज ये कहना पड़ रहा है कि सदन में जो अभिभाषण होता है वो सत्ता पक्ष के कार्यो का वर्णन और सच्चाई के कार्यो का वर्णन होता है और वो उनका आइना होता है, किन्तु महोदय जी, मुझे यहां पर सत्ता पक्ष की मंसा मुझे सही नहीं लग रही है। लगातार वो अपने आपको इस तरह पेश करते हैं कि हम किसानों से जुड़े हैं, हम जनता से जुड़े हैं लेकिन खाली उनका अभिभाषण है। यहां पर कहीं सच्चाई नहीं है। अंत में मैं अपनी बातों को समाप्त करते हुए फिर से निवेदन करना चाहती हूं कि जिन मुद्दों पर मैंने यहां पर विषयों की बात की है, उन्हें ध्यान दीजिए। मुझे समय देने के लिए आपका धन्यवाद ।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी बालोद) :- आदरणीय अध्यक्ष जी, सर्वप्रथम मैं आपके साथ

सम्मानीय सदन के सभी जन को मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूं कि महामहिम जी के अभिभाषण जैसे महत्वपूर्ण शब्दों पर मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया है। मैं किसानों के बारे में आपको बताना चाहूंगी, आपको स्मरण दिलाना चाहूंगी कि किसानों को अपने इस अधिकार लेने के लिए पिछले 15 साल में कई बार सड़क की लड़ाई लड़नी पड़ी। आपको याद दिलाना चाहूंगी कि हमारे धमतरी में जो कांड हुआ था। किसानों के ऊपर जो लाठीचार्ज जैसे निंदनीय कृत्य को आजमाया जा चुका है, विपक्ष के लोगों के द्वारा साथ ही मैं हमारी सरकार की जन घोषणा पत्र पर परिपालन करते हुए छत्तीसगढ़ के किसान का खुशहाली का संदेश देना चाहती हूं। मैं हमारे विपक्ष में बैठे हुए लोगों को बताना चाहती हूं कि 16 लाख 65 हजार से अधिक अन्नदाता किसानों का 6100 करोड़ से अधिक ऋण माफ किया जा चुका है। साथ ही किसानों को उनकी मेहनत का असली हक देते हुए हमारी सरकार 2500 रूपये क्विंटल की दर से धान खरीदी किये जाने का निर्णय तत्काल लागू किया है। छत्तीसगढ़ में कई ऐसे गरीब परिवार हैं, जो अपने लिए मकान या दुकान हेतु जमीन के छोटे से तुकड़े के खरीदी नहीं कर सकते, हमारी सरकार ने 5 डिस्मिल के कम भू भाग की खरीदी बिक्री पर रोक हटाकर लाखों गरीब परिवारों को अपना सपना पूरा करने का अवसर दिया है। ये हमारे लिए बहुत ही खुशी की बात है। साथ में पिछले 20 दिनों से हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की जनता के आशा से बढ़कर जनहित का कार्य किया है। हमें पूरा विश्वास है कि महामहिम जी के अभिभाषण में कही गई एक एक बात को हमारी सरकार अवश्य पूरा करेगी। मैं इसी आशा और विश्वास के साथ अपनी बातों को समाप्त करती हूं कि महामहिम जी के अभिभाषण का अंश गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ का संकल्प हमारी सरकार अवश्य पूरा करेगी। धन्यवाद।

श्रीमती इंदू बंजारे (पामगढ़):- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपका बहुत बहुत धन्यवाद करना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे राज्यपाल जी के अभिभाषण में चर्चा करने का समय दिया, सभी को बहुत बहुत धन्यवाद। मैं अपनी बातों को रखने से पहले एक कविता के माध्यम से बोलना चाहती हूं कि छत्तीसगढ़ का कहे धान का कटोरा मगर ये कटोरा मुझे खाली ही नजर आती है, क्योंकि छत्तीसगढ़ को हर मजदूर किसान बेरोजगार का पेट बाहर जाकर ही भरता है। जल है, जमीन है, उपजाऊ धरती है फिर भी मजदूर किसानों का पेट और आत्महत्या करने की जो दर है वो बढ़ती ही जाती है। मैं आपको बताना चाहती हूं कि जिस तरह से इस विधानसभा में समस्त माननीय सदस्यों ने सत्ता पक्ष के विपक्ष के सभी सदस्यों ने किसानों के मुद्दों को यहां पर रखा है लेकिन मैं सभी को ये पूछना चाहती हूं कि क्या यहां पर सिर्फ चर्चा कर लेने से, उनके मुद्दों को यहां पर रख लेने से उनको हक अधिकार प्राप्त हो रहा है।

जारी श्रीमती सविता

जारी श्रीमती इन्दू बंजारे :- उनको हक अधिकार प्राप्त हो रहा है? जमीनी स्तर पर न तो कोई उनको मुआवजा मिल रहा है, न किसानों को समर्थन मूल्य मिल रहा है, जो किसान आत्महत्या करके अपने जीवन को गंवा रहे हैं उनको उनका अधिकार प्राप्त नहीं हो रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय,सत्तापक्ष में जो बैठी हुई सरकार है उन्होंने घोषणापत्र निकाल तो दिया है, लेकिन उसमें किसी भी बिन्दु पर आज तक अमल नहीं किया। मैं अपने वक्तव्य में उनसे पूछना चाहती हूँ कि सिर्फ कागजी कार्यवाही करने से किसानों का समर्थन मूल्य नहीं दिला सकते। जब तक हम धरातल में उनका समर्थन मूल्य दिलाने की कोशिश नहीं करेंगे तब तक किसानों का हित नहीं हो सकता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदया ने अपने अभिभाषण में शराब बंदी के बारे में नहीं कहा था, मैं उसके बारे में बोलना चाहती हूँ कि हमारे आर्थिक और नैतिक पतन का प्रमुख कारण शराब ही है। आज जो हमारे बच्चे 8, 9, 10 साल की उम्र में शराब की आदत हो जा रही है उसका प्रमुख कारण समाज या शासन की जो व्यवस्था है उसके कारण हमारे बच्चे शराबी जुआरी हो गये हैं और नशे के इतने आदि हो चुके हैं कि उनको उनके परिवार जन संभाल नहीं पा रहे हैं तो मैं आपके माध्यम से सरकार से ये निवेदन करना चाहती हूँ कि जिस तरह से उन्होंने अपने घोषणापत्र में 10 दिनों के भीतर किसानों का मुआवजा और समर्थन मूल्य देने की बात कही है उसे भी ध्यान में रखकर अपने शराब की फैक्ट्री को जल्द से जल्द बंद करायें और गली-गली, चौराहे में जहां पर शराब बिकती है उसको बंद कराने की कोशिश करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, साथ ही मैं एक बात और बोलना चाहूंगी कि जिस तरह से महिलाओं के संरक्षण देने की व्यवस्था की बात घोषणापत्र में की गई है जमीनी स्तर पर उनको सही मायने में संरक्षण दें। क्योंकि आज भी हमारी महिलाओं के साथ अत्याचार और दुर्व्यवहार बढ़ता ही जा रहा है, कम होने के बजाए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँ। जय भीम। जय भारत। जय छत्तीसगढ़।

सुश्री शकुन्तला साहू (कसडोल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया और सभी विधायकगण और सबको नये बच्छर के गाड़ा-गाड़ा बधाई देना चाहती हूँ कि नये साल में आज हम लोगों को बोलने का मौका दिया। हमारे अभी माननीय मुख्यमंत्री भूपेश एक किसान के बेटे हैं और हम लोग भी छत्तीसगढ़ में देख रहे हैं कि सबसे ज्यादा हम लोग किसान भाई लोग और हमारे कांग्रेस पार्टी की 10 महिलाओं को देखें तो वे किसान घर की बेटी है जो छत्तीसगढ़ के किसान के बेटी और बेटा लोग आज इस विधान सभा में सबसे ज्यादा जीतकर आये हैं। मैं महिला होने के नाते ये कहना चाहती हूँ कि हमारी सरकार महिलाओं के क्षेत्र में जो घोषणा पत्र बनायी है, वह बहुत ही सराहनीय है जो महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए हमारी सरकार

जो कार्ययोजना बना रही है, वह महिलाओं की दशा दिशा बदलने के लिए कटिबद्ध है। मैं बताना चाहती हूँ कि जो भाजपा की सरकार थी, वह पहले महिलाओं को संरक्षण नहीं देती थी। महिलाओं की दुर्दशा इतनी ज्यादा खराब थी कि माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके संज्ञान में लाना चाहूंगी कि पिछले 15 सालों में प्रदेश में जो भाजपा सरकार थी, तब से 19 हजार, 670 महिलाएं लापता है, जो भाजपा की सरकार थी उसको आज तक ढूंढकर छत्तीसगढ़ में नहीं ला पायी है। वे अभी तक लापता है। पिछले 5 सालों में भाजपा सरकार में 12 प्रतिशत की दर से बलात्कार की घटना बढ़ी हुई है और छत्तीसगढ़ में आप देख रहे हो, चाहे महिला हो या लड़की हो, छत्तीसगढ़ में महिलाओं के बलात्कार की घटनाओं से दुर्दशा बढ़ती जा रही है और जिससे मालमू चलता है कि पिछली सरकार हमारी बहनों के प्रति कितनी असंवेदनशील थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\h14\05.10-05.15

श्री मोहित राम (पाली-तानाखार) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आसंदी, सदन का नमन करते हुए सादर प्रणाम करता हूं। आज का दिन हमारे लिए और सभी नवनिर्वाचित विधायकों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है। हमारे इस सदन में अनेकों प्रकार की बातों पर चर्चा हुई। माननीय राज्यपाल महोदया जी के अभिभाषण में घोषणा पत्र के बारे में क्रमांक 1 से 34 तक दिया गया है, मैं उसका सम्मान करता हूं और मैं उसके लिए धन्यवाद देता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी जो कि किसान के पुत्र हैं और हमारे सभी हितों के लिए, किसानों की लड़ाई के लिए आवाज उठा करके सड़क पर उतरे और भाजपा सरकार को धुंधले आईने को साफ करते हुए चेहरे को दिखाने का रास्ता बताया। इस बीच में हमारे साथ में जो घटना बहुत पूर्व से होती चली आ रही है। मेरे विधानसभा में बांगो डेम है जिसके लिए मैं जिला कलेक्टर महोदय से 15 साल से जिला शिविर में आवाज उठाता रहा हूं कि हमें कोरबा जिला का बांगो डेम का पानी पाली-तानाखार को दिया जाये, लेकिन जिला शिविर में कलेक्टर जी ने हां में हां कहते रहे।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मोहित राम जी के लिए रामदयाल उइके जी के लिए शायरी है, मैं आपको सुनाना चाहता हूं।

उजड़ गये मेरे खेमे तो कुछ परवाह नहीं,
जहां में आज मगर जुल्म बेनकाब तो हैं,
जुल्म बेनकाब तो हैं।
माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

श्री मोहित राम :- माननीय राठिया जी, धन्यवाद। आपने यह याद दिलाते हुए जो आज सदन में कविता सुनाई है, मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। मैं याद दिलाना चाहूंगा कि भाजपा की सरकार ने कांग्रेस के जो एक अच्छे जुझारू के रूप में जाने जाते थे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- शिवरतन जी, आप लोगों ने रामदयाल उइके जी को कहीं का नहीं छोड़ा। वह न इधर के रहे न उधर के रहे। जो न इधर का रहता है न उधर का रहता है, वह क्या होता है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है कि रामदयाल उइके जी की जगह में मोहन मरकाम जी आ गये हैं, अब रामदयाल जी गये, मेरे को तो मोहन मरकाम जी की चिंता है कि इनका क्या होगा ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इनका बहुत कुछ हो रहा है, आप चिंता मत करिये।

श्री अमरजीत भगत :- आप चिंता मत करिये, वह मस्त हैं।

श्री दीपक बैज :- सत्तू भैया, अच्छा हुआ वह इधर चले गये, क्योंकि रामदयाल में ही हमारी कृपा वहां लटकी हुई थी।

श्री मोहित राम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रामदयाल उइके जी को भाजपा में शामिल करना इनका एक नया षडयंत्र था। ये सोचकर यह लोग भाजपा में शामिल किये कि अगर रामदयाल उइके जी भाजपा में आते हैं तो भाजपा की सरकार निश्चित ही बनेगी, लेकिन दुर्भाग्य है कि उनका कदम रखते ही भाजपा सरकार सफाया हो गई। इसके लिए मैं अपने हृदय से धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहित राम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं धन्यवाद करता हूं।

श्री विक्रम मंडावी (बीजापुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी भी पार्टी, सरकार को इतना बड़ा स्पष्ट बहुमत मिला है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद हमारी कांग्रेस पार्टी को इतना बड़ा बहुमत मिला है, उसमें भी जो हमारे दल के नेता हैं, प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी बने हैं। जन घोषणा पत्र में जो वादा किये थे, चाहे वह समर्थन मूल्य बढ़ाने की बात हो, कर्ज माफी की बात हो, ऐसे बहुत सारे वादे हम लोगों ने चुनाव में किया था। सरकार बनने के बाद में वह सभी वादे पूरे हुए हैं और हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ में जो देखने को मिल रहा है, जनता में सब तरफ खुशी है और छत्तीसगढ़ के अंदर में बदलाव दिख रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ी चीज मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जिन्होंने यह कहा है कि सरकार बनने के बाद अगर 10 दिन के अंदर में पूरा कर्जा माफ नहीं होता है तो मैं अपने पद से इस्तीफा दे दूंगा। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि हमारे नेता ने तो अपना वादा पूरा कर दिया है, अब उनकी बारी है, वह भी अपना वादा पूरा करें और अपने पद से इस्तीफा दें। मैं माननीया राज्यपाल महोदया जी द्वारा दिये गये

अभिभाषण में अपना पूरी तरह से समर्थन देता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\h15\05.15-05.20

श्री गुलाब कमरो (भरतपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज छत्तीसगढ विधानसभा में मुझे बोलने का अवसर मिला इसके लिये मैं आपको ह्रदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं । आज माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण में मुझे बोलने का जो अवसर मिला है, 34 बिंदुओं में जो बोलने का अवसर मिला है जिसमें सबसे पहले मैं धन्यवाद दूंगा माननीय भूपेश बघेल जी, यशस्वी मुख्यमंत्री एक किसान का बेटा जिसने किसानों की चिंता की क्योंकि छत्तीसगढ़ प्रदेश कृषक प्रधान प्रदेश है । ज्यादातर किसान लोग यहां पर रहते हैं, 15 साल की सरकार ने किसानों की चिंता नहीं की लेकिन हमारी सरकार बनते ही किसानों की चिंता की और हमारी सरकार बनते ही 2 घंटे के अंदर किसानों का जो हमारे घोषणा-पत्र में प्रमुखता से जो किसानों के लिये था, 10 दिन का जो वायदा था उसको माननीय भूपेश जी ने 2 घंटे में पूरा किया इसको कहते हैं सरकार । आज हमारी सरकार ने किसानों की जो चिंता की, उनका वायदा पूरा किया ऋण माफी का, आज हम लोग नये-नये आये हैं, कोई बात ऐसी निकल जाये तो मैं क्षमा चाहूंगा लेकिन मैं दो दिन से देख रहा हूं कि जो इनकी 15 साल की सरकार में चूंकि यह सदन है । यह सदन में, सदन में अपने संवैधानिक अधिकार जो प्रदत्त हैं उसमें बात करना चाहिए लेकिन जिस तरह से रोष से उत्तेजित होकर बात कर रहे हैं, निश्चित ही चिंताजनक है क्योंकि हमारी सरकार ने जो कहा वह किया लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं कोरिया जिला आदिवासी जिले से बिलांग करता हूं । आपकी सरकार में पिछले अनुपूरक बजट का आप उठाकर देख लीजिये और हमारा अनुपूरक बजट आप उठाकर देख लीजिये कि आपकी सरकार ने क्या किया और हमारी सरकार ने क्या किया यह भलीभांति छिपा नहीं है लेकिन आपकी सरकार में किसानों के लिये आप कोरिया जिले में जाकर देख लीजिये कि कृषि विभाग का हाल देख लीजिये, स्प्रिकलर पंप, जितने ट्यूबवेल हुआ किसानों का देख लीजिये । एक भाजपा के नेता के ईशारे पर पूरा कार्यालय चलता था । जलसंसाधन, कृषि विभाग जो जलाशय डॉयवर्सन बने हैं 153 करोड़ का मैंने लगातार पिछले कार्यकाल में विरोध किया था लेकिन नहर है तो बांध नहीं, बांध है तो नहर नहीं, किसानों को पानी नहीं मिला और किसान तरश गये, आज किसानों की खुशहाली और समृद्धि के लिये कांग्रेस पार्टी ने यह ऋण माफी किया तो आज इनके पेट में दर्द हो रहा है इसलिये मैं आज इस सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, मंत्रिमण्डल को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं कि जो किसानों की चिंता की । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री रजनीश सिंह (बेलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सर्वप्रथम पार्टी ला बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हंऔं अऊ आपला बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हंऔं । एक पुराना संदर्भ आपके संदर्भ में है ओला उद्धृत करते हुए एक मिनट अपन बात ला शुरू करिहंऔं । सन् 1983 में जब गवर्नमेंट मल्टीपरपस स्कूल के छात्र रहेऔं अऊ ओकर छात्रावास के विदाई समारोह मा एक विधायक जेला बुलाये के अवसर मोला मिलिस ओ बहुत युवा विधायक संयोग से आप रहेओ, जेन स्कूल के आप सीनियर छात्र रहेओ ओ स्कूल मा पहली बार कोई विधायक ला बात करे के, देखे के अवसर मिलिस अऊ आज आप ये सदन मा एक संरक्षक के रूप मा, एक अभिभावक के रूप मा, मैं बड़ा हर्ष हंऔं, उल्लासित हंऔं कि आपके संरक्षण मा मोला काम करे के अवसर आज 35 साल बाद मिलत है ।

माननीय सभापति महोदय, कोई भी नया सरकार जब बनथे अऊ राज्यपाल के पहला अभिभाषण होथे तो ओमा कम से कम यह जरूर प्रयास किये जाथे कि जौन ओकर घोषणा पत्र है या संकल्प पत्र है या अभी जौन जन घोषणा पत्र है ओकर तमाम् बिंदु ला ओमा शामिल किये जाये काबर कि पहला बजट अभिभाषण होय या पहला राज्यपाल के अभिभाषण होय कम से कम ओमा ये बात नीतिगत रूप से शामिल जरूर किये जाथे लेकिन बहुत ही दुख के बात है कि 18 साल के छत्तीसगढ़ जौन अब व्यस्क होगे हे और मैं बधाई देना चाहत हंऔं माननीय नेता, सदन के नेता जी ला, सम्माननीय मंत्रीगण अऊ सम्माननीय 90 सदस्यगण ला बहुत-बहुत बधाई देना चाहत हंऔं लेकिन जौन व्यस्क छत्तीसगढ़ के परिपक्वता दिखना रहिस हे शुरू दिन से वह कहीं न कहीं नइ दिखत है ....जारी

............श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\h16\05.20-05.25

जारी-------श्री रजनीश कुमार सिंह :- लेकिन जो व्यस्क छत्तीसगढ़ की परिपक्वता दिखना रिहिस हे । शुरू दिन से वो कहीं न कहीं नई दिखत हे । किसान मन के बारे में खूब बात होइस । जन घोषणा पत्र हे, यदि देखा जाए तो ओखर दू पन्ना म राज्यपाल जी के अभिभाषण मा समाप्त कर दिए गए है । ओमा हम समझ सकत हन कि ए 36 पन्ना के जन घोषणा पत्र के आगे आने वाले समय मा का हश्र होने वाला हे । अध्यक्ष महोदय, किसान मन के बारे में बहुत बात होइस । ये बताए के कोशिश करे गिस कि कोई कथे 2 घंटा मा, कोई 4 दिन मा, कोई 10 दिन मा । एकर पहिली 1990 मा भी भारतीय जनता पार्टी के माननीय पटवा जी के सरकार 10 हजार करोड़ के ऋण माफ कर चुके हे । भारतीय जनता पार्टी के सरकार रिहिस हे । कल सदन मा चर्चा के दौरान बात आइस के 2003 में भी आपने ऋण माफ किया था । 2500 ऋण माफ किया था । 106 करोड़ । 2003 में छत्तीसगढ़ के बजट 7 हजार करोड़ के । कल बताए गिस कि हम 1 लाख के क्लब में शामिल हो गए हन । और कर्जा माफ होइस के नइ होइस ओमा सब बातचीत चलत हे । 6100 करोड़ के जो अधिकृत रूप से बताए जात हे । अउ ओमा बताए जात हे कि सब किसान के भला हो गे, छत्तीसगढ़ के किसान खुश हो गए, अब बाकी

कोई करे के जरूरत नइ हे । अध्यक्ष महोदय, जब किसान के बात करथन तो 2 मिनट आपके अनुमति सहित, 2 मिनट मा अपन बात ला समाप्त करत हौं । एक बार हमन 2003 के भी स्थिति देखी । जब 2003 कहत हौं तो ओकर मतलब ये नइ हे कि 2000 से 2003, जब मध्यप्रदेश में रेहेन तब से लेकर 2003 की किसान की स्थिति देख लिही कि ओखर आर्थिक स्थिति का रिहिस हे ? ओकर सिंचाई के पंप के का साधन रिहिस हे ? कतका परसेंट में ऋण लेत रिहिस हे? केसीसी कौन दिस और ए सब बात मा ध्यान देबो तब तो समझ आइ कि 15 साल पहिली राजस्व कर के नाम से, सिंचाई कर के नाम से बैंक के छोटे मोटे कर्जे के नाम से जनवरी फरवरी होए, जब धान के मिंजाई के समय राहय तो पूरा किसान भयभीत रहय । डरे हुए राहय । ओखर पीछे कारण राहत कि आरआरसी जारी होय। आरआरसी के माध्यम से सिंचाई कर के 500, राजस्व कर के 700, बैंक के 5000, 8000 कर्जा के नाम से तहसीलदार पुलिस लेकर आए । गांव के दरवाजा उखाड़ लिए जाए, बर्तन जप्त कर लिए जाए । कोठा ले बैल, गाय ला ढील के सरे आम नीलामी कर दिए जाए । ये स्थिति 2003 तक छत्तीसगढ़ में बने रहिस । लेकिन 2003 के बाद एक के बाद सिर्फ किसान बर अतका योजना आइस । जोन 2003 तक 71 हजार पम्प कनेक्शन रिहिस हे, जइसे मैं बताए हौं 2003 के मतलब 56-57 साल के बाद, लेकिन 2018 तक साढ़े चार लाख पम्प कनेक्शन किसान मन करा हे । सिंचाई के जौन रकबा 26 परसेंट रिहिस हे । आज 34 परसेंट रकबा हे । अध्यक्ष महोदय, चूंकि समय कम है एक बात का उल्लेख करत हुए । 4-6 महीना पहिली तक महू अइसनेहे प्रतिष्ठित दर्शक दीर्घा मा या अध्यक्षीय दीर्घा मा बइठ के कार्यवाही देखौं, सुनौं । बहुत वरिष्ठ, वरिष्ठ नेता हैं, जिनसे बहुत कुछ सीखे के प्रयास करत रहौं । लेकिन कल माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी, जेन 13 साल तक वित्त मंत्री भी रिहिन हे। जब वो वित्तीय प्रबंधन के बारे मा बोलिन, ओखर बार सत्ता पक्ष डाहर ले जौन जवाब आत रिहिस हे, तो अइसन लागत रिहिस हे, बस वो ही जानथे । वित्तीय प्रबंधन के बारे मा अइसनहा, अइसनहा बात करे गिस, जौन लगते इला अभी बहुत कुछ सीखे के जरूरत हे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- वो आप ला डरवात रिहिस । पूरा छत्तीसगढ़ ला डरवात रिहिस ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- गंगाजल के कसम खा के आए हैं । हमर छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़ी कवि माननीय सुरेन्द्र दुबे जी एक बात कथे कि छत्तीसगढ़ के आदमी मन के कॉफीडेंस बड़ा जबरदस्त होथे । तो सत्ता पक्ष में बइठे आदमी कांफिडेंस दिखाए के कोशिश करत हे लेकिन कांफिडेंस नइ आ पात हे । अतका बड़े बहुमत और अतका बड़ा बात करके आए हन, कहीं ऐसा न हो जाए कि दू महीना बाद एक गाना हे, राम तेरी गंगा मैली हो गई.. आगे आप सब जानत हौ । ये चिंता मा सब लगे हुए है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मांग करत हौं ....

--- जारी- श्री ठाकुर -

ठाकुर\09-01-2019\h17\05.25-05.30

जारी....................श्री रजनीश कुमार सिंह (बेलतरा):- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मांग कर थो कि जोन जन घोषाणा पत्र म 36 बिंदु रखे गये हैं ओकर अक्षरश: पालन करे ये ठीक है कि अभी 20 दिन के सरकार है। लेकिन आने वाले समय म आने वाला बजट म जतका घोषणा है ओकर साथ- साथ क्षेत्र के विकास से संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर विकास से संबंधित बात कभी शामिल करके एक ऐसी बजट लाये जाही जो छत्तीसगढ़ के आशा अपेक्षा म जनता मन ला बहुत बड़े जोन समर्थन दे हे वो समर्थन में खरे उतरेगा का प्रयास करही। एक बार पुन: आपला बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए अपन बात ला समाप्त कर थो। धन्यवाद जय भारत, जय छत्तीसगढ़।

अध्यक्ष महोदय:- डॉ विनय जयसवाल ।

डॉ विनय जयसवाल(मनेन्द्रगढ़):- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में मेरे लिए बहुत गौरव का क्षण है क्योंकि जिसने मुझे राजनीतिक रूप से मार्गदर्शन दिया आज इस आसंदी में भी मेरा संरक्षण कर रहे हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूं। साथ में जितने भी सदन के निर्वाचित सदस्य हैं, सभी को मैं प्रणाम करता हूं और सभी को नये साल की बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बोलना चाहूंगा कि एक उक्ति है कि अन्नदाता सुखी भव:। इस परिकल्पना को हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री हमारे किसान पुत्र माननीय भूपेश बघेल जी ने पूर्णत: चरितार्थ किया और सरकार बनने के और शपथ लेने के 3 घंटे के अंदर किसानों का कर्ज माफ किया। इसके साथ-साथ जो धान का समर्थन मूल्य था उसको 2500 रूपाए किया। अभी सदन में लगातार दो दिन से जो वरिष्ठ हमारे नेतागण हैं, विपक्ष के जो नेतागण है हमारे माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी हैं उनके भाषण को मैं बहुत गौर से सुन रहा था, बहुत ध्यान से सुन रहा था। माननीय रमन सिंह जी ने वित्तीय प्रबंधन की बात की जो हमारे भी पहले जो साथी हैं वित्तीय प्रबंधन की बात कर रहे थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बोलना चाहूंगा कि मैं कोरिया जिले के ऐसे विधानसभा से आता हूं, मनेन्द्रगढ़ से मेरी विधानसभा से आता हूं आज वो शहर जो है मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी एक शहर है एक शहर होता है जो 15 साल में 20 साल में ग्रोथ करता है। उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है लेकिन आज जो मेरा शहर है मेरा जो शहर चिरमिरी है वो पिछले 15 साल में उसकी जनसंख्या डेढ़ लाख से 80 हजार होकर रह गयी है। ऐसा कोई आज माननीय मुख्यमंत्री जी ने बड़ी-बड़ी बात किये वित्तीय प्रबंधन की बात किये। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कारीडोर बनाने की बात की और सड़कों का जाल और तमाम बातें की मेरा संसदीय ज्ञान बहुत ज्यादा नहीं है उसके बारे में मैं ज्यादा कुछ ज्यादा नहीं बोलूंगा लेकिन इतना छोटा सा वित्तीय ज्ञान जरूर है कि माननीय अध्यक्ष महोदय, आज रायपुर में आप देखिए स्काई वाक जैसी चीजों के ऊपर बजट में प्रावधान करके उसके ऊपर खर्च किया गया। आज रायपुर के एक-एक व्यक्ति से आप जनमत ले लीजिए अगर एक हजार में एक हजार लोग उसकी जो स्काई वाक

बना है उसके बारे में अगर गलत नहीं बोलेंगे तो आप बोलिएगा। इस नया रायपुर जहां चिरमिरी मनेन्द्रगढ़ जैसे छोटे शहर है, जहां जनसंख्या है, जहां इंफ्रास्ट्रक्चर है जहां लोग हैं वहां वित्त में कोई भी प्रबंधन नहीं किया पिछले 15 साल में। वहां पलायन हुआ है वहां बेरोजगारी है वहां उद्योगधंधे नहीं हैं सारी बातें हैं। लेकिन नया रायपुर जैसे जगह पर जो करोड़ों अरबों खरबों खर्च करके जहां भी विशेषज्ञों से अगर आप पूछेंगे कि वहां जनसंख्या कम आयेगा तो मुझे लगता है कि बोलिए 15 से 20 साल वहां जनसंख्या आने में लगेगा।

अध्यक्ष महोदयः- धन्यवाद। श्री पुरूषोत्तम कंवर।

अध्यक्ष महोदयः- सदन में नये विधायकों के विचार व्यक्त करते तक इस सदन की कार्यवाही के लिए समय में वृद्धि की जाती है। स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई है। माननीय सदस्य अपने समयानुसार लाबी स्थित कक्ष में उपस्थित हो जाएं एवं पत्रकार लोगों के लिए प्रथम तल में इनकी व्यवस्था की गई है। सुविधानुसार ग्रहण करें।

श्री पुरूषोत्तम कंवर (कटघोरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण जब हो रहा था तो मैं देख रहा था विपक्षी दल की ओर से मंत्रमुग्ध होकर के सुन रहे थे। सोच रहे थे कि हमने ऐसा जन घोषणा पत्र क्यों नहीं बनाया तो उसमें जो बिंदु थे तो देर रात उसको सुन रहे थे अगर इन्होंने 15 साल तक जनता की सेवा की होती............जारी

..........जारी श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\h18\05.30-05.35

.......जारी श्री पुरूषोत्तम कंवर :- अगर इन्होंने 15 साल तक जनता की सेवा की होती, अगर छत्तीसगढ़ की सेवा की होती तो आज यह स्थिति नहीं आती। मैं यह मानता हूँ कि ये जो काम कर रहे थे उससे आने वाले वर्ष 2023 के चुनाव में उनकी स्थिति सिंगल डिजिट में न आ जाये, उसकी पूरी संभावना है। हमारी कांग्रेस सरकार ने ऐसा जन घोषणा-पत्र बनाया था, जिसके बल पर भारी बहुमत, ऐतिहासिक बहुमत छत्तीसगढ़ की ढाई करोड़ जनता ने हमें दिया है। मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा माननीय सदस्यों ने की है। मैं 2-3 गंभीर मुद्दों पर चर्चा करना चाहूंगा। हमारे कोरबा जिले की एक विशेष समस्या है, हाथी की समस्या है। उनके बारे में बीच-बीच में चर्चा हुई है और वन मंत्री जी ने कहा है कि माननीय सदस्य जो सुझाव देना चाहते हैं, इसके बारे में दे सकते हैं। समस्या सरगुजा, कोरबा, जशपुर और 2-3 जिले प्रभावित हैं। एक तो वहां हाथियों का सदियों से प्राकृतिक रहवास है। उनका विचरण, आना-जाना, भोजन की व्यवस्था वहीं होती थी। मानव और हाथियों का द्वंद इसलिए हो रहा है क्योंकि उनके क्षेत्र में कहीं न कहीं से अतिक्रमण हो रहा है। चाहे मनुष्यों के द्वारा हो रहा हो चाहे खदानों के कारण हो रहा हो, कुछ न कुछ तो रहा है, इसकी वजह से द्वंद हो रहा है। उसके लिए जो हाथी अभ्यारण प्रस्तावित किया गया

था, माननीय सदस्य उसके बारे में बता रहे थे कि उस समय केन्द्र में कांग्रेस की सरकार होने के कारण नहीं हो पाया। लेकिन मई 2014 से लेकर से केन्द्र में और प्रदेश में 2018 तक भा0ज0पा0 की सरकार थी। तो इस पर पहल क्यों नहीं की गई ? अगर सरकार पहल करना चाहती तो जरूर कोई न कोई रास्ता निकलता। लेकिन इस सम्बन्ध में अब पहल करने की आवश्यकता है। क्योंकि सबको जीने का अधिकार है। प्राणी हो या व्यक्ति हो, सबको जीने का अधिकार है। उनके लिए निश्चित रूप से व्यवस्था करनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री पुरूषोत्तम कंवर :- अभी बचा है। चलिये, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- श्री प्रमोद कुमार शर्मा।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा (बलौदा बाजार) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं पहली बार सदन में बोल रहा हूँ। आपको इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं यहां 2-3 दिन लगातार चुप बैठा था। कांग्रेस पार्टी पूर्ण बहुमत के साथ यहां पर है। मैं सबसे पहले माननीय मरकाम साहब को कुछ जवाब देना चाहता था, ये पहले दिन हमारे पार्टी वाले का अपमान किए। जिन शब्दों का इस्तेमाल किया। चूंकि यह शिष्टाचार गलत हो जाता। मैं सदन में पहली बार आया हूँ। मैं जूनियर हूँ। मैं नहीं समझता था कि उस समय खड़ा होकर जवाब दूँ।

अध्यक्ष महोदय :- आज भी जवाब मत दीजिये। आप अभिभाषण पर चर्चा कीजिये।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, जैसा आपका आदेश। राज्यपाल महोदया के अभिभाषण में किसान के बारे में चर्चा हुई। लेकिन छत्तीसगढ़ का युवा वर्ग जो 20 लाख की संख्या में हैं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- (श्री बृजमोहन अग्रवाल, सदस्य को संबोधित करते हुए) दिन भर कहां थे भैय्या ? दिन भर क्या कर रहे थे ?

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में 20 लाख युवा बेरोजगार घूम रहे हैं। सरकार की नीति में युवा वर्ग के बारे में कोई सोच नहीं है। जबकि कांग्रेस पार्टी की घोषणा-पत्र में पेज-12 में जिसमें साफ-साफ घोषणा-पत्र में लिखा गया है कि बेरोजगार लोगों को ढाई हजार रूपया भत्ता देंगे। स्थानीय सीमेंट संयंत्र या जितने भी संयंत्र हैं, उसमें इस बारे में नीति बनायेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार की अभी तक की जो नीति है, तय था कि एक गुमराह करने वाली नीति है, जिसमें युवा के बारे में कोई सोच नहीं है। कल अनुपूरक बजट पेश हुआ। उसमें ढाई हजार रूपया तो बहुत दूर की बात है, ढाई सौ रूपया भी उस युवा वर्ग के लिए नहीं है। उनके रोजगार के सम्बन्ध में...।

श्री संतराम नेताम :- आप चिंता मत करिये, जब बजट सत्र आयेगा, उसमें प्रावधान रखेंगे।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- आप उसमें कम से कम दो शब्द लिख देते, हमारी हमारे युवा बेरोजगार के लिए यह नियम होती। यहां दूर-दूर तक युवा लोगों के लिए कोई जिक्र नहीं है। इतना लंबा-लंबा वायदा कर डाले हैं कि कांग्रेस पार्टी की सरकार शायद ही पूरा कर सके। आपको शुभकामना है, अगर आप ऐसा कर सके तो हम लोगों का, सदन में विपक्ष में रहते हुए हम लोगों का साथ रहेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा शिष्टाचार खराब नहीं करना चाहूंगा। बस इतना ही कहना चाहूंगा कि यहां बड़े-बड़े सीनियर आदरणीय लोग बैठे हुए हैं। बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि आने वाले समय में जो अहंकार से भरा है, हम लोग इतने सारे जीत गए हैं, उनका अहंकार खत्म हो जाए।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद, धन्यवाद। चलिये।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- धन्यवाद।

श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\h19\5.35-40

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय (बिलाईगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपला जोहार, ये सदन ला जोहार । आप सब्बो ला जय सतनाम, सबसे पहले मैं जौंन धरती ला आये हौं, ऊहां के संत बाबा गुरू घासीदास जी ला मैं नमन करथौं, शहीद वीर नारायण सिंह के धरती बाबा शहीद वीर नारायण सिंह जी ला मैं नमन करथौं । संत कबीर साहब जी ला नमन करथौं और भारत के संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर ला नमन करथौं । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ला नमन करते हुए मैं राज्यपाल महोदया जी के अभिभाषण में अपन बात ला रखहूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़िया आदमी हौं, छत्तीसगढ़ी में अपन बात ला सदन में रखिहौं, छत्तीसगढ़ी भाखा में रखिहौं । हमर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहे कि भारत देश के आत्मा गांव में बसथे और गांव में हमर किसान मन रहिथे और भारत देश के अर्थव्यवस्था कृषि और किसान हे और हमर छत्तीसगढ़ के अर्थव्यवस्था के आधार धान हे । मैं हमर छत्तीसगढ़ के, ये सदन के मुखिया हमर नेता किसान पुत्र हमर मुख्यमंत्री ला साधुवाद देवथौं, जन ह किसान मन के दर्द ला, किसान मन के पीड़ा ला समझिस और पहली बार सरकार बनते ही किसान मन के कर्जा ला माफ करिसे । ये 10 दिन के भीतर में जो करिसे । प्रदेश के 16 लाख, 65 किसान किसान मन पंजीयन कराए रिहिसे, मैं ये सदन के माध्यम से बताना चाहहूं कि लगभग 6100 करोड़ से अधिक के राशि 10 दिनों के भीतर में 1248 करोड़ रूपया ओकर खाता में लगभग 3 लाख, 57 हजार किसान के खाता में जमा हाईसे । ये हमर छत्तीसगढ़ के लिए बहुत बड़े गर्व के बात हे कि किसान मन के सम्मान के बात हे, मैं आपला ये भी बताहूं कि जोन किसान गांव में रहिथे और गांव में जो कर्ज में लदे हे, ओ किसान ह जानथे, काबर की मैं स्वयं किसान के बेटा आंव, ये चीज ला मैं महसूस करे हव । खातु कचरा लेथे तो पैसा नहीं पटा सकय । बड़े

सम्पन्न साहूकार रहिथे, जेन किसान ह ट्रेक्टर लेथे, ओकर बात ह हमन नहीं कर सकन, पहली तो हम ओकर बात करथन, जो धरातल में रहिथे, जो झुग्गी झोपड़ी में रहिथे, जो पीएम आवास के लिए तरसथे, ओकर लिये जो व्यवस्था ला करिसे, प्रदेश के मुख्यमंत्री ला मैं साधुवाद देथव, मंत्रि मण्डल ला साधुवाद देथव, अतके बड़ा उपकार करिसे कि आज छत्तीसगढ़ में पहिली बार कोनो छत्तीसगढ़िया मन के, किसान मन के, गरीब मन के दुख ला, ओकर आंसू ला पोछे के काम करिसे । ये बहुत बड़ बात हे, ए मन ला धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए, आज ऐमन आसू ला पोछे के बजाय घड़ियालू आंसू बहाथे, सदन ला बहिर्गमन करथे, वाकआउट करथे, अव ए बताए के कोशिश करथे कि हमन किसान के सैम्पथी लेने वाला आन, किसान के साथ हन, सब्बो किसान के कर्जा ला माफ होना चाहिए, अभी आप मन देखत जावव, अभी पांच साल में जो कांग्रेस के घोषणा-पत्र है, वही अभिभाषण में मैं आवथौं । अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण के मोला आवश्यकता हे, हमन तो नवा अन । एमन जुन्ना मन, सीनियर मन संरक्षण मांगथे, एमन तो एक्सपायरी डेट के दवई के भांति ए, एमन आपले संरक्षण मांगथे । 15 साल छत्तीसगढ़ ला लूटे के काम करे हे, उद्योगपति मन ला बसाए के काम करेहे । किसान मन के साथ का करेहे, पूरा नवा रायपुर बसा दिस, अध्यक्ष महोदय, मैं आपला बताना चाहहूं दो दर्जन से अधिक गांव वहां तबाह होगे, दो दर्जन से अधिक गांव के रहवइया मन वहां तबाह होगे, ओमन के सपना टूट गे.....

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\i10\05.40-05.45

जारी....श्री चन्द्रदेव प्रसाद राम :- दो दर्जन से अधिक गांव वहां तबाह होगे, दो दर्जन से अधिक गांव के रहइया मन वहां तबाह होगे, ओ मन के सपना टूट गे, पूर्वज मन के जो अस्ति रहिसे, जो ओखर मन के संस्कृति रहिसे, वो सब खत्म होगे । माननीय सभापति जी, जो रायपुर शहर म अरबो रूपया ला गंवा दिस, अगर वही पईसा के दो-चार ठन बांध बना देतिस, आज छत्तीसगढ़ के किसान मन समृद्ध रहतिस । हमर छत्तीसगढ़ प्रदेश समृद्ध रहितिस । आपला मैं ए बताना चाहूं महोदय जी, मैं जेन विधान सभा में आथंव वोहा शहीद वीर नारायण सिंह के धरती ए । संत गुरूघासीदास के धरती ए । आज वो क्षेत्र हा अकालग्रस्त हे । माननीय सभापति महोदय, पिछले सरकार के घोषणा बताहूं, छत्तीसगढ़ में 146 विकासखंड के 96 तहसील हे, जो अकालग्रस्त क्षेत्र हे, अगर दो चार बांध बना दे होतिस, तो ये अकालग्रस्त नहीं होतिस ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री अनूप नाग ।

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राम :- आपसे मोर संरक्षण के जरूरत हे । जेन विभाग से मैं आवथंव । वोखर पीड़ा ला मैं बात में रखिहंव । माननीय महोदय जी, आज प्रदेश में देखे हव सुरक्षा के नाम से हमर कांग्रेस के जम्मो शीर्ष नेता मन ला कईसे एमन हा सुरक्षा मुहैया कराईसे । एक लाईन में कह दिस

की सुरक्षा में चूक होइसे । ऐसने कहिके अपन जिम्मेदारी ले भागे के एमन काम करे हे । एसआईटी के गठन में एमन सवाल खड़ा करथे, ए भारतीय जनता पार्टी के कथनी अऊ करनी में अंतर हे । माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं ये बताना चाहूं, एमन टाटा स्टील प्लाण्ट षड़यंत्र में गरीब मन ला किसान के जमीन ला वापस दिलाये के काम करिसे । एला एमन प्रश्नवाचक लगायेके काम करथे । माननीय महोदय जी, एखर कार्यकाल ला आप मन देखे होहू । एमा लगभग 10 गांव के 17 सौ हेक्टेअर जमीन वापस दिलाये के काम होईसे । माननीय महोदय जी, ये बहुत बड़े प्रशंसा के बात हे । प्रशंसा करे के बजाय एमन निंदा करे के काम करथे । माननीय महोदय जी, हमर सरकार के जो योजना हे, जो गरीब मन हे, जेमन चिटफंड कंपनी में पैसा निवेश करे रहिसे, पैसा ला लौटाये के काम हमर सरकार करथे । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला धन्यवाद ज्ञापित करथंव, चिटफंड कंपनी के पैसा ला वापस दिलाये बर वोहा नीति लाथे । माननीय महोदय जी, मैं ए भी बताना चाहूं कि पुलिस विभाग हा जे तरीका से क्राइम ब्रान्च अनुसंधान सेल के तरह बड़े-बड़े अफसर मन, एस.पी. मन जे तरीका से काम करथे, हमर सरकार हा खत्म करे के काम करिसे अऊ पुलिस विभाग के दर्द ला समझिस । पुलिस विभाग के मांग ला समझे के काम करिसे । वोमा भी नीति लाय के काम करथे । हमर पुलिस भाई मन कहाथे कि सप्ताह में एक दिन छुटटी चाहिये । ऐसे कौन से गुनाह वोमन करथे । वहु मन ला भत्ता चाहिये । लेकिन पूर्ववर्ती सरकार वोखर मन के दु:ख-दर्द ला नई समझ सकिस । पत्रकार भाई मन के बात करथंव, जैसे सुशील पाठक होगे, उमेश राजपूत जो बिलासपुर छूरा से बिलांग करथे, वोमन के ऊपर निर्मम हत्या, एमन के उपर जो कार्यवाही होईसे । पत्रकार मन भी देश म सुरक्षित नई हे । देश के चौथा स्तंभ हे । माननीय महोदय जी, मैं आप मन ला बताना चाहथंव कि आज पत्रकार मन के लिए भी कांग्रेस के सरकार नीति लाये के काम करथे । माननीय महोदय जी, मैं आप मन ला यह भी बताहूं कि प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के सरकार हा शिक्षा कर्मी पंचायत, तमाम विभाग ला वादाखिलाफी करे के काम करे हे । ए सब किसान के बेटा ए । छत्तीसगढ़िया बेटा ए । छत्त्ीसगढ़ के मूल निवासी ए । रहवासी ए । एमन के हित में कोनो काम नइ करए । आज एमन 270रूपया बोनस नइ दे सकिस, 300 रूपया बोनस नइ दे सकिस, 2100 रूपया धान के समर्थन मूल्य नइ दे सकिस ।

अध्यक्ष महोदय :- आप समाप्त कर दीजिए ।

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राम :- माननीय अध्यक्षर जी, आधा सेंकड में अपन बात रखहूं । माननीय महोदय जी, आपके संरक्षण के जरूरत हे । आज जब एमन अपन बारी में आथे, एमन 15 साल में छत्तीसगढ़िया मन ला छले के काम करे हे । छत्तीसगढ़ में एमन बड़े-बडे इंडस्ट्रीज, फैक्टरी ला स्थापित करे के काम करे हे । किसान मन के हित में कोनो काम नई करे हे । आज हमर मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ में सिर्फ किसान मन के हित में काम करे के काम करिस । आज एमन सिर्फ घड़ियाली आंसू बहाय के काम

करथे । एमन दिखावा के काम करथे । माननीय महोदय जी, मैं एमन से निवेदन करथंव कि किसान के हित म फैसला आवथे। एमन ला ताली बजा के स्वागत करना चाहिये । वाक आऊट करने के बजाय बाबा गुरू घासीदास जो संदेश दे हे, जो समरसता के मार्ग दिखाये हे, वही मार्ग में चले के जरूरत हे । धन्यवाद, जय हिंद,जय भारत ।

श्री अनूप नाग (अंतागढ़) :- अध्यक्ष महोदय, मेरा यह सौभाग्य है कि इस सदन में पहली बार उपस्थित हुआ हूं । सदन में उपस्थित हमारे सभी सम्माननीय सदस्यों का प्रणाम करता हूं । लंबे अरसे के बाद बहुचर्चित अंतागढ़ विधान सभा क्षेत्र से मुझे यहां पहुंचने का मौका मिला है । आप सब....

जारी श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\i11\.-.5

जारी.. श्री अनूप नाग:- आप सब परिचित हैं और जब विधानसभा की बात हो तो अंतागढ़ विधानसभा की बात और चर्चा न हो यह हो नहीं सकता। इतिहास गवाह है कि हमारे शहीद गैंद सिंह की वीरभूमि अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र से जब कभी चाहे वह मध्यप्रदेश की बात हो, चाहे नारायणपुर शामिल रहा हो, कांग्रेस पार्टी का जब विधायक बना तो सरकार कांग्रेस पार्टी की बनी। और ये उदाहरण ये हमारा सौभाग्य कि लंबे अर्से के बाद अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र से मुझ जैसे छोटे आदमी को सौभाग्य प्राप्त हुआ और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी। माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को हम सबने अवलोकन किया है, आत्मसात किया है। उस अभिभाषण में अपने पूरे क्षेत्र का, अपने प्रदेश का विकास के ऐसी कोई बात नहीं रह गयी है। यदि हम उनके अभिभाषण के तथ्यों पर चले तो हमारी सरकार उसे कार्यरूप में परिणित करने का प्रयास करें तो निश्चित रूप से हमारा विधानसभा क्षेत्र ही नहीं पूरा प्रदेश का सर्वांगीण विकास होगा और हम विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

समय :
5:47 बजे **(सभापति महोदय (श्री शिवरतन शर्मा) पीठासीन हुए)**

हमारी सरकार किसानों का कर्ज सरकार बनते ही माफ करने की घोषणा की और इस घोषणा पर हम तो नये हैं तीन दिन से हम इस सदन में बड़े-बड़े वरिष्ठ लोगों की भावनाओं को देख रहे हैं, सुन रहे हैं। मुझे याद है कि चुनाव जीतने के बाद जब हम अपने विधानसभा क्षेत्र में कार्यकर्ताओं से भेंट करने गये थे, उस दिन मेरे परलकोट क्षेत्र के उन बैंकों में 3 करोड़ 36 लाख रूपये उन किसानों के कर्ज माफ हुए। वहां उन किसानों की भावनाएं देखते बनती थी और यहां पूछते हैं कि किसी बैंक से नो-ड्यूज सर्टीफिकेट देखने को मिला क्या? मैं छोटे ज्ञान से अपने वरिष्ठों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि आम खाईये, आप झाड़ क्यों गिनते हैं? आप पेड़ क्यों गिनते हैं? हम नो-ड्यूज लाकर भी देंगे। किसानों

का कर्ज माफ हो गया है इसका सर्टीफिकेट लाकर भी हम दिखायेंगे। मैं ऐसे विभाग से जनता सेवा में आया हूं। आपने समय दिया, बस हो गया इतना काफी है। मैं उत्साहित होकर यह बातें कह रहा हूं, यदि कोई असंसदीय भाषा हो गई हो तो क्षमा कीजिएगा।

श्री दीपक बैज :- उधर आम भी खा लिये और गुठली भी खा लिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- पाण्डेय जी का गंगाजल को सुन लीजिए।

श्री शैलेष पाण्डेय (बिलासपुर) :- सभापति महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि आपने बोलने का समय दिया। सदन में सभी वरिष्ठ विधायकों को प्रणाम करता हूं और जो मेरे युवा साथी हैं उनको भी प्रणाम करता हूं। मैं माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर दो बातें भर कहना चाहता हूं। जिस प्रकार से हमारी प्रदेश सरकार के हमारे मुख्यमंत्री जी ने हमारे किसानों का कर्ज माफ किया है, जिस प्रकार से उन्होंने एक तरफ पूरे प्रदेश के किसानों को एक संजीवनी प्रदान की है तो दूसरी तरफ

...जारी श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\i12\05.50-05.55

जारी .....श्री शैलेष पांडे :- तो दूसरी तरफ उन्होंने युवाओं और बेरोजगारों के बारे में भी उन्होंने ध्यान रखा है। प्वाईंट नंबर 20 में बताया गया है कि इलेक्ट्रानिक एवं साफ्टवेयर कौशल से युवाओं को जोड़ने की दिशा में तेजी से कदम उठाये जाएंगे ताकि नये जमाने की नई आवश्यकताओं के लिए राज्य की नई पीढ़ी तैयार रहे और इसे अपने स्वावलंबन का माध्यम बनाये। ये उन्होंने इस बात को कहा है । इस पर मैं अपनी बात रखना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश में लगभग लगभग पिछली सरकार द्वारा ये बताया गया था कि 24 लाख युवा जो हैं वो बेरोजगार हैं और ये हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है, प्रदेश के लिए बच्चे लगातार आई.टी स्कूलों में बचपन से पढ़ रहे हैं। कॉलेज यूनिवर्सिटी तक पढ़ते जा रहे हैं। संगठित क्षेत्रों में बच्चे पढाई कर रहे हैं और असंगठित क्षेत्रों में भी कौशल विकास की बहुत आवश्यकता है तो इसलिए जो कौशल विकास के पाठ्यक्रम है,कार्यक्रम हैं, जो साफ्टवेयर और इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में उनकी प्रदेश में बहुत जरूरत है ताकि एक जो बहुत बड़ा सेक्टर है बेरोजगारों का उनको एक अच्छा आयाम मिल सके जो असंगठित क्षेत्र के जो बच्चे हैं जो ज्यादा नहीं पढ़ पाए हैं सिस्टम के द्वारा वो भी कौशल विकास की धारा से जुड़कर जो है, वो अपना भविष्य बहुत अच्छा बना पाएंगे। मैं इसके लिए जो सरकार की पहल है, उसको मैं बहुत ही साधूवाद देता हूं कि उन्होंने इस पहल को आगे बढ़ाया और दूसरी बात मैं ये कहना चाहता हूं कि पत्रकारों पर जो सुरक्षा कानून बनाने का जो संकल्प सरकार ने लिया था, जब हम लोग विपक्ष में थे तब पूरे प्रदेश में ऐसी कई घटनाएं पिछले कई वर्षो में हुई हैं जिससे पत्रकार बहुत आहत हुए हैं और पत्रकारों को बहुत नुकसान भी हुआ है। पत्रकार एक प्रकार से शोषित भी है, क्योंकि उनके मैनेजमेंट द्वारा कई प्रकार के बोनस है, जो सैलरी है वैसी नहीं दी जाती है और असुरक्षा के कारण भी पत्रकार बहुत परेशान रहते हैं तो मैं सरकार की इस पहल को जिसमें

पत्रकारों को सुरक्षा प्रदान की जाएगी उनको इस पहल के लिए मैं बहुत बहुत बधाई देता हूं और अपनी बात को विराम देता हूं।

श्री शिशुपाल सोरी (कांकेर) :- सभापति महोदय, मैं धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया । आदरणीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण के क्रमांक 32 पर ही मैं चर्चा करूंगा वो है नक्सली समस्या के शांतिपूर्ण ढंग से हल हो इसके लिए हम पीड़ित पक्ष पर चर्चा करना हमारी सरकार की प्रतिबद्धता है। पीड़ित पक्ष में जिनके साथ घटना हुआ है, जिस परिवार के साथ वही नहीं आते बल्कि वो लोग भी आते हैं जो नक्सली भय से पलायन कर गये हैं। वो लोग भी आते हैं जो वहां नौकरी कर रहे हैं जो भय और आतंक के माहौल में अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं वो फोर्स के आदमी हो चाहें दूसरे सिविल सर्वेंट हो । मिडिया के साथी भी हैं जो वहां नक्सली समस्या के संबंध में निष्पक्ष रिपोर्टिंग के लिए काम कर रहे हैं । इनकी क्या पीड़ा है, ये क्या चाहते हैं, और बड़े पैमाने पर वहां रहने वाले लोग जो आतंकी माहौल में भय के माहौल में जीवनयापन कर रहे हैं। उनकी पीड़ा को समझा पाना बहुत मुश्किल है। यहां हम बैठ के वो किस मुश्किल हालात में अपना जीवन बसर कर रहे हैं, इसके लिए उनसे बात करना, वो क्या चाहते हैं, उनके बारे में जानकारी लेना ये बहुत बड़ा शांति बहाली की दिशा में कदम हो सकता है। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने इस संबंध में बड़े गंभीरता से बोला था। किन्तु उन्होंने कहा था कि हम किससे बात करें।

जारी श्रीमती सविता

सविता\09-01-2019\i13\05.55-05.60

.....जारी श्री शिशुपाल सोरी :- हम किससे बात करें? क्या हमसे बात करने के लिए कोई नक्सली लीडर आएंगे ? पुलिस ब्यूरो का कोई सदस्य आएगा? यहां उसकी बात नहीं हो रही है। यहां हम उन लोगों की बात कर रहे हैं जो ये यातना भोग रहे हैं तो उनकी बात को सुनकर हम कोई न कोई ऐसा निर्णय दे सकते हैं क्योंकि वहां के जितने सामाजिक संगठन हैं वे पूर्व मुख्यमंत्री, वर्तमान मुख्यमंत्री जी से समय-समय पर मांग करते रहे हैं कि हम शांति बहाली के लिए समाज से हमारे जो भी हो सकता है हम पहल करने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री जी, पूर्व मुख्यमंत्री जी की बातों से मुझे लगा कि अभी तक हम जो निर्णय ले रहे थे वही सही था। उन्होंने कहा कि दृढ़ता की जरूरत है, किस दृढ़ता की जरूरत है ? अगर हमारे समाज के ऐसे वर्ग जो शांति चाहते हैं, जो विकास चाहते हैं जो वहां के रहने वाले लोगों के दु:ख दर्द बांटना चाहते हैं उन सब के साथ मिल बैठकर कोई हल निकाले। मुझे पक्का विश्वास है कि इसका हल निकलेगा।

माननीय सभापति महोदय, ये बात फिर कहना चाहता हूँ कि हमारी सरकार ने ये भी कहा है कि हजारों लोग है, बेगुनाह हैं आज जो जेलों में निरूद्ध हैं, उनके आपराधिक प्रकरणों की भी जांच होगी। अगर निरपराध हैं तो उनके भी रिहाई के काम किये जायेंगे। पर मैं ये बात भी कहना चाहता हूँ कि जो

4-5 साल ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जो 4-5 साल जेलों में रहकर छूट गये कि उनके ऊपर कोई अपराध सिद्ध नहीं हुए, क्या उन्होंने जो 4-5 साल जेल में बिताये, क्या उसकी प्रति पूर्ति हो सकती है ? ऐसे बहुत से सामाजिक मुद्दे हैं जितनी भी चीजें पहले हुई, सभी लोगों से उन विषयों पर बड़ी गंभीरतापूर्वक बात करके हल निकाला जा सकता है और मैं इसके लिए हमारे मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, जिन्होंने कहा कि हम ऐसे सारे पीड़ित लोगों से बात करके कोई न कोई समाधान निकालेंगे और बस्तर में शांति की बहाली होगी। हमारे बहुत सारे बस्तर के हमारे सारे विधायक आये हुए हैं हम सब चाहते हैं कि वहां भय का वातावरण खत्म हो, वहां एक शांति का माहौल बने, विकास की गंगा बहे।

माननीय सभापति महोदय, बस्तर जिस रूप में देखा जा रहा था, वहां की संस्कृति खत्म होती जा रही है। आज भय की वजह से घोटुल तो बंद ही हो गये हैं। वहां की लोक कला, लोक संगीत खत्म होती जा रही हैं । केवल यही पर भीड़ बढ़ाने के लिए बाजे गाजे लोक कला के नाम हो रहा है उसके अलावा कुछ नहीं बचा है। पेशा कानून भी यही कहता है कि उनके विकास के लिए अलग मॉडल बने, उनके विकास में उनकी भागीदारी हो, ग्राम स्वराज की अवधारणा हो, ये संकल्प हमारी सरकार ने, भूपेश बघेल जी की सरकार ने यहां पर दोहराया है मैं उनके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, हमारे और भी साथी हैं हमें नये साथियों को भी सुनना है। मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। जय हिन्द, जय भारत।

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई नगर) :- माननीय सभापति महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

सम्माननीय सभापति महोदय, उपस्थित सभी सदन के सदस्यगण, आप सभी को प्रणाम करते हुए, अपनी बातों की शुरूआत करता हूँ । आज ये दिन मेरे लिए बहुत बड़ा दिन है । आज इस पवित्र प्रांगण में अपनी बातें रखने का अवसर छत्तीसगढ़ की जनता, भिलाई की जनता के आर्शीवाद से मिला। मैं छत्तीसगढ़ की जनता का बहुत आभार करना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ की जनता ने जितने भारी मतों से जितनी बड़ी जीत कांग्रेस पार्टी को दी है निश्चित रूप से हम समझते हैं कि एक-एक मतदान उम्मीदों का मतदान है और मैं आपको कहना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति की उम्मीद पर हमारी सरकार के लोग खरे उतरेंगे। पिछले 4 दिनों में बहुत सारे विषयों पर चर्चा हुई। आज मैं राज्यपाल महोदया के अभिभाषण का समर्थन करते हुए, आपको कहना चाहता हूँ कि हमने ''गढबों नया छत्तीसगढ़'' की बात की है । गढबों नया छत्तीसगढ़.....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\09-01-2019\i14\06.00-06.5

पूर्व जारी.. श्री देवेन्द्र यादव :- हमने ''गढ़बो नवा छत्तीसगढ़'' की बात की है, ''गढ़बो नवा छत्तीसगढ़'' के बारे में मैं आपको कहना चाहता हूं। ''गढ़बो नवा छत्तीसगढ़'' का नारा आम लोगों की भावनाओं से जुड़ गया है। वह एक ऐसा नारा, संकल्प है जिसमें समृद्ध छत्तीसगढ़ की सोच है। जिस सोच में किसानों के साथ खुशहाली हो, युवाओं की बात हो, बेरोजगारी खत्म हो, नये आयाम निकाले

जायें जिससे आम आदमी और आखिरी व्यक्ति तक जैसा कि गांधी जी कहते थे जब तक कोई भी शासन अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुंचता, तब तक पूर्ण स्वराज नहीं हो सकता। ये उस भाव को पूरा करने के लिए ''गढ़बो नवा छत्तीसगढ़'' का नारा हमने दिया है। निश्चित रूप से हमारी सरकार का बेहतर संवाद आम जनता से रहेगा। जो पिछले 15 सालों में संवादहीनता आम जनता और सरकार के बीच में रही है, उसको हम आने वाले समय में पूरी तरह से समाप्त करेंगे।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब मेरी उम्र 13 वर्ष की थी तब मैंने सम्माननीय पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी को और भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते हुए देखा था। आज मेरी उम्र 28 वर्ष है। बड़ा सौभाग्य महसूस होता है, उन सभी भिलाई के आम लोगों का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने इस उम्र में अवसर दिया, इस जगह पर जहां से पूरे प्रदेश के नियम, कायदे, कानून बनते हैं, जहां पर लोगों के हित की बात होती है, यहां पर आने का मौका दिया। मैं कहना चाहता हूं कि स्कूली जीवन से लेकर कालेज और इसके बाद छात्र राजनीति पूरी तरह सभी विषयों को देखा, तकलीफों को सहा भी और उनका समाधान करने के लिए आंदोलन भी खड़े किये। मैं आपको बताना चाहता हूं कि जिस तरीके से पिछले तीन वर्षों में नगरीय निकाय में महापौर के रूप में मैंने काम किया, भिलाई की जनता ने आशीर्वाद दिया, छत्तीसगढ़ का नहीं बल्कि पूरे देश का सबसे कम उम्र का महापौर बना दिया। मैं आपको कहना चाहता हूं हर स्तर पर पिछले 15 सालों में जो देखा है, वह यही देखा है कि केवल और केवल खोखले वादे हुए हैं, खोखली बातें हुई हैं, व्यवसायीकरण, बाजारीकरण हुआ है। माननीय सभापति महोदय, आज डेवलपमेन्ट की बात होती है, मैं बताना चाहता हूं कि इनका डेवलपमेन्ट का जो एजेन्डा है, वह आर्नामेन्टल एजेन्टा है। उसमें केवल और केवल इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेन्ट की बात होती है, लेकिन वह इन्फ्रास्ट्रकचर कैसे रन होगा, उसके लिए कोई भी विवेक नहीं लगाया जाता। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि कितने शिक्षा संस्थान, स्कूल ऐसे हैं जिनकी बिल्डिंगें तान दी गईं, लेकिन उसमें शिक्षा देने वाले शिक्षकों की भर्ती पूरी नहीं हो पाई। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि पिछले 15 सालों में कितने हास्पिटलों की बिल्डिंग तान दी गई, लेकिन उनमें आज भी प्रापर व्यवस्था नहीं है कि कोई आदमी जाकर अपना ईलाज करा सके। माननीय सभापति महोदय, मैं पिछले 4 दिनों से सबकी बातें सुन रहा था।

सभापति महोदय :- देवेन्द्र जी, एक मिनट के अंदर समाप्त कीजिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, आप मेरी भावनाओं को समझ सकते हैं। क्योंकि आप भी जब नीचे खड़े हो करके किसी विषय पर बहुत प्रमुखता से बोलते हैं, हम सब बड़ी खुशी से आपकी बात सुनते हैं। क्योंकि आपको भी जब अवसर मिलता है तो हमें खुशी होती है कि चलिये कुछ अच्छी बात सुनने का मौका मिलेगा। मेरा आपसे हाथ जोड़कर निवेदन

है, दो मिनट की और बातें कहूंगा।

सभापति महोदय :- चलिये दो मिनट में समाप्त कीजिये।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपको कहना चाहता हूं कि पिछले चार दिनों से कार्यवाही देख रहा था, चूंकि मैं नया हूं, युवा हूं, मैं किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहता। लेकिन बहुत उम्मीदों से आया कि बहुत सीखने को, देखने को मिलेगा, लेकिन जिस तरीके से हमारे सीनियर विपक्ष के साथियों का रवैया रहा है, उससे ऐसा नहीं लगा कि कुछ सीखने को मिलेगा, केवल आरोप-प्रत्यारोप देखने को मिला। कोई चर्चा नहीं, कोई विषय नहीं, कोई ऐसी बात नहीं हुई.... (जारी)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\09-01-2019\i15\06.05-06.10

जारी..........श्री देवेंद्र यादव :- कोई चर्चा नहीं, कोई विषय नहीं, कोई ऐसी बात नहीं जिससे छत्तीसगढ़ के आम लोगों की बहाली की बात हो सकी ऐसे किसी विषय पर बात नहीं हो रही । मैं देखता हूं दोस्ती चुनाव के पहले थी, हमें जानकारी है कुछ लोग टीम ए, टीम बी बनकर काम कर रहे थे लेकिन सदन के अंदर भी टीम ए, टीम बी बनकर काम करेंगे यह हमें पता नहीं था और यह बात देखते हुए मैं आपको कहना चाहता हूं कि पिछली सरकार ने अगर कुछ किया है तो एक अभियान चलाया है बेटा बचाओ अभियान । टीम ए और टीम बी मिलकर चलायी है, यह सरकार किसी के बेटे को बचाने का काम नहीं करेगी, आम आदमी के परिवार को बचाने का काम करेगी । माननीय सभापति महोदय, मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूंगा क्योंकि आपने मुझे 2 मिनट का वक्त दिया है । मैं माननीया राज्यपाल जी के अभिभाषण में भिलाई इस्पात संयंत्र के बारे में जिक्र हुआ उस बारे में कहना चाहता हूं कि जितने भी केंद्र के उपक्रम हमारे छत्तीसगढ में हैं उसमें पिछली सरकार में मैंने देखा कि संवादहीनता रही है जिससे वहां पर रहने वाले लोगों की तकलीफों का हल नहीं निकला इस बार हमारी सरकार प्रॉपर संवाद बनाकर उन लोगों का हल निकालने के लिये काम करेगी । मैं आखिरी चार पंक्तियॉ कहकर अपनी बातों को विराम दूंगा-

जिसे निभा न सके ऐसे वायदे नहीं करते
जिसे निभा न सके ऐसे वायदे नहीं करते,
हम बातें अपनी कामों से ज्यादा नहीं करते
भले ही तमन्ना रखते हैं, भले ही तमन्ना रखते हैं आसमान छू लेने की
लेकिन औरों को गिराने के ईरादे नहीं रखते । (मेजों की थपथपाहट)

बहुत-बहुत धन्यवाद । जय भारत, जय छत्तीसगढ़, जय भिलाई ।

सभापति महोदय :- श्री चंदन कश्यप ।

श्री चंदन कश्यप - XX XX

श्री डमरूधर पुजारी (बिंद्रानवागढ़) :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीया महामहिम राज्यपाल जी के अभिभाषण पर प्रथम अधिवेशन में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं । हम लोग 2-3 दिन से सुनते आ रहे हैं किसान-किसान लेकिन किसान को इतना दुख-दर्द होता है, हमारा किसान बेटा पढ़ता है और किसान का बेटा आई.ए.एस. बनता है और किसान का बेटा चपरासी भी बनता है लेकिन किसान का कर्जा माफ और बिजली हाफ यह कांग्रेस सरकार ने घोषणा पत्र लिखा है । इस घोषणा पत्र पर तत्काल त्वरित कार्यवाही कर देनी चाहिए । वह भी पूरा कर्ज माफी नहीं किये हैं, आज भी हमारे किसान कर्ज से जूझ रहे हैं और आज भी हमारे जो हम घोषणा पत्र में देखे हैं लिंकिंग धान का 2500, जब पहले बेचा गया है तो हमारे किसान को उसका क्या रेट मिलेगा, 2500 मिलेगा या क्या मिलेगा, यह हमारे पूरे किसानों को गुमराह करने वाली चीज है । जिसका बहुमत होता है वह तो बहुत बढ-चढ़कर बात करेगा लेकिन किसानों को धोखा नहीं देना चाहिए । यह कृषि प्रधान प्रदेश है और छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है । अगर आज हम किसान को धोखा देंगे तो कल हम सत्तापक्ष को भी धोखा देंगे । आप बोल रहे हैं कि हम 10 दिन में कर्जा माफ कर देंगे, यह 10 दिन में कर्जा माफ कर देंगे लेकिन कौन-कौन सा कर्जा माफ कर देंगे उसको क्लियर कर देना चाहिए ।

माननीय सभापति महोदयस, मैं अपने क्षेत्र की दो समस्याएं बताना चाहता हूं जब उस समय मध्यप्रदेश में हमारे स्वर्गीय श्यामाचरण शुक्ल जी मुख्यमंत्री थे । मेरे क्षेत्र में डेम बना है, सिकासर डेम और पानी राजिम को जाता है । मेरे क्षेत्र के किसान भूख मर रहे हैं, एक-एक बूंद के लिये तड़प रहे हैं । सत्तापक्ष का राज आया है तो इस तरह से किसानों को गुमराह किया जा रहा है तो हमारे क्षेत्र में उसका बूंद-बूंद पानी भरना चाहिए, ऐसे दिशा-निर्देश हैं । ....जारी

...........श्री कुरैशी

कुरैशी\09-01-2019\i16\06.10-06.15

जारी-----श्री डमरूधर पुजारी :-

एक-एक बूंद के लिए तड़प रहे हैं । सत्ता पक्ष का राज आया तो ऐसे किसान को गुमराह कर रहे हैं । हमारे क्षेत्र का बूंद-बूंद पानी उसमें भरना चाहिए और वह पानी हमारे क्षेत्र के लोगों को मिलना चाहिए, ऐसे दिशा निर्देश हैं । दूसरी बात यह है कि आज मैं इस सदन में बताता हूं कि मेरे क्षेत्र की जो समस्या है वन क्षेत्र में जो हमारे वनवासी रहते हैं, आज हमारा एक भाई बता रहा था, हमारे वरिष्ठ सदस्य, जो हमारा उदन्ती टायगर प्रोजेक्ट है वहां वहां एक वनभैसा मर गया । उसके मरने के बाद भी वन विभाग के अधिकारी देखते नहीं हैं । इतना बजट आता था और कांग्रेस पार्टी ने कहा कर्ज माफ करेंगे, लेकिन अभी किसी का कर्ज माफ नहीं हुआ है । महोदय, मेरा क्षेत्र आदिवासी बाहुल्य है । इसमें हमारे आदिवासी

और वनवासी भाई शराब के नाम से कमजोर होते हैं । इसलिए यह शराब बंद होना चाहिए । इन्होंने आदिवासियों को खुश करने के लिए वरिष्ठ सदस्य कवासी लखमा जी को आबकारी मंत्री बनाया है । लेकिन आबकारी विभाग हमारे आदिवासी को नहीं देना चाहिए । क्योंकि आदिवासी शराब पीते हैं और इससे हमारा समाज बहुत कमजोर होता है । क्योंकि वह शराब पीकर सो जाता है, वह अपने परिवार और बच्चों की ओर देखता भी नहीं ।

श्री दीपक बैज :- पुजारी जी, जिस दिन वे मंत्री बने उसी दिन छोड़ दिये।

श्री डमरूधर पुजारी :- नहीं, नहीं छोड़ने की बात नहीं है। उन्हें वह विभाग देना भी नहीं चाहिए ।

सभापति महोदय :- पुजारी जी, आसंदी की ओर देखकर बोलिए ।

श्री डमरूधर पुजारी :- सभापति जी, 6 तारीख को हमारा जो सम्मान हुआ उसमें हमारे समाज ने भी दिशा निर्देश दिया हे कि शराब बंद होना चाहिए । हमारे जो यहां के सदस्य हैं ।

श्री संतराम नेताम :- पुजारी जी, आप शराब के बारे में बोल रहे हो, आपके क्षेत्र के लोग सुन रहे हैं ।

श्री डमरूधर पुजारी :- ये शराब सबके लिए खतरा है महोदय जी । हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी ने अभी शराब के बारे में बताया । मैं भी उस क्षेत्र में गया था मगर मैं बताना नहीं चाहता हूं । ये शराब ठीक नहीं है महोदय जी । शराब बंदी होनी चाहिए। यह शराब समाज को बिगाड़ती है और हमारे घर को भी बिगाड़ती है ।

श्री मोहन मरकाम :- पुजारी जी, आप लेते हैं या नहीं ?

श्री डमरूधर पुजारी :- मैं तो लेता भी नहीं । 6 तारीख को हमारा समाज में स्वयंसेवी लोगों ने शराब बंदी का निर्णय लिया है ।

श्री कृष्णमूर्तिबांधी :- यह बहुत बड़ी बात है ।

श्री डमरूधर पुजारी :- हमारे बस्तर और सरगुजा से हमारे आदिवासी भाई जीतकर आए हैं, उन्हें चिंता करनी चाहिए । समाज के लिए चिंता करनी चाहिए । क्योंकि 6 तारीख निर्णय हुआ है और हमारी सदस्या लक्ष्मी ध्रुव ने भी इस बात को रखा था । मगर हमारे आदिवासी सदस्यों को इस बात का समर्थन करना चाहिए । इस अभिभाषण में 34 बिंदु हैं, इसमें पूरा खोखा, खोखा दिख रहा है । देखेंगे, करेंगे, क्या करेंगे, अरे तो 68 सदस्य हैं तत्काल कर देना चाहिए । छत्तीसगढ़ में लागू कर देना चाहिए ।

श्री दीपक बैज :- कौन सा खोखा ?

श्री डमरूधर पुजारी :- तत्काल कर देना चाहिए।

सभापति महोदय :- पुजारी जी समाप्त करें ।

श्री संतराम नेताम :- सभापति जी, ये अच्छा बोल रहे हैं बोलने दीजिए ।

श्री डमरूधर पुजारी :- ये समाज के लिए खतरा है। शराब बंदी होना चाहिए । दूसरी बात यह है कि इन्होंने ढाई ढाई साल मुख्यमंत्री के पद की बात की है । इन्होंने बिजली बिल आधा करने की बात की है । हमारे मुख्यमंत्री जी नहीं है वरना मैं उन्हें अपने साथ ले जाता । मेरे क्षेत्र में बिजली बीड़ी के जैसे आती है और बिल कितना आता है ? यह किसान लोग जानेंगे महोदय जी । पम्प नहीं चलता है । हमारे क्षेत्र में एक डेम है । उसे कांग्रेस के लोगों ने उल्टा बना दिये हैं ।

श्री संतराम नेताम :- पुजारी जी, अभी तो 20 दिन ही हुआ है, इसके पहले तो आपकी ही सरकार थी । (व्यवधान) आप लोगों ने 15 साल तक यह स्थिति बना दी थी ।

सभापति महोदय :- देखिये, डमरूधर जी बहुत कम बोलते है, भले ही सेकेंड बार के विधायक हैं । उन्हें बोलने दीजिए ।

श्री डमरूधर पुजारी :- 50 साल राज किया । सिकासेर डेम मेरे क्षेत्र में है, क्षेत्र के किसान एक-एक बूंद के लिए तरस रहे हैं । कांग्रेस पार्टी के सदस्य किसानों की बात करते हैं । डॉ. रमनसिंह जी की सरकार ने हर पंचायत को सी.सी. सड़क दी, पुल-पुलिया हो और भी योजना हो । ....जारी

---जारी श्री ठाकुर-

ठाकुर\09-01-2019\i17\06.15-06.20

जारी................श्री डमरूधर पुजारी :-पुल-पुलिया हो और भी योजना हो स्वीकृति हुआ था उसको वापस किये है और स्मार्ट कार्ड जो भी स्वास्थ्य विभाग में 50 रूपए में मिलता था महोदय जी स्मार्ट कार्ड को भी रद्द कर दिये हैं और हमारे पंचायत में कैसे विकास होगा महोदय जी। ये कांग्रेस लोग का चाल है जो स्वीकृति हो गया था सी.सी. सड़क, पुल-पुलिया हो गया था उसका पैसा उसका राशि भी वापस कर रहे हैं महोदय जी और अभी मेरे क्षेत्र में एन.एच.130 वाला सड़क का नाम बना दिये हैं और कई आदमी मर रहे हैं और कई गाड़ी घोड़ा ट्रक जा रहा है उसमें कई दिक्कतें आ रही हैं महोदय जी। क्या करेंगे मगर देखना चाहिए उसका बहुमत है। अध्यक्ष महोदय। तो ऐसी ऐसी बात है महोदय जी। आप बोलने के लिए समय दिये और आपको बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं महोदय जी।

सभापति महोदय:- चलिए समाप्त करिए। श्री किस्मत लाल नंद ।

श्री किस्मत लाल नंद (सराईपाली):- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी पंचायत में मुझे बोलने का जो पहला अवसर है उसके लिए मैं ऑल मिनिस्टर ऑफ छत्तीसगढ़ और सभी माननीय सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद। सन् 2013 में झीरम की घाटी की जब घटना हुई थी, उस समय मैं खुद पुलिस विभाग में था और उस समय ऐसा लगता था कि भारत में छत्तीसगढ़ में भारतीय संविधान की धारा 356 के तहत राष्ट्रपति शासन लग जाएगा। ये स्थिति थी उस समय। उसके बावजूद भी राष्ट्रपति शासन छत्तीसगढ़ में नहीं लगा। सन् 2013 में पुन: भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। 2018 में जब चुनाव हो रहा था उस समय भाजपा के नेता ये कह रहे थे कि भई 2013 में जब इतनी

बड़ी झीरम घटना के बाद भी कांग्रेस की सरकार नहीं बनी तो आज कांग्रेस के पास ऐसा कौन सा मुद्दा है, जिसको लेकर के सरकार बनाने की बात कर रहे हैं। लास्ट में हमने सरकार लास्ट में हमारी पार्टी ने जनता के सामने जिन मुद्दों को लेकर के हम गये और आज चुनाव जीतकर आये वो स्थिति आप देख रहे हैं कि 65 इधर है 22 उधर है। ये मुद्दा था सरकार बनने के 10 दिन के बाद जो माननीय राहुल गांधी जी ने जो वादी किया था। माननीय सभापति महोदय, 10 दिन नहीं केवल 17 सितंबर को माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी ने किसानों के कर्जा माफी का वादा किया, उसको पूरा किया और 16 लाख 65 हजार किसानों का कर्जा इनके 6 हजार 100 करोड़ रूपये माफ किये ये। उसके लिए जनता बहुत खुश हुई। आम जनता में खुशी की लहर आयी। अभी राज्यपाल महोदया के अभिभाषण के दौरान छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह ने ये कहा कि कांग्रेस सरकार की कथनी और करनी में हम देख रहे हैं कि एक महीने के भीतर इनका लक्षण दिखाई दे रहा है। इनको डी.जी.पी. बदलने की रातों रात कैसे जरूरत पड़ गई। उस संबंध में मैं माननीय रमन सिंह जी को कहना चाहता हूं कि वो अपना वो दिन याद करें जब रामनिवास डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस के पद से रिटायर्ड हुए और उस समय छत्तीसगढ़ में 1983 बैच के आई.पी.एस. ऑफिसर श्री गिराधारी लाल नायक एम.डब्ल्यू. अंसारी थे। डी.जी.पी. उनको न बनाकर पी.एम.ओ. से डायरेक्ट इन्होंने योग्यता न रखते हुए भी ए.एन. उपाध्याय को डी.जी.पी. बनाया, उस बात को भूल गये और अभी कह रहे थे कि हम।

सभापति महोदय:-आप नाम का उल्लेख न करें सदन की परंपरा है कि जो सदन में अपना पक्ष नहीं रखता उसके नाम का उपयोग नहीं करते।

श्री किस्मत लाल नंद (सराईपाली):- जी अध्यक्ष महोदय, मैं अपने सराईपाली और बसना क्षेत्र के बारे में कुछ बताना चाहता हूं कि इस 1985 में जिस समय भूतपूर्व कृषि राज्यमंत्री स्वर्गीय माननीय मोहनलाल चौधरी जी थे उस समय उन्होंने जो परियोजना को मध्यप्रदेश विधानसभा में उठाया था उनका यह सपना था कि जो परियोजना जिस दिन होगा। सराईपाली और बसना की जनता को पानी की कमी नहीं पड़ेगी और 15 साल के भारतीय जनता पार्टी की सरकार में जो परियोजना को बनाना तो दूर रहा उसको आज तक मैंने कभी नहीं सुना कि जो परियोजना को ....जारी

जारी............श्री अरविंद

अरविंद\09-01-2019\i18\06.20-06.25

जारी श्री किस्मत लाल नंद :- कृषि राज्य मंत्री माननीय मोहन लाल चौधरी जी थे, उस समय उन्होंने जोंक परियोजना को मध्यप्रदेश विधानसभा में उठाया था। उनका यह सपना था कि जोंक परियोजना जिस होगा, सरायपाली बसना की जनता को पानी की कमी नहीं पड़ेगी। 15 साल तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही, जोंक परियोजना को बनाना तो दूर रहा, मैंने आज तक कभी नहीं सुना कि जोंक

परियोजना को बनाया जाना चाहिए। इसलिए मैं माननीय सदस्य महोदय जी और हमारी सरकार से यह अनुरोध करना चाहता हूँ, यह निवेदन करता हूँ कि इस बजट सत्र में इस जोंक परियोजना का लायें। सरायपाली बसना की जनता ने जिस उम्मीद से मुझे भेजा है, उस सपनें को पूरा करने में सहयोग करें। माननीय सदस्य बिलाईगढ़ के हमारे विधायक चन्द्रदेव राज जी ने कहा, जो कि शिक्षा विभाग से आये हुए हैं। आज सदन में जो बात मुझे, मैं पुलिस विभाग का हूँ, मुझको रखना चाहिए था, उन्होंने पहले रख दिया। पुलिस के बहुत सारे दु:ख दर्द हैं। उसकी विस्तृत बात हम बाद में रखेंगे। वास्तव में अभी डी0जी0पी0 स्तर पर ......।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें।

श्री किस्मत लाल नंद :- माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का जो मौका दिया, उसके लिए मैं आपको और सदन को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

श्री आशीष कुमार छाबड़ा (बेमेतरा) :- धन्यवाद माननीय सभापति महोदय। मैं बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित होकर आया हूँ। लोकतन्त्र के इस महान मंदिर में उस जनता के आर्शीवाद से मुझे आप सबके बीच में अपनी बातों को रखने का अवसर मिला है। मैं इस सदन के माध्यम से बेमेतरा की महान जनता को पहले अपनी तरफ से साधुवाद देना चाहता हूं। साथ ही साथ यहां पर इतनी महान हस्तियां इस सदन में उपस्थित हैं। मैं पहली बार यहां विधानसभा में निर्वाचित होकर विधायक के रूप में आया हूँ। (मेजों की थपथपाहट) सदगुरू कबीर साहब के दोहे के साथ अपनी बात की शुरूआत करना चाहूंगा।

'कबीरा संगत साधु की, जो गंधी के वास।

जो गंधी कुछ देय नहीं, फिर भी वास सुवास।

माननीय सभापति महोदय, आप जैसे विद्वान व्यक्ति, विद्वान लोगों के सानिध्य में मुझे विश्वास है कि मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलेगा।

मैं महामहिम राज्यपाल जी के अभिभाषण पर कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए आप सबके बीच में खड़ा हुआ हूँ। माननीय सभापति महोदय, हमारी जो सरकार है, भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में सरकार बनने के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी ने शपथ ली। किसानों के साथ हमारा वादा था कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनेगी तो 10 दिनों के अंदर किसानों का कर्जा माफ किया जायेगा। लेकिन सरकार में आने के बाद कुछ ही घंटे में हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी ने पहली कैबिनेट की जब बैठक ली। बैठक लेने के बाद किसानों का लगभग 6100 करोड़ रूपया कर्ज माफ किया गया, जिससे किसानों के काफी हर्ष व्याप्त है, किसान काफी खुश हैं। मैं जिस विधान सभा से निर्वाचित होता हूँ, मैं बेमेतरा विधान सभा से आता हूँ, वहां मूलत: जो निवासी हैं, उनका व्यवसाय किसानी है। खेती-किसानी के लोग, किसान वहां निवासरत रहते हैं। मैं आपको पूर्व की एक घटना के बारे में अवगत कराना चाहूंगा। वर्ष 2017 में बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र में जिला मुख्यालय के 20 किलोमीटर समीप एक

रामाधार साहू किसान, एक प्रतिष्ठित किसान था, एक सामाजिक व्यक्ति था। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह थी कि सरकार की गलत नीतियों के चलते मात्र एक लाख रूपये के लोन के र्ज के नाम से उसने आत्महत्या कर ली। जिस सरकार का बजट 90 हजार करोड़ रूपये का हो। अगर उस सरकार में किसान मात्र एक लाख रूपये के कर्ज के नाम से आत्महत्या करें, तो यह बड़े दुर्भाग्य का विषय है। लेकिन वर्तमान में जो सरकार है, किसानों को पूरा विश्वास है कि जो कांग्रेस की सरकार भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में बनी है, इस समय किसानों को आत्महत्या करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि हमारे जो मुखिया हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी, वह किसान के पुत्र हैं, किसान के लाल हैं, छत्तीसगढ़ माटी उन्होंने जन्म लिया है, किसानों की पीड़ा को अच्छे से समझते हैं। किसानों को पूरा विश्वास है कि इस समय जो सरकार बनी है, वह किसानों की सरकार बनी है, किसानों की भलाई के लिए सरकार बनी है। साथ ही साथ 2500 रूपया धान का समर्थन मूल्य, मुख्यमंत्री जी बनने के बाद, कांग्रेस की सरकार आने के बाद किसानों को मिलना शुरू हो गया है। इसके साथ ही साथ माननीय मुख्यमंत्री जी, बहुत सारे ऐसे निर्णय हैं, जिसमें सरकार ने तत्काल निर्णय लिया है। हमारे प्रदेश में पूर्व में जो क्राइम ब्रांच था, वह सरकार का वसूली का एक जरिया था। लोगों को प्रताड़ित करने का, लोगों को परेशान करने का जरिया बन गया था।

........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\09-01-2019\i19\6.25-30

समय :

6:25 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)**

जारी....श्री आशीष सिंह छाबड़ा :- पूर्व में हमारे प्रदेश में जो क्राईम ब्रांच था, वह सरकार का एक वसूली का जरिया था, लोगों को प्रताड़ित करने का, लोगों को परेशान करने का एक जरिया बन गया था । क्राईम ब्रांच के माध्यम से लोगों को परेशान किया जाता था, पुलिस के द्वारा जबरन वसूली की जाती थी, लेकिन हमारे मुख्यमंत्री जी ने उसको भंग किया है, मुख्यमंत्री जी ने विभाग को निर्देश दिया है कि विभाग के प्रति जनता का सम्मान होना चाहिए, न कि कोई भय होना चाहिए, क्राइम ब्रांच के भंग होने के बाद जो भय का वातावरण था, वसूली का अड्डा बना हुआ था, उसको इस सरकार ने खतम किया है, इसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को साधुवाद देना चाहता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, साथ ही साथ हमारी सरकार ने युवाओं को स्वावलंबन बनाने हेतु रोजगार के तहत भी जो हमारे एक साथी बोल रहे थे कि इसमें युवाओं के लिए मांग नहीं है, बेरोजगारी भत्ते की बात नहीं कही गई है । मैं कहना चाहता हूं कि भत्ते की बात नहीं है, हम बेरोजगारी को हटाना चाहते हैं और युवाओं को रोजगार देना चाहते हैं, मैं भी युवा हूं, हमारे बहुत से युवा विधायक साथी यहां निर्वाचित होकर आये हैं । मैं युवाओं को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ये जो सरकार बनी है, इसमें युवाओं को रोजगार के अवसर दिलाने, हम युवाओं को छत्तीसगढ़ में ज्यादा से ज्यादा अवसर दिलाएंगे।

इलेक्ट्रानिक एवं साफ्टवेयर कौशल से युवाओं को जोड़ने की दिशा में तेजी से कदम उठाएंगे, ताकि नये जमाने की नई आवश्यकताओं के लिए राज्य की पीढ़ी तैयार हो सके और अपने स्वावलंबन से रोजगार का माध्यम बन सके । क्रमांक 19 में इसमें माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में इसका भी उल्लेख किया गया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही साथ जो छोटी-छोटी भूखण्डों के, 5डिसमिल से कम के भू-खण्डों की रजिस्ट्रियों में जो बैन लगाई गई थी, जिससे एक छोटा परिवार, जो गरीब परिवार था, जिसके सपने थे, वह सपनों का सुन्दर घर बनाना चाहता था, लेकिन उसके सपने अधूरे रह जाते थे, वह अपना मकान नहीं बना सकता था, लेकिन हमारी सरकार बनने के बाद उसमें त्वरित कार्यवाही की गई है, छोटे भूखण्डों की रजिस्ट्रियों में बैन लगाई गई थी, उसको हटा दिया गया है, ताकि बिल्डरों को जो फायदा पहुंचता था, बिल्डरों के माध्यम से ज्यादा से जयादा कमाई करके छोटे मकान जो गरीब लोगों को दे पाते थे, उसमें बिल्डर ज्यादा से ज्यादा अपनी कमाई निकालते थे, उस कमाई का जरिया बंद हुआ है और एक गरीब छोटा परिवार अपने खुद के सपने का मकान बना सकेगा ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उसके साथ ही साथ हमारी नई सरकार ने बहुत सारी योजनाओं को इसमें जोड़ा है और मैं इस प्रदेश की जनता को, बेमेतरा विधान सभा क्षेत्र की जनता को पूरा विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ये जो सरकार बनी है, वह किसानों की सरकार है, युवाओं की सरकार है । प्रत्येक व्यक्ति को लगेगा कि जो सरकार बनी है, उसमें हमारी बातों को सुना जा रहा है, हमारी बातों की ओर ध्यान दिया जा रहा है और सबके साथ सबका विकास को लेकर यह छत्तीसगढ़ सरकार काम करेगी। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं ।

श्रीमती अम्बिका सिंहदेव (बैकुन्ठपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको और सदन में उपस्थित सभी को प्रणाम करते हुए और आप सबका आशीर्वाद लेकर मैं यहां अपनी मैडन स्पीड शुरू करती हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बैकुन्ठपुर विधान सभा क्षेत्र क्रमांक 3 की जनता और कोरिया जिले की सभी जनता की तरफ से मैं माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण पर कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूं । इसमें जितने भी बिन्दु हैं, वे सभी उल्लेखनीय हैं, पर मैं अपने क्षेत्र की ओर से अंतरात्मा से 21वें बिन्दु के लिए आभार व्यक्त करना चाहती हूं । हमारे क्षेत्र में जिला अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध नहीं है और ये क्षेत्र बिलासपुर, रायपुर से बहुत दूर पड़ता है । अस्पताल है, पर वहां ईलाज नहीं होता । मरीजों को वहां से बिलासपुर या रायपुर रैफर कर दिया जाता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सांसद निधि से उपलब्ध कराया हुआ जो एम्बुलेंस है, आजतक वहीं इस्तेमाल हो रहा है । उसकी खिड़कियां नहीं है, प्लास्टिक के पैकेट से खिड़कियों को बंद करने की कोशिश की जाती है । ऐसे में जो दूर-दराज गांव से आते हैं, अध्यक्ष महोदय, आप उस क्षेत्र से भली-भांति परिचित हैं, ऐसे बहुत से गांव हैं, जहां पर लोगों को चारपाई पर ढोकर रोड़ तक लाया जाता है, घंटों बाद वे जिला अस्पताल पहुंचते हैं और

वहां पहुंचने के बाद उन्हें कहा जाता है कि आप रायपुर या बिलासपुर चले जाईए...

श्री श्रीवास

श्रीवास\09-01-2019\j0\06.30-06.35

जारी...श्रीमती अंबिका सिंहदेव :- जहां पर लोगों को चारपाई पर ढोकर रोड तक लाया जाता है । घण्टों बाद वह जिला अस्पताल पहुंचते हैं, वहां पहुंचने के बाद उन्हें कहा जाता है कि आप रायपुर चले जाइये, बिलासपुर चले जाईये, वर्षों से वहां एनेस्थेटिस नहीं है । वहां की जनता प्रायवेट ट्रीटमेंट की बोझ नहीं उठा सकती है । ऐसे में हमें विश्वास हो गया था कि स्वास्थ्य की सुविधा हमारा अधिकार नहीं है, बल्कि विलासिता है । माननीय राज्यपाल महोदया के 21 वें बिन्दु में यह देखकर कि अब यह सुविधा हमारे अधिकार के रूप में प्राप्त होगी । इससे हम बहुत आश्वस्त हुये हैं, क्षेत्र की जनता की तरफ से मैं फिर से राज्यपाल महोदय का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय:- इन्द्रशाह मंडावी ।

श्री इन्द्रशाह मंडावी (मानपुर मोहला) :- सभापति महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदया छत्तीसगढ़ के अभिभाषण पर सभी बिन्दुओं को अपने ऊपर आत्मसात करता हूँ । सर्वप्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सर्वोच्च त्याग करने वाले वीर सपूतों, अमर शहीदों, वीरांगना सुपुत्रियों को नमन करते हुये अभिभाषण चालू करता हूँ । मैं सुदूर क्षेत्र से हूं, मानपुर मोहला से हूं । हमारे क्षेत्र के जिले से पूर्व मुख्यमंत्री थे, मैं सोचता था कि हमारे क्षेत्र का विकास अच्छा होगा । जब अभी 7 महीने पहले से घूंमा । दो किलोमीटर दूर से भी 20 किलोमीटर घूम के जाना पड़ता है । हमारे लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है । जो विकास की बात कर रहे थे, वहां विकास से कोसो दूर है । न सड़क है, न स्कूल है, न टीचर है, न पानी की व्यवस्था है, विकास-विकास हमेंशा कहते रहे, उसकी वजह से वहां पर नक्सलवाद की बढ़ोतरी वहां पर हो रही है । कोई भी गांव में जब शिक्षा ही नहीं है, विकास कहां से होगा । नक्सलवाद और पुलिस वाले भी कोई चीज होती है, सीधा रासूका के अंतर्गत अंदर करने के लिए धमकी देते हैं । बहुत बड़ी परेशानी होती है । ऐसे समय में हमारे मुख्यमंत्री जी किसान पुत्र हैं, किसानों की समस्या को देखते हुये हमारा सबसे पहले आर्थिक आय का स्त्रोत है धान । धान को बेचकर हम लोग खेती करते हैं, किसानी करते हैं । बच्चों को पढ़ाते हैं । जो भी काम है, उसी का 25 सौ रूपया हुआ है, इसकी वजह से हमारे क्षेत्र के लोगों को काफी खुशी है और इस कारण मैं भी चुनकर इस पवित्र विधान सभा में आया हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद दे दीजिए ।

श्री इन्द्रशाह मंडावी :- धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री कुंवर सिंह निषाद ।

श्री कुंवर सिंह निषाद गुंडरदेही :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के पवित्र सदन ला मैं सादर प्रणाम करथंव । गुंडरदेही क्षेत्र के जनता के आर्शीवाद से ये सदन में बात रखे बर आय हंव । गुंडरदेही क्षेत्र के समस्त जनता अऊ मतदाता के सादर आभार करथंव । धन्यवाद देवथंव । सादर प्रणाम करथंव । एखर पहली, बात रखे के पहली अभी मोर जवान साथी मन बात करिन, सदन में बात रखिन, एखर मन बर मैं दो लाईन बोलना चाहथंव ।

यूं तो जिंदगी के फंसाने बहुत हैं, अभी साजे दिल में तराने बहुत हैं

दरे गैर से भीख मांगों न फन्की, अपने ही घर में खजाने बहुत हैं

ये जवान साथी मन ला ए लाइन समर्पित करे हंव ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने भी ऐसी कविता बोली थी । उसको पूरा डिलिट करवा दिये । मैं क्या बताऊं । मैं सोच रहा हूँ कि कल कविता बोलूं कि नहीं बोलूं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- एक ही शेर में आपका बाजा बज गया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-वैसे शेर को देखकर अच्छे-अच्छों की......

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\09-01-2019\j11\.-.5

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वैसे शेर को देखकर तो अच्छे-अच्छों की।

श्री कुंवरसिंह निषाद (गुंडरदेही) :- अजय भैय्या, आपके लिए भी मैं दो लाईन बोल रहा हूं -

वह जो रास्ते थे वफा के थे, (जिस समय आप सरकार में थे)

ये जो मंजिलें हैं सजा की हैं।

आपका हमसफर कोई और था

अब आपका हमनशीं कोई और है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी डिलीट मत कीजिएगा, एक मैं सुनाता हूं -

मेरी सारी खताएं माफ कर दो ऐसे।

मैं किसानों का कर्ज, तुम हो सरकार जैसे।।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, ये उधर बोल रहे थे कि देखकर पढ़ रहे हो और ये तो खुद ही देखकर पढ़ रहे हैं।

श्री कुंवरसिंह निषाद :- मैं माननीय राज्यपाल महोदया के अभिभाषण में कृतज्ञता व्यक्त करथंव। कंडिका 13, 14, 15, 16 जेमे छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी के बात करे गेहे- नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी। सबसे पहिली नरवा के संरक्षण और संवर्धन के बात करे गे हे। वाकई छत्तीसगढ़ के नरवा के हालत बहुत ज्यादा खराब हे। नरवा मन पटा गे हे, उथला गे हे। वोला मनरेगा के तहत गहरीकरण करे के बहुत

जरूरत हे ताकि ओमा पानी सकलाए और वो पानी के उपयोग नरवा के तीर में रहने वाले किसान भाई मन जेमन बारी-बखरी लगाथे तेखर मन बर, जानवर मन बर और जेन छोटे छोटे हमर किसान भाई मन हे जेमे हमर मझवारा भाई मन हे तेखर मन बर ऐसी कोई योजना बनाए जाए, ओमा मछली डाले जाए ताकि ओ गरीब परिवार मन अपन जिन्दगी ला चला सकंय। वईसने गरवा के संरक्षण अऊ संवर्धन के बात अगर ये बात ला 15 साल पहिली किये जाय रतिस तो हमर इहां के गाय गरूमन अइसन बाहर नई किंदरतिन और खुल्ला नई घूमतिन। तेखर संरक्षण और संवर्धन के बात अगर कांग्रेस सरकार लाये हे, ओला गौठान के माध्यम से और मनरेगा के माध्यम से व्यवस्थित करे के बात लाये हे तो ऐखर बर मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला ये सदन के माध्यम से धन्यवाद देना चाहथों, कि ओखर द्वारा गाय-गरू के संरक्षण और संवर्धन बर ये बात करे गे हे।

अध्यक्ष महोदय, हमर छत्तीसगढ़ में अगर घुरवा के बात करे जाए तो ओमा जैविक खाद के उपयोग होथे। जेखर घर में घुरवा होही तेह समझ सकथे कि घुरवा के महत्व कतका हे। घुरवा के खाद जेला हम धान उपजाए के पहिली खेत में लेगथन अऊ वो घुरवा के खातू ला नांगर जोतके पूरा खेत में बगराथन तो वो खाद के उपयोगिता जेनमन किसानी करथे तेनमन जानथे कि घुरवा के कतका महत्व होथे। तेखर संरक्षण और संवर्धन के बात होवथे तेखर बर मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी ला ये सदन के माध्यम से धन्यवाद देना चाहथों।

अध्यक्ष महोदय, बारी के बात हे। हर आदमी, हर किसान के इहां, छोटे-छोटे गांव में देखहू कि जेखर घर बारी तेखर घर साग भाजी बोथे। अब बहुत घर के साग भाजी नंदा गे तो ओला यदि हम संरक्षण संवर्धन के बात करथन बाड़ी के बात करथन तो वाकई में वो बाड़ी में जैविक खाद और हमर घुरवा के खातू ला डाल देन तो चाहे सेमी हो, तोरई हो, चाहे बरबट्टी हो, चाहे फूलगोभी हो, चाहे कोई भी सब्जी हो ओमन बहुत स्वादिस्ट होथे। जेला हमन ला बाजार से लेने के जरूरत नहीं पड़िही। ओ साग सब्जी ला हमन खुद घर के बाड़ी में लगाबो। तेखरसेती अगर मुख्यमंत्री जी अगर ये बात के संरक्षण और संवर्धन के बात करे हे तो हमन के माध्यम से ओला सादर धन्यवाद देना चाहथों।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहथों कि छोटे-छोटे भूखंडधारी मन ला आदरणीय मुख्यमंत्री जी एक बात करिन कि जेखर पास 5 डिसमिल से कम खेत हे ओखर बेचे के बात, पंजीयन के बात, हस्तांतरण के बात करे गेहे। वाकई अइसन छोटे छोटे गरीब किसान आदमी मन हे जेखर पास ज्यादा भूखंड तो नहीं हे लेकिन अपन मजबूरी के तहत बेचना चाहत रहिन ओ मन नई बेच पात रहिन तेखर बर ये विधेयक और कानून लाये गेहे तेखर सेती भी मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी ला सादर मंच के माध्यम से धन्यवाद देना चाहथों। मैं एक बात और बोलना चाहथों। आदरणीय रमन सिंह एक बात बोलिन कि नक्सलवाद के समस्या ला मिटायेबर झीरम घाटी के उल्लेख करिस और

राजनांदगांव में शहीद होईस तेखर बारे में उल्लेख करिस लेकिन तत्कालीन सरकार तो डॉ. रमन सिंह के रहिस। ये दुनियाभर के जांच के बात करिस।

श्री प्रमेश

प्रमेश\09-01-2019\j12\06.40-06.45

श्री कुंवर सिंह निषाद(गुंडरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये दुनियाभर के जांच के बात करिस वो समय ये जांच के बात निष्पक्ष अऊ न्यायिक जांच काबर नई होईस। आज जब हमर सरकार एस.आई.टी गठन करे के बात करिन तो ये बात आदरणीय डॉ. रमनसिंह जी ला काबर बुरा लगथे । अऊ अतका बड़ बवाल काबर लगथे कि नक्सलवाद के रोना राये जाथे तो येकर बर भी में बात ला संज्ञान मा लेना चाहूं कि आप मोला सदन में बोले बर मौका दे हो तेकर सेती बहुत बहुत धन्यवाद, आप ला साधूवाद धन्यवाद लेकिन एक बात अऊ कहना चाहू आदरणीय डॉ. साहब आदरणीय अध्यक्ष महोदय, कि हमर युवा मनबर जो सोच ये सदन में जतका वरिष्ठ हे तेकर मन से भी नम्र निवेदन हे कि ह मन तो युवा हन पहली बार सदन में पहुंचे हन आप मन के संरक्षण संवर्धन मार्गदर्शन के जरूरत हे तो आप मन ह मन ला बिल्कुल अपन मार्गदर्शन देहू। येकर बर में आप सब ला दो लाईन समर्पित करना चाह थो कि उस परम पिता से नेह लगा, तब देख रूहानी क्या होती है, उस पर्वत से नीर-नीर झरते तब देख रवानी क्या होती है, संस्कारहीन क्या खाक देश की लाज रखेंगे तुम्हीं कहो जब बच्चों को संस्कार मिले तब देख जवानी क्या होती है। धन्यवाद जय हिंद जय भारत जय छत्तीसगढ़।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बहुत धन्यवाद। सभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 10 जनवरी 2019 को 11 बजे दिन तक के लिए स्थगित ।

(06 बजकर 41 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 10 जनवरी, 2019 (पौष- 20, शक सम्वत् 1940) के पूर्वाह्न 11:00 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

चन्द्र शेखर गंगराड़े

रायपुर (छत्तीसगढ़) **सचिव**

09 जनवरी, 2019 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**